

विशद भक्ति आराधना (लघु जिनवाणी संग्रह)



रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

- कृति : विशद भक्ति आराधना
- कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण : तृतीय 2023, प्रतियाँ : 2000
- सहयोगी : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
- संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
- कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
- प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

शैलेश-सुनीता पांड्या, मुकेश-नीना, सुप्रीत-नेहा
सुयश-कृतिका, पहल, नाइशा पांड्या
अरूणी-विपुल जी बड़जात्या, वेदिका जैन, जयपुर (राज.)

- कृति : विशद भक्ति आराधना
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : तृतीय 2023, प्रतियाँ : 2000
सहयोगी : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक : पवन ठौरा, मुकेश कोट्या, मुकेश खटोड़
महावीर सांवला, महावीर धनोप्या, महावीर हरसौरा
मनोज सेठिया, पीयूष कोट्या, प्रमोद ठग, आशीष टोंग्या
संजय बोरखण्डिया, राजेन्द्र खटोड़, अनिमेष सेठिया
ओ. पी. डूंगरवाल एवं समस्त नवकार सोशल ग्रुप
महावीर नगर विस्तार योजना कोटा (राजस्थान)

- कृति : विशद भक्ति आराधना
- कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण : तृतीय 2023, प्रतियाँ : 2000
- सहयोगी : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
- संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
- कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
- प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक : श्री आनन्द कुमार-श्रीमती पद्माबाई
धर्मेन्द्र कुमार-मीनू, जितेन्द्र, कामिनी, महेन्द्र, निधि, वर्षा
सूर्याश, तनिष्क, रूबी, टासू, वासू, नीरू रोकडिया
समस्त रोकडिया परिवार - चंदेरी अशोक नगर (म.प्र.)

- कृति : विशद भक्ति आराधना
- कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण : तृतीय 2023, प्रतियाँ : 2000
- सहयोगी : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
- संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
- कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
- प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

विनय जैन को जैनत्व संस्कार के उपलक्ष में
कैलाशचन्द अंकित कुमार जैन (सेठी)
कोटड़ी, भीलवाड़ा (राजस्थान)

कृति : विशद भक्ति आराधना
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : तृतीय 2023, प्रतियाँ : 2000
सहयोगी : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी-9660996425, ब्र. सपना दीदी-9829127533
कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्रकुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली मो. 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक : (1) डॉ. वीरचन्द-श्रीमती विनीता अग्रवाल
(सुन्दरम् अपार्ट मेन्ट), 80, गोयल गली, वाराणसी (उ.प्र.)
(2) श्रीमती अलका, सन्दीप कुमार पंसारी रेवाड़ी
श्री अशोक जैन/सुमेरचन्द पंसारी रेवाड़ी
राजेश जैन/सुमेरचंद जैन भट्टेवाले रेवाड़ी
कैलाशचंद जैन/मंगतुराम जैन रेवाड़ी
विमला/संतोष जैन, पोलियामल जैन/मंगतुराम जैन रेवाड़ी
श्री रविन्द्र कुमार/हेमराज जैन गांधीनगर रेवाड़ी
श्रीमती विमला -श्री संतोष जैन पुत्र संजीव कुमार जैन छीपटवाड़ा

पूजा पुण्य प्रदायी

देव शास्त्र गुरु पूजा, सम्यक्त्वमेव कारणं।
विशद पुण्यावाप्ति स्वाद, स्वर्गमोक्ष पद प्रदं॥

श्री देव-शास्त्र-गुरु की पूजा सम्यक्त्व में मुख्य कारण है। विशद धर्म की जड़ है जो स्वर्ग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है। जिन पूजा को श्रावक के आवश्यक कर्तव्यों में सर्व प्रथम किया है। जिन पूजा में श्रावक के सभी आवश्यक कर्तव्य गर्भित हैं ऐसी वीतराग जिन देव-शास्त्र-गुरु की पूजा करने में भी आज के श्रावक प्रमाद करने लगे हैं, जिसका मुख्य कारण श्रावक के व्यस्त कार्य में संयम का अभाव है तथा एक मुख्य कारण यह भी है कि पूजा विधि की कठिनता एवं विस्तार के कारण पूजा से वंचित रहते हैं ऐसा विचार कर पूजा विधि को संक्षेप करके एवं पूजाओं को लघु रूप देकर तैयार की जिससे हर व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन कर सत् श्रावक बन सके इसी भावना के साथ सद्श्रावकों के पुण्यार्जन का विशद साधन प्राप्त करें। प्रथम संस्करण मुनि विशालसागर जी, द्वितीय संस्करण ब्र. आस्था, ब्र. सपना एवं तृतीय संस्करण ब्र. आरती के द्वारा किया गया। सभी आशीर्वाद के पात्र हैं।

श्री विशद सागर जी महाराज
भेलूपुर, वाराणसी

विशद सिन्धु का विशाल संग्रह

देव पूजा गुरु पास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः।

दानं चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने दिने॥

यहाँ आचार्य श्री पद्मनन्दि जी ने देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये छः कार्य गृहस्थों का प्रतिदिन करने योग्य बतलाया है गृहस्थ के छः कार्यों में देव पूजा को प्रथम स्थान पर रखा गया है।

परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी ने वर्तमान समय को देखते हुए श्रावक श्राविकाओं की भावना के अनुरूप लघु विनय पाठ अभिषेक पाठ समुच्चय पूजा नित्य नियम व पर्वों की पूजा विधान आरती चालीसा स्तोत्र आदि का बहुत ही सरल एवं सुगम भाषा का लेखन कार्य किया है कम समय में अधिक पूजा करने का लाभ प्रस्तुत पुस्तक में उपलब्ध है जिनवाणी पूजा पाठ प्रदीप आदि पुस्तकों से पुरानी पूजा विधि पूजाएँ तो आप करते ही रहते हैं इस बार कुछ नया पढ़ें नया गुने लय बद्ध तरीके से गुणगुनाते हुए पूरे मनोयोग से प्रभु गुणगान कर दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक करें। पुनः गुरुदेव के श्री चरणों में नमन संघस्थ आरती दीदी एवं सरस्वती प्रिन्टर्स के श्री बसन्त जी जैन को कार्य में सहयोग के लिए शुभाशीष।

मुनि विशाल सागर

अनुक्रमाणिका

1.	श्री सिद्ध भक्ति	10
2.	श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्	11
3.	मंगलाष्टक (भाषा)	13
4.	प्रतिष्ठा विधि	15
5.	अभिषेक पाठ-1	21
6.	लघु जलाभिषेक पाठ-2 (हिन्दी)	28
7.	अभिषेक पाठ-3, अभिषेक प्रतिज्ञा	31
8.	भजन-अभिषेक समय का-1	34
9.	अभिषेक समय की वन्दना-2	35
10.	भजन-अभिषेक समय का-3	36
11.	पंचामृत अभिषेक पाठ	40
12.	लघु शांतिधारा	53
13.	अभिषेक समय की आरती-1	58
14.	जिनाभिषेक समय की आरती	59
15.	लघु विनय पाठ-1, मंगल पाठ	60
16.	पूजा पीठिका (हिन्दी)	61
17.	विनय पाठ-2, मंगल पाठ	64
18.	पूजा पीठिका - संस्कृत	67

19.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजा	72
20.	श्री देवशास्त्र गुरु पूजन (हिन्दी)	76
21.	श्री देवशास्त्र गुरु पूजन (संस्कृत)	80
22.	विद्यमान बीस तीर्थकर पूजा	84
23.	पंच परमेष्ठी पूजा	88
24.	नवदेवता पूजन	92
25.	अर्घ्यावली	97
26.	श्री सिद्ध परमेष्ठी की पूजा	109
27.	त्रिकालवर्ति तीर्थकर पूजा	115
28.	श्री चतुर्विंशति तीर्थकर पूजन	120
29.	श्री आदिनाथ पूजन	123
30.	श्री पद्मप्रभु पूजन	128
31.	श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन	132
32.	श्री पुष्पदन्त पूजा	137
33.	श्री शीतलनाथ पूजा	141
34.	श्री वासुपूज्य जिन पूजन	145
35.	श्री शांतिनाथ जिन पूजा	149
36.	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन	154
37.	श्री नेमिनाथ पूजन	158

38.	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन	162
39.	श्री महावीर पूजन	166
40.	पंचबालयति पूजा	170
41.	णमोकार पूजा	174
42.	अष्टमी पर्व पूजा	179
43.	चतुर्दशी पर्व पूजा	183
44.	सोलह कारण पूजा	187
45.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा	193
46.	स्तुति (हे प्रभो चरणों में तेरे...)	198
47.	पंचमेरु पूजा	199
48.	दशलक्षण पूजा	204
49.	रत्नत्रय पूजा	209
50.	श्री अष्टाह्निका पर्व पूजन	213
51.	श्री नन्दीश्वर की आरती	218
52.	त्रिलोक जिनालय पूजा	219
53.	श्री निर्वाण क्षेत्र पूजन	225
54.	सम्मोदशिखर कूट पूजन	231
55.	श्री बाहुबली पूजन	242
56.	तीस चौबीसी पूजन	246
57.	नवग्रहारिष्ट निवारक श्रीचतुर्विंशति जिन पूजन	249

58.	समोशरण पूजन	255
59.	मानस्तम्भ की पूजन	260
60.	जिन सहस्रनाम पूजा	264
61.	चारित्र शुद्धि व्रत पूजा	269
62.	ऋषि मण्डल पूजन	275
63.	रविव्रत पूजन	281
64.	जिनवाणी पूजन	285
65.	आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज पूजन	289
66.	श्री आचार्य परमेष्ठी पूजन	293
67.	समुच्चय महार्घ्य, शांतिपाठ	297
68.	विसर्जन पाठ	298
69.	महा अर्घ शांतिपाठ	
70.	निर्वाण काण्ड, अंचलिका	299
71.	श्री णमोकार चालीसा	301
72.	श्री भक्तामर अड़तालिसा	304
73.	श्री आदिनाथ चालीसा	307
74.	श्री पद्मप्रभु चालीसा	310
75.	श्री शांतिनाथ चालीसा	313
76.	श्री पार्श्वनाथ चालीसा	316
77.	श्री महावीर चालीसा	319

78.	प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी का चालीसा	322
79.	पंचपरमेष्ठी की आरती	325
80.	श्री नवदेवता की आरती	326
81.	मानस्तम्भ की आरती	326
82.	श्री आदिनाथ जी की आरती	327
83.	श्री पद्मप्रभु की आरती	328
84.	श्री चन्द्रप्रभु की आरती	329
85.	श्री शांतिनाथ की आरती	330
86.	मुनिसुव्रत जिनराज की आरती	331
87.	श्री नेमिनाथ की आरती	332
88.	श्री पार्श्वनाथ की आरती	333
89.	श्री महावीर स्वामी की आरती	334
90.	श्रावक प्रतिक्रमण	335
91.	क्षमा वंदना	346
92.	सोलह कारण भावना	348
93.	इष्ट प्रार्थना	356
94.	दशलक्षण भावना	357
95.	चौंसठ ऋद्धि भावना	362
96.	सरस्वती वन्दना	367
97.	आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज की आरती	368

श्री सिद्ध भक्ति

असरीरा जीव घणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे या
सायार मणायारा-लक्खण मेयं तु-सिद्धाणं॥१॥
मूलोत्तरपयडीणं बंधोदय सत्तकम्म उम्मुक्का।
मंगल भूदा सिद्धा-अट्ठ गुणा-तीद संसारा॥२॥
अट्ठ विह कम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा लोयगग णिवासिणो सिद्धा॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धी य लब्धि सब्भावा।
तिहुअण सिरि सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे॥४॥
गमणा-गमण विमुक्के विहडिय कम्मपयडिसंधारा।
सासय सुह संपत्ते-ते-सिद्धा-वंदिमो णिच्चं॥५॥
जय मंगल भूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोइ सेहराणं णमो-सया-सव्व-सिद्धाणं॥६॥
सम्मत्त णाणदंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु मव्वावाहं-अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥७॥
तव सिद्धे णय सिद्धे संजम सिद्धे चरित्त सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥८॥
इच्छामि भंते! सिद्धभक्ति काउस्सगो कओ तस्सालोचेउं
सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित जुत्ताणं अट्ठविहकम्म विप्पमुक्काणं,
अट्ठगुणसंपण्णाणं, उइढलोय मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तव सिद्धाणं,
णय सिद्धाणं, संजम सिद्धाणं, चरित्त सिद्धाणं, अतीताणागद वट्ठमाण
कालत्तय सिद्धाणं सव्व सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अच्छेमि, पूजेमि,
वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं,
समाहि मरणं, जिण गुण सम्पति होऊ मज्झं।

श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः, मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥१॥
श्रीमन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट-, प्रद्योत- रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्-, भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्, ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरुवः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥२॥
सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युत्तमोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः-सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥३॥
नाभेयादि जिनाः प्रशस्त-वदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लांगलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥४॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिगताः पञ्च ये,
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौविधच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥५॥

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा, वक्षार रूष्याद्रिषु।
इक्ष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥६॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥७॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥८॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥९॥
इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्, तीर्थकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्-, धर्मार्थं कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता, निर्वाण लक्ष्मीरपि॥१०॥

॥ इति मंगलाष्टक॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरि मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥
नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥2॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥
जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥
प्रति नारायण सहित त्रिसेठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥4॥
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
 वसु विधि महा निमित्त के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
 पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
 ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥
 आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर धाम।
 नेमिनाथ गिरनार सुगिरि से, महावीर पावापुर ग्राम॥
 बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
 सिद्ध क्षेत्र पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥
 व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
 जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
 रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
 वे सब ही पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥
 तीर्थकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
 दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
 कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
 कल्याणक पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥
 धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
 सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
 धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
 मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

॥ इति मंगलाष्टक॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

“हस्त प्रच्छालन मंत्र”

ॐ ह्रीं असुर सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि।

“जल शुद्धि मंत्र”

1. ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। (सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आ उ सा इदं सर्व नदी कूप जलं अमलं भवतु (अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र बोले एवं अमृतस्नान करें)

2. ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(गृह कार्य निवृत्ति)

विधि विधातुं यजनोत्सवेऽहं गेहादिमूर्च्छामपनोदयामि।
अनन्यचित्ता कृतिमादधामि, स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि॥
यह पढ़कर पात्रों से गृहस्थी के कार्यों से उत्सवपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा कराई जावे।

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।

समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥१॥

ॐ हां हीं हूं हौं हः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धि
करोमिति स्वाहा।

दिग्बन्धन

ॐ हां णमो अरिहंताणं हां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हीं णमो सिद्धाणं हीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान्
निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं हौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान्
निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हां हीं हूं हौं हः ऊर्ध्वलोक, अधोलोक मध्यलोक समागतान्
विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं
करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते
भवतु।

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप
शुद्धि करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)

भो! चतुर्णिकाय देवाः स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।

भो! पूर्वदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।

भो! दक्षिणदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने ...

भो! पश्चिमदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थान ...

भो! उत्तरदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने ...

भो! वातकुमार देवाः अग्नि कुमार देवाः, वास्तुकुमार

देवः मेघकुमार नाग कुमार देवाः स्वस्थाने ...

भो! क्षेत्रपाल देवः स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोग कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ हां हीं: ह्रूं: ह्रौं: हः जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

भो! धनद रत्न वृष्टि कुरु कुरु।

रक्षा मन्त्र- ॐ नमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

शांति मंत्र- ॐ क्षूं हुं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु कुरु, परमुद्रां छिन्द- छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

“मण्डप शुद्धि मंत्र”

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप शुद्धिं कुर्मः।

“मण्डप पर सूत्र बांधने का काव्य”

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारे परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्र॥

मन्त्रः— ॐ अनादिपरब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः ।
ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ
चतुः शरणाय नमो नमः--- अस्य विधान --- नामधेयं यजमानस्य
श्री --- यजमानस्य सपरिवारे वर्धस्व-2 विजयस्य -2
भवतु-2सर्वदा शिवं कुरु।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ॐ नमः परमशान्ताय शांतिं कराय रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीतं
धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अहं नमः स्वाहा।

कलश में सामग्री रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न
परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

“मंगल कलश पर श्रीफल रखने का मंत्र”

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षैं क्षें नमो अर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष
हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन्
विधीयमाने श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्ये। ...श्री वीर
निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लाने,
भूमिशुद्धयर्थ, पात्रशुद्धयर्थ, शान्त्यर्थ पुण्याहवाचनार्थ
नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं
मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं इवीं इवीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, शकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गन्धियं सम्मं।

पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाण-महोवहिंसिरसा॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिनशास्त्र स्थापयामि स्वाहा।

अभिषेक पाठ-1

(श्री माघनन्दि मुनि कृत)

(बसन्त तिलका छन्द)

श्रीमन्ततामर शिरस्तटरत्नदीप्ति! तोयावभासि चरणाम्बुज युग्म-मीशम्।
अर्हन्त-मुन्नत पदप्रद-माभिनम्य-त्वन्मूर्ति-षूद्य-दभिषेक विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाहिणक/माध्याहिणक/अपराहिणक देव वन्दनायां पूर्वाचार्यानु
क्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दनास्तव समेतं श्री पंचमहागुरु
भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

याः कृत्रिमास्-तदितराः प्रतिमाजिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः।
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्-
तत्रैव-मुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥
इति अभिषेक प्रतिज्ञायै ॥ पुष्पांजलि क्षिपामि ॥

पीठ प्रक्षालन (उपजाति छन्द)

हिरण्मयं हीर हरिण्मणीद्ध, श्री पद्मरागादि विचित्र पार्श्व
पीठं समुत्तुंगमिदं निवेश्य, प्रक्षालयामः सलिलै पवित्रैः॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पीठ प्रक्षालनं करोमि इति।

श्रीकार लेखन

श्री पीठक्लृप्ते 'विशदाक्षतौघैः', श्री प्रस्तरे पूर्ण शशांककल्पे।
श्री वर्तके चन्द्र मसीतिवार्ता, सत्यापयंतीं श्रियमालिखामि॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोम्यहम्।

पीठ स्थापनं

कनकाद्रिनिभं कम्पं, पावन पुण्य कारणम्।
स्थापयामि पर पीठं, जिनस्नपनाय भक्तितः॥५॥

ॐ ह्रीं श्री पीठ सिंहासन स्थापनं करोम्यहम्।
(सिंहासन स्थापित करें)

जिनबिम्ब स्थापनं

भ्रंगार चामर सुदर्पण पीठ कुम्भ,
तालध्वजातप निवारक भूषिताग्रे।
वर्धस्वनन्द जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥६॥

वृषभादि सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णु चर्चितान्।
स्थापयाम्-यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥७॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ
इति प्रतिमा स्थापनम्। (बिम्ब स्थापन करें)

चतुः कलश स्थापनं

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य विधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि वारिभिरपूरय दुग्ध कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम चन्दन भूषिताग्रान्॥

शातकुम्भीय कुम्भौघान्, क्षीराब्धेस्तोय पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान, चन्दनादि सुचर्चितान्॥८॥
ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कोणेषु चतुकलशास्थापनं करोम्यहम्।

अर्घ्यं

आनन्द निर्भर सुर प्रमदादि गानैर्,
वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलशप्रशस्तैः।
उद्गीयमान - जगतीपति - कीर्तिमेन्,
पीठस्थलीं वसु-विधाऽर्चन योल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलनायक कलशाभिषेकं

कर्म प्रबन्ध निगडै-रपि हीनताप्तम्,
ज्ञात्वाऽपि भक्ति-वशतः परमादि देवम्।
त्वां स्वीय कल्मष गणोन्मथनाय देव॥
शुद्धोदकै-रभिनयामि महाभिषेकम्॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं
झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते
पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

सर्व जिन प्रतिमाभिषेकं

तीर्थोत्तम भवै नीरैः क्षीरवारिधि रूपकैः।
स्नपयामि प्रतिमायां, जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामः।

अर्घ्य

जल गंधाक्षतै पुष्पैः, नैवेद्यैर्-दीप धूपकैः।
फल जाति समूहैश्च, विशदेर्घ्यकैर्-वरैः॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो अभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कलशाभिषेक

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटि,
संलग्न रत्न किरणच्छविधूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टै,-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिज्ये॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त
चतु-र्विंशति तीर्थंकर परमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे

भारत देशे...प्रदेशे....जिलान्तर्गते....नाम्निनगरे...चैत्यालये (मन्दिरे) मण्डपे
वीर निर्वाण संवत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे....पक्षे....शुभ तिथौ...वासरे
शुभघटी लगने शुभ...मुहूर्ते मुन्यार्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल कर्म
क्षयार्थं चतुः कलशेनाभिषिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ्य - जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!॥८॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बृहद् शांति मंत्र

सकल भुवन नाथं, तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै,
रभिषव विधिमाप्तं, स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन वारां, बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं, भुक्ति सन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः
यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं हां ह्रीं हूं हें हैं हों हौं हं हः
ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति सुगन्धित जलेन
बृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

यन्त्राभिषेक

अर्हं मंत्र नमस्कृत्य, रत्नत्रय तपोनिधिम्।
सिद्धयंत्रं स्नपयामि, सर्वोपद्रव शान्तये॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री विनायक सिद्ध यंत्रं च जलेन स्नपयामः।

अर्घ्यं

पानीय चन्दन सदक्षत पुष्प पुञ्ज, नैवेद्य दीपक सुधूप फलब्रजेन।
कर्माष्टिक क्रथन वीर-मनन्त शक्तिं, सम्पूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१५॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा! निज यशोधवली कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भव दुःख महागदानाम्।
सद्भव्य हृज्जनित पंकज बंध कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत शान्ति करा भवन्तु॥१६॥

इत्युक्त्वा शान्त्यर्थपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(यहाँ शान्तिधारा करें पश्चात् प्रक्षालन विधि करें)

नत्वा-मुहुर्निज करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्रतव चन्द्र करावदातैः
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त रम्ये,
देहेस्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥१७॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोम्यहम्।

स्नानं विधाय भवतोष्ट सहस्र नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट तयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र-निवेशयामि॥१८॥

ॐ ह्रीं जिन बिम्ब सिंहासने स्थापितं करोम्यहम्।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैः, चरु दीप सुधूपकैः।
फलै रघैर्जिनमर्चे, जन्मदुःखाप-हानये॥१९॥

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निज नेत्र ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप हरं धृतमादरेण॥२०॥

मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं, पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र चक्र पदवी राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शन लता, संवृद्धि संपादकं,
कीर्ति श्री जयसाधकं तव जिन स्नानस्यगन्धोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगन्धोदकं स्वललाटे नेत्रेय धारयामि।

गंधोदक मस्तक पर लगावे

इमे नेत्रे जाते सुकृत जल सिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजन गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक्पुण्यौघौ मम भवतु ते पूजनविधौ॥

इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपाम्यहम्

(पुष्पक्षेपण करें)

लघु जलाभिषेक पाठ- 2 (हिन्दी)

सोरठा-मंगलमूल महान, जय-जय जिन भगवन्त हैं।

करते हम गुणगान, वीतराग सर्वज्ञ का॥

दोहा- तव गुण वर्णन कर सके, कौन है वह गुणवन्त।

इन्द्र सु गुण तव कह थके, चार ज्ञान धर संत॥

॥ गीता-छन्द ॥

अनुपम अमित गुणधर अलौकिक, अकथ गुणमणि राश है।

कैसे निहारें आपको, जिन ज्यों अलोकाकाश है॥

तव नाम में वह शक्ति है, जिनके हृदय श्रद्धान है।

निज का प्रयोजन सिद्ध हो, करते विशद गुणगान है॥१॥

दोहा- मोहनीय अन्तराय नश, ज्ञान दर्शनावर्ण।

केवलज्ञानी जिन हुए, इन्द्रादिक नत शर्ण॥

(गीता छन्द)

फिर इन्द्र का आसन कांण्यो, तव अवधि जान्यो सही।

तव सात पग आगे चल्यो, जिन पद नमें लग के मही॥

धनपति सहित सुर आन रचते, रत्नमय शुभ समवसृति।

ना लोक में पाई अलौकिक, दिव्य जिन की प्रतिकृति॥२॥

दोहा- त्रय प्रदक्षिणा दे सही, कीन्हा जय-जयकार।

धनपति चरणों वन्द्यकर, हर्षित होय अपार॥

सुर वृक्ष के नीचे सिंहासन, कमल ऊपर-जिन प्रभो!
 सोहें गगन में क्षत्र त्रय, चौंसठ चँवर ढौरें विभो!
 भवि दर्श कर जिनके चरण में, वंदते हैं आनकर।
 प्रभु वीतरागी की करें, अर्चा विशद श्रद्धान कर॥३॥
 दोहा- अष्टादश जिनके नहीं, क्षुधा तृषादिक दोष।

परमौदारिक देह युत, पावन हैं निर्दोष॥

श्रम बिना ही श्रम रहित जल बिन, अमल ज्योति स्वरूप हैं।
 हो कृपावंत शरणा-गतिन को, श्रेष्ठ विमल अनूप हैं॥
 है शांत मुद्रा जिन प्रभू की, नीर से करते न्हवन।
 अति भक्ति वश त्रय योग से, वन्दन करें जिनके चरण॥४॥
 दोहा- हम मलिन रागादि से, हैं पवित्र जिनराज।

तव मज्जन हम क्या करें, तारण तरण जहाज॥
 बीत्यो अनादी काल यह, मेरे अशुचिता हो रही।
 प्रभु अशुचिता हर आप हो इक, अतः तव शरणा लही॥
 हे नाथ! कर्म विनाश, रागादिक कषाएँ सब नशें।
 जगवास तज शिवराज पाएँ, मुक्तिपुर में जा बसें॥५॥
 दोहा- रागादिक वर्जित हुए, अष्ट कर्म को नाश।

नय प्रमाण तें जानिए, पूरी करते आस॥
 तज दोष पापाचरण सारे, चित्त निर्मल कर महा।
 जिनबिम्ब का करते न्हवन, साक्षात ज्यों जिन का अहा॥

जिन भक्ति से परिणाम निर्मल, बन्ध शुभ कर हों सही।
नशती अशुभ गति पुण्यदायी, जीव पाए शिव मही॥६॥

दोहा-चक्षू कर पावन भये, दर्श पर्श से नाथ॥

सफल हुए गुणगान से, मन वच काय भी साथ॥

हम शक्ति पूर्वक भक्ति कर, जिनराज की अर्चा करें।
पाके मनुज पर्याय पावन, नीव शिव घर की धरें॥

सुरगुरु गणधर आदि प्रभु की, भक्ति कर-कर के थकें।
हम भक्ति से प्रेरित हुए, गुणगान कैसे कर सकें॥७॥

दोहा-क्षीर सिन्धु का मानकर, स्वर्ण कलश में नीर।

धारा देते शीश पर, हरने भव की पीर॥

हे विघ्न हारक! भव निवारक, मोहतम नाशी प्रभो॥

आनन्द कारक दुख निवारक, मोक्ष के वासी विभो॥

हे पतित पावन! कर्म क्षारक, कल्पतरु चिन्तामणी॥

तव भक्ति करते भाव से हम, हे विशद त्रिभुवन धनी॥८॥

दोहा-आदि नाम धारी प्रभो!, हरि हर ब्रह्मा बुद्ध।

नित्य निरंजन अमल शुभ, तुम हो परम विशुद्ध॥

सोरठा-भवदधि तारण हार, हुए पार भव सिन्धु से।

कर दो भव से पार, अनुक्रम से प्रभु भक्त को॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

अभिषेक पाठ-3

तर्ज-आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते॥
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए॥१॥

(श्वासोच्छ्वास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प॥२॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग॥३॥

ॐ ह्रीं नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

मण्डपशुद्धि मंत्र

क्षीरसिन्धु के नीर से, इन्द्र किए प्रच्छाल।
शुद्ध करें वह पीठ हम छोड़ के अन्तर्जाल॥

ॐ ह्रीं अहं जलेन पीठ प्रच्छालनं करोमि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

सिंहासन स्थापना

पाण्डुक शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश॥५॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

(तर्ज-जिन प्रतिमा लेने चलो.....)

लेने चलें भाई लेने चलें, जिन प्रतिमा जी को लेने चलें।
करके न्हवन आवश्यक पलें, जिनप्रतिमा जी को लेने चलें॥टेक॥
प्रथम करें अभिषेक पुनःकर जिनवर की पूजन अर्चन।
नव कोटी से जिन चरणों में, करना भाव सहित वन्दन॥
जिन अर्चा करके भवि जीवों, के सारे ही पाप गलें।

जिन प्रतिमा...॥१॥

कृत्रिमा-कृत्रिम चैत्य जिनालय, जग में गाए महति महान।
काल अनादी से करते हैं, भव्य जीव जिनका गुणगान॥
भक्ती करके ज्ञान के दीपक, भवि जीवों के हृदय जलें।
जिन प्रतिमा...॥२॥

हम सबने सौभाग्य जगाए, पाए श्री जिन के दर्शन।
नहवन करें जल ले कलशों में, करें चरण का भी स्पर्शन।
जिन पूजा करके जीवन में, आने वाले विघ्न टलें।
जिन प्रतिमा...॥३॥

जिनबिम्ब स्थापना

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन॥
आह्वानन है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर॥६॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निहपाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ
तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

चार कलश स्थापना

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोण में, करते मंगलकार॥७॥
ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु स्वस्तये चतुः कलशस्थापनं करोमि।

अर्घ्य -

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ॥८॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलनायक का अभिषेक पाठ

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्परा।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ें प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥९॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते
पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अन्य जिनबिम्बाभिषेक

न्हवन सर्व जिन प्रतिमाओं का, करते होके भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं प्रभु, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं
पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते
भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
जिनाभिषेक करके विशद, झुका रहे पद माथ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो अभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भजन-अभिषेक समय का-1

(तर्ज-करने जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी॥
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥टेक॥
श्री जिन बिम्ब प्रतिष्ठ करके, जिनका न्हवन कराते।
विशद भाव से जिन चरणों, में सादर शीश झुकाते॥
चलो चले भाई हम सब, शिव डगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥1॥
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोणों पर, जल भरकर रखवाए॥
खुशियाँ छाई चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥2॥
प्रासुक करके जल भर करके, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे॥
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥3॥

अभिषेक समय की वन्दना-2

(तर्ज- जिनवर जगती के ईश...)

हे तीन लोक के नाथ! झुकाते माथा।
आज हम स्वामी, अभिषेक करें शिवगामी॥टेक॥
अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर, जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुंदर।
भक्ती करके शत इन्द्र करें प्रणमामी, अभिषेक करें शिवगामी॥
हे तीन लोक.....॥१॥

जल क्षीर सिंधु से लाते हैं जिनवर का न्वहन कराते हैं।
भक्ति कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी, अभिषेक करे शिवगामी॥
हे तीन लोक.....॥२॥

सुर इन्द्रों का सहयोग करें, इन्द्राणी मंगल पात्र भरें।
सुर चँवर ढौरते, जिनके आगे नामी, अभिषेक करे शिवगामी॥
हे तीन लोक.....॥३॥

जो न्हवन प्रभु का करते हैं, वे कर्म कालिमा हरते हैं।
वे सद्श्रावक भी बने 'विशद' शिवगामी, अभिषेक करें शिवगामी॥
हे तीन लोक.....॥४॥

जो जिनवर का अभिषेक करें, वे अपने संकट दूर करें।
सद्संयम धर, बन जाते अन्तर्यामी, अभिषेक करें शिवगामी॥
हे तीन लोक.....॥५॥

भजन-अभिषेक समय का-3

(तर्ज-खिलौना जानकर)

कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।
बनें हम मोक्ष के राही, न्वहन प्रभु का कराते हैं।।टेक॥
कभी अरहंत के कोई, चरण भी छू नहीं पाते।
बिम्ब पाषाण धातू के, प्रतिष्ठित भव्य करवाते॥
पुण्य की वृद्धि करने को, न्वहन उनका कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥१॥
जिनालय तीन लोकों में, अकृत्रिम श्रेष्ठ शुभकारी।
रहे जिनबिम्ब उनमें शुभ, श्रेष्ठ शाश्वत हैं अविकारी॥
वहाँ नर देव विद्याधर, न्वहन कर सिर झुकाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥२॥
प्रथम कर्त्तव्य श्रावक का, रहा अभिषेक फिर पूजन।
करें जो भाव से अर्चा, पुण्य का वे करे अर्जन॥
भक्ति से इन्द्र सौ प्रभु का, न्वहन अतिशय कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥३॥
प्रभु यह भक्त अर्चा को, यहाँ पर आज आये हैं।
'विशद' अभिषेक कर प्रभु का, हर्ष मन में जगाये हैं॥
बनें हम मोक्ष के राही, भावना आज भाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥४॥

चार कलश से अभिषेक

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों।
अनन्त चतुष्टय पा जाएँ हे, नाथ! आपकी जय जय हो॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, मम जीवन प्रभु अक्षय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ें प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥९॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त- चतुर्विंशति
तीर्थकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे
भारतदेशे....प्रदेशे....नाम्निनगरे....तिथौ....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां
सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन जलेनाभिषिंचयामः॥

वृहद जिनाभिषेक

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो।
न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, कर्मों पर मेरी जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥१०॥
ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं
झं इर्वीं इर्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः
क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं हूं हें हैं हं हः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते
भगवते श्रीमते ठः ठः इति सुगन्धित जलेन वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।
दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नोट-यहाँ शांतिधारा करें।)

दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल।
यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल॥१२॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

दोहा- आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन।
विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

दोहा- नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्य।
जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य॥१४॥

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज।
भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज॥१५॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥)

गंधोदक लेने का मंत्र

दोहा- मानो जिनगिरि से गिरी जलधारा हे नाथ!!

गंधोदक उत्तमांग उर, विशद लगाएँ माथ॥

मस्तकोपरि गंधोदकधारयामि

शांतिं च कांतिं विजयं विभूतिं, तुष्टिं च पुष्टिं, सकलस्य जंतोः।
दीर्घायुरा-रोग्य-मभीष्ट सिद्धिं, कुर्याज्जिनस्नान जल प्रवाहैः॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार॥
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सदृष्टि को, करने वाली कर्म शमन॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
श्रीमत् मेरु के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन॥
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण॥2॥
ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरूपं
यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा॥

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ॥
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण॥3॥

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा॥

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव॥
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतू संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर॥
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार॥5॥
ॐ हां ह्रीं हूँ हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन
पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार॥
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार॥6॥

ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ॥7॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान॥
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ॥8॥

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा॥1॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा॥2॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा॥3॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा॥4॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा॥5॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा॥6॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा॥7॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा॥९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा॥१०॥

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान॥
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
'विशद' कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य॥९॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं चरुं बलि
स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान॥
यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान॥१०॥

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं
चरुं वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-
प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्॥
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्॥
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर॥12॥

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरु शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्॥
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान्।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाला।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल॥
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार॥
मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥14॥

ॐ ह्रीं ...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।
लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार॥15॥

ॐ ह्रीं ...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाया।
जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।
तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार॥16॥

ॐ ह्रीं...दाड़िम रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाया।
जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान॥17॥

ॐ ह्रीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके “विशद”, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्व...के रस द्वारा, देते जिनके शीश पे धार॥18॥

ॐ ह्रीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके “विशद”, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार॥
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार॥19॥

ॐ ह्रीं...घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धारा।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार॥
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अतः आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार॥20॥

ॐ ह्रीं...दुग्धाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
उससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान॥
मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥21॥

ॐ ह्रीं...दध्याभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ॥
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाया।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्वौषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक॥
मिश्रित कर उज्ज्वल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष॥23॥

ॐ ह्रीं...सर्वौषधि जिनाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।

जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।

पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव॥

भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।

करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी॥25॥

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....

नाम.....नगरे.....एतद्.....जिनचैत्यालये वीर नि. सं.....

मासोत्तममासे....मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रह लग्न होरायां

मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन

जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार।

करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार॥

निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।

नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य॥26॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग॥
मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान॥27॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार॥
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्॥28॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इर्वीं इर्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनाभिषेचयामि
स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।

जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।

रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप।

इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप॥

काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय।

‘विशद’ आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक ग्रहण मंत्र

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।

पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।

कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, ‘विशद’ रहा जो निस्कारण॥२९॥

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

वीतराग जगन्नेत्रं, सर्वज्ञं सर्वं दर्शिकम्।

‘विशद’ शांति प्रदायं, शांतिधारा करोम्यहं॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय
दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय
सर्वविघ्न- विनाशनाय सर्वरोगोपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव
विनाशनाय, सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः अ सि आ उ
सा नमः मम (.....) सर्वज्ञानावरणकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
सर्वदर्शनावरणकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववेदनीयकर्म
छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमोहनीयकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि
भिन्धि सर्वायुःकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वनामकर्म छिन्धि
छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वगोत्रकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
सर्वान्तरायकर्म छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वक्रोधं छिन्धि छिन्धि
भिन्धि भिन्धि सर्वमानं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमायां छिन्धि
छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वलोभं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वमोहं
छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वरागं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
सर्वद्वेषं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वगजभयं छिन्धि छिन्धि
भिन्धि भिन्धि सर्वसिंहभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वाश्वभयं
छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वगौभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
सर्वाग्निभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वसर्पभयं छिन्धि छिन्धि
भिन्धि भिन्धि सर्वयुद्धभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि

सर्वसागरनदीजलभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वजलोदर
 भगंदर कुष्ठकामलादिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वनिगडादिबंधनभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववायुयान-
 दुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववाष्पयान दुर्घटनाभयं
 छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वचतुश्चक्रिका दुर्घटनाभयं छिन्धि
 छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि
 भिन्धि भिन्धि सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि
 भिन्धि सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि,
 सर्वभूतपिशाचव्यंतर- डाकिनी-शाकिन्यादि भयं छिन्धि छिन्धि
 भिन्धि भिन्धि सर्वधनहानिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वव्यापारहानिभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वराजभयं छिन्धि
 छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वचौरभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वदुष्टभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वशत्रुभयं छिन्धि छिन्धि
 भिन्धि भिन्धि सर्वशोकभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्ववैरं छिन्धि
 छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुर्भिक्षं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
 सर्वमनोव्याधिं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वआतंरौद्रध्यानं
 छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुर्भाग्यं छिन्धि छिन्धि भिन्धि
 भिन्धि सर्वायशः छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वपापं छिन्धि छिन्धि
 भिन्धि भिन्धि सर्व अविद्यां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि

सर्वप्रत्यवायं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकुमतिं छिन्धि छिन्धि
भिन्धि भिन्धि सर्वभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वक्रूरग्रहभयं
छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वदुःखं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि
सर्वापमृत्युं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखरशिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता-
अभयदानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहतिमहावीरसन्मति-
वीरातिवीरवर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीर जिनशासनप्रभावात् सर्वे
जिनभक्ताः सुखिनो भवन्तु सुखिनो भवन्तु सुखिनो भवन्तु।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अहं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे
भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे..... प्रदेशे..... नामनगरे वीरसंवत्.....
मासोत्तमे..... मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे नित्य पूजावसरे
(..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे
ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च...
शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री
शांतिजिनेश्वर! सुभिक्षं कुरु कुरु मनः समाधिं कुरु कुरु धर्मं
शुक्लध्यानं कुरु कुरु सुयशः कुरु कुरु सौभाग्यं कुरु कुरु
अभिमतं कुरु कुरु पुण्यं कुरु कुरु विद्यां कुरु कुरु आरोग्यं कुरु
कुरु श्रेयः कुरु कुरु सौहार्दं कुरु कुरु सर्वारिष्ट ग्रहादीन् अनुकूलय
अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर् द्राघय द्राघय। सौख्यं
साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय
सर्वोपद्रव-शांति कुरु कुरु ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन

जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा।
चतुर्विधसंघस्थ मम च..... सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं
कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।

शांति निरन्तर तपोभव भावितानां॥

शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।

शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।

अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं॥

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

वर्धमान मंत्र : ॐ णमो भयवदो वड्ढमाणस्य रिसहस्स चक्कं
जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा,
विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा,
सव्वजीव सत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

सर्व आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

कुन्द कुन्द की पराम्परागत, आदिसागराचार्यप्रवर।
पट्टाचार्य श्री महावीरकीर्ति, विमल सिन्धु सन्मति सागर॥
भरत सिन्धु कुन्धुसागर जी, विद्यानन्द सम्भवसागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर॥

ॐ हूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ्य

तन विराग है मन विराग है, जो विराग की मूरत हैं।
श्री जिनेन्द्र के लघु नन्दन गुरु, वीतरागमय सूरत हैं॥
मुक्ती पथ के राही बनकर, विशद करें जग का कल्याण।
प.पू. गुरु विराग सिन्धु पद, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान॥

ॐ हूँ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विशदसागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ प. पू. आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती-1

(तर्ज-आनन्द अपार है)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।८॥
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी॥९॥

जिनवर...

मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं॥१०॥

जिनवर...

शांति पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी॥११॥

जिनवर...

हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं॥१२॥

जिनवर...

नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतु, सादर शीश झुकाते हैं॥१३॥

जिनवर का...

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज-सुरपति ले अपने.....)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।

जिन शीश पे देने धारा.....।।टेक।।

जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।

जिनके चरणों में झुकता है जग सारा-जिन शीश.....।।१।।

जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।

शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा-जिन शीश.....।।२।।

गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।

जो अकृत्रिम ना निर्मित किसी के द्वारा-जिन शीश.....।।३।।

जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।

जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा-जिन शीश.....।।४।।

जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।

जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा-जिन शीश.....।।५।।

गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।

मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट, निवारा-जिन शीश.....।।६।।

जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे शुभम् शांति सुख पाते हैं।

उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा-जिन शीश.....।।७।।

जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।

उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा-जिन शीश.....।।८।।

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाएँ आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाएँ केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्माभूत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तब पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वार्थ से भरा, सदा बढ़ाएँ राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योंपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

1-अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)
चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहन्ते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए॥
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग,
द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व.
स्वाहा॥5॥

“पूजा प्रतिज्ञा पाठ”

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाप्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

“स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम् सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजू तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥
इति श्री चतुर्विंशति तीर्थकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

“परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, ‘विशद’ करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नों भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥ (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

विनय पाठ-2

इह विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुं जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुं जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाव॥6॥
भविजन को भवकूप ते तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥

चक्री खगधर इंद्रपद, मिलैं आपतैं आप।
 अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥
 तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
 जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
 पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
 अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
 थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
 खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
 राग सहित जग में रूल्यो, मिले सरागी देव।
 वीतराग भैट्यो अबै, मैटो राग कुटेव॥14॥
 कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
 आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
 तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
 धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
 अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
 मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
 इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
 अपनो विरद निहारकैं, कीजै आप समान॥18॥

तुमकी नेक सृष्टितैं, जग उतरत है पार।
 हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार॥19॥
 जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
 मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
 वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
 विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
 चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
 शिवगमसाधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
 हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥1॥
 मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हद्देव।
 मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव॥2॥
 मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
 सर्वसाधु मंगल करो, वन्दौ मन वच काय॥3॥
 मंगल सरस्वती मात का मंगल जिनवर धर्म।
 मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥4॥
 या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
 मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥5॥

पुष्पांजलिं क्षिपामि

पूजा पीठिका – (संस्कृत)

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता
लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो
धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं
पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपवित्र पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्यंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलम् मतः॥३॥
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥४॥

अहमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सदबीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिन गृहे कल्याण महंयजे॥

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिन गृहे जिननाथ महंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिन गृहे जिननाम महंयजे॥

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ - सुदृशां - सुकृतैकहेतु -
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति - स्वभाव - महिमोदय सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जितदृंग मयाय,
स्वस्तिप्रसन्न - ललिताद्भुत वैभवाय॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल - बोध - सुधाप्लवाय;
स्वस्ति स्वभाव - परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं;
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गान्;
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।

अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ;

पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।

श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।

श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।

श्री सुपाश्वर्यः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।

श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।

श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।

श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।

श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।

श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।

श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।

श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।

श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।

दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥१॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि करें)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
 चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥2॥
 संस्पर्शनसंश्रवणचदूरा - दास्वादना - घ्राण - विलोकनानि।
 दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥3॥
 प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
 प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥4॥
 जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु- प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
 नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥5॥
 अणिम्लि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्लिशक्ताः, कृतिनो गरिम्णि।
 मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥6॥
 सकामरूपित्व-वशित्वमेश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
 तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥7॥
 दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
 ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥8॥
 आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
 सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥9॥
 क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
 अक्षीणसंवान महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥10॥

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

(पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध॥
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री...सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय
अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होय निर्मूल॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल॥

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन॥१॥

भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
 पंच विदेहों के तीर्थकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष॥2॥
 स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
 भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान॥3॥
 मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्थ हैं इष्वाकार।
 रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार॥4॥
 रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
 सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान॥5॥
 उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
 रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश॥6॥
 दोहा- सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।

पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री.....सहित वर्तमान भूत भविष्यत
 सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थकर,
 नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित
 कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ
 क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप
 स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्थ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
 यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापन (दोहा)

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।

सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान विशीति जिनः अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठि सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय

जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भव ताप नशाने आए।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।

अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा-पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा-दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।

देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहन्त

सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।

द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ट॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।

संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।

भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।

पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।

जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।

‘विशद’ भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, ‘विशद’ पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।

पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु विद्यमान विंशति जिन अनन्तानंत सिद्ध

सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।

ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)॥

देव शास्त्र गुरु पूजन (संस्कृत)

स्थापना (उपजाति छन्द)

अर्हन्त देव परिपूजित सर्व लोके, वाणी जिनेन्द्र कथितं शत् शास्त्र रूपं।
निर्ग्रन्थ-मुन्नत धिया गुरु साधु एवं, आह्वाननादि क्रियते विशदं त्रियोगे॥
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, नीरैः विशुद्ध प्रासुकैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, सुगंधैः चित्त हारिभिः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, अक्षतै-रति रक्षतै ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, सुमनैर्-विगतोपमैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, चरुभिः सरसैर्-नवैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, दीपैर्-प्रज्वलितै प्रभैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, धूपैः दश गंधै शुभैर् ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, फलैः सरसै सत्फलैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

करोम्यर्चनं सु भक्त्या, विशदार्घ्य मनोहरैः ।

देव शास्त्र गुरुदेवै, पूजये शिव हेतवे ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यावली

भुवनाम्भोज मार्तण्डं, धर्माभृत पयोधरम् ।

योगि कल्पतरुं नौमिं, देव देवं जिनेश्वरं ॥1॥

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत

सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयत्यशेष तत्त्वार्थ-प्रकाशि प्रथित श्रियः ।
मोह ध्वान्तौ घनिर्भेदि, ज्ञान ज्योति जिनेशिनः ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्दर्श ज्ञानाचरणं, गुणैः सूरीन् स्वमातृभिः ।
पाठकान् विनयै साधून्, त्रियोगं सर्व संस्तुवे ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवदेवं जिनान् सिद्धान्, शास्त्र सन्देह नाशकं ।
गुरु मोक्ष पक्षाः स्यात्, मनो वाक्काय संस्तुते ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूहे पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जिनदेवं नमस्यामि, शास्त्रं च गुरुणां तथा ।
मोक्ष कारणं विशदं, कथितं तु गुणावली ॥

(मालिनी छंद)

विमलगुण समृद्धं ज्ञान विज्ञान शुद्धं,
अभयवन समुद्रं चिन्मयूख प्रचण्डं ।
व्रत दश विधि धारं संयजे श्री विपारं,
विशद जिनविदक्षं सद्व्रतादयं जिनेशं ॥१॥

सकल युवति सृष्टे रं व चूडामणिस्त्वं,
 त्वमसिगुणसुपुष्टेर्-धर्मसृष्टेश्चमूलं ।
 त्वमसि च जिनशास्त्र स्वेष्ट मुक्त्यंगमुख्या,
 तदिहतवं पदाब्ज भूरिभक्त्या नमामः ॥२॥
 स्मरमपि हृदि येषां ध्यान-वह्नि-प्रदीप्ते,
 सकल-भुवन-मल्लं दह्यमानं विलोक्य ।
 कृतभिय इव नष्टास्ते कषाया न तस्मिन्,
 पुनरपि हि समीयुः साधवस्ते जयन्ति ॥३॥
 प्रातिहार्य युतं देव, शास्त्रं अंगबाह्य युतं ।
 वीतरागयुतं साधुं 'विशद' भावेन् पूजितं ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नत्वा श्री मज्जिनाधीशं, त्रैलोक्यं सुखदायकं ।
 शास्त्रं गुरुणां 'विशदं', पूजां सौख्य प्रदायिनीं ॥

इत्याशीर्वादः

पंचाचार परायणाः सुमुनयाः रत्नत्रयाराधकाः ।
 द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन पराः दश धर्म संराधकाः ॥
 समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमाः, स्वाध्याय ध्यानः परः ।
 आचार्या त्रय लोक पूजित पदाः, वन्दे विशदसागरम् ॥
 ॐ ईं प.पू. आचार्य श्री विशदसागराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥

विद्यमान बीस तीर्थकर पूजा

स्थापना

दोहा-पंच विदेहों में रहे, तीर्थकर जिन बीस।

आह्वानन् करते हृदय, झुका चरण में शीश॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्र स्थित श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकर समूह।
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

निर्मल गंगा जल लाए, त्रय रोग नशाने आए।
हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।
चंदन अगुरु घिस लाये, भवताप नशाने आये।
हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत ये लाए, अक्षय पद पाने आए।
हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुष्प मनोहर लाए, अब काम रोग नश जाए।
हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥4॥
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हम क्षुधा रोग विनशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।
 हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥5॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
 हम दीप जलाकर लाए, अब मोह नाश हो जाए।
 हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥6॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।
 हम आठों कर्म नशाएँ, कर्मों की धूप जलाएँ।
 हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥7॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।
 फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
 हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥8॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।
 यह अर्घ्य चढ़ा हर्षाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
 हम विहरमान जिन ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ॥9॥
 ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।

शांती धारा दे रहे, जागे मम उर हर्ष॥

॥ शान्तये शांतिधारा ॥

दोहा- पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।

यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

सीमंधर युगमंधर स्वामी, बाहु सुबाहु संजात स्वयंप्रभ।
वृषभानन श्री अनन्त वीर्य जी, सूर प्रभू विशाल कीर्ति वज्रधर॥
चन्द्रानन भद्रबाहु भुजंगम, ईश्वर श्री नेमिप्रभ जान।
वीरसेन महाभद्र देव यश, अनंतवीर्य हैं पूज्य महान ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नमः

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विहरमान तीर्थेश जिन, शाश्वत रहें त्रिकाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।

चौपाई

मध्य लोक के मध्य में भाई, जम्बू द्वीप मेरु सुखदायी।
जिसके पूरव पश्चिम जानो, रहा विदेह अवस्थित मानो॥1॥
उप विदेह बत्तिस बतलाए, भरत क्षेत्र उन सबमें गाए।
सीमंधर-युगमंधर स्वामी, बाहु-सुबाहु रहे जगनामी॥2॥
द्वितिय द्वीप धातकी जानो, दो भागों में विस्तृत मानो।
विजय मेरु पूरव में सोहे, जिसके चारों दिश मन मोहे॥3॥
हैं विदेह बत्तिस शुभकारी, आर्य खण्ड में मंगलकारी।
प्रभु संजात स्वयंप्रभ जानो, अनन्तवीर्य ऋषभानन मानो॥4॥

अचल मेरु पश्चिम दिश भाई, हैं विदेह बत्तिस शिवदायी।
 प्रभु विशाल सूर्यप्रभ गाए, श्री वज्रधर चन्द्रानन पाए॥5॥
 पुष्करार्ध शुभ दीप कहाए, जिसके भी दो भाग बताए।
 मंदर मेरु पूर्व में सोहे, उप विदेह बत्तिस मन मोहे॥6॥
 भद्रबाहु जी श्री भुजंगम, ईश्वर नेमिप्रभ का संगम।
 पुष्करार्ध पश्चिम में जानो, विद्युन्माली मेरु मानो॥7॥
 उप विदेह बत्तिस शुभकारी, आर्य खण्ड में मंगलकारी।
 वीरसेन महाभद्र यशोधर, अजितवीर्य तह सोहें जिनवर॥8॥
 धनुष पाँच सौ है ऊँचाई, कोटि पूर्व आयू बतलाई।
 विद्यमान जिन बीस कहावें, शत इन्द्रों से पूजे जावें॥9॥

दोहा- शत इन्द्रों से पूज्य हैं, परम पूज्य तीर्थेश।

अर्चा करते भाव से, जिनकी यहाँ विषेश॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पूज्य हैं तीनों लोक में, तीर्थकर भगवान।

‘विशद’ भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंच परमेष्ठी पूजा

स्थापना

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनिराज।
आहवानन् करते हृदय, तारण तरण जहाज॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठिन्!
अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल-छन्द)

हम जल से पूज रचाएँ, त्रय रोग से मुक्ती पाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।
चन्दन जिन चरण चढ़ाएँ, भव रोग से मुक्ती पाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चदनं निर्व.स्वाहा।
अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पद अक्षय पाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व.स्वाहा।
हम पुष्प थाल भर लाएँ, निज काम रोग विनशाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, अब क्षुधा रोग विनशाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

घृत के शुभ दीप जलाएँ, हम मोह अंध विनशाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे सरस चढ़ाएँ, अब मोक्ष महाफल पाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अब शाश्वत पदवी पाएँ।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांती पाने दे रहे, निर्मल जल की धारा।
अष्ट कर्म मय लोक से, पाएँ हम अब पार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, किए जगत उद्धार।
अर्चा करते आपकी, अतः सभी नर नार॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली (चाल छन्द)

जिनवर अरहंत कहाए, जो घाती कर्म नशाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आठों कर्म नशाए, जिन सिद्ध सनातन गाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं पंचाचार के धारी, आचार्य श्रेष्ठ अनगारी।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मुनियों को स्वयं पढ़ाएँ, वे उपाध्याय कहलाएँ।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
हैं विषयाशा के त्यागी, निर्ग्रन्थ साधु बड़भागी।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
परमेष्ठी पंच कहाए, जो जगत पूज्यता पाए॥
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनिराज।
जयमाला जिनकी यहाँ, गाते हैं हम आज॥

(पद्धडि छन्द)

अरहंत कहे जग में महान, जो प्रकट करें केवल्य ज्ञान।
जो कर्म घातिया कर विनाश, प्रभु अनन्त चतुष्टय कर प्रकाश॥1॥
हैं दोष अठारह से विहीन, निज गुण में रहते सदा लीन।
जो होते छियालिस सुगुणवान, प्रभू जैन जगत की रहे शान॥2॥
रागादि विकारी भाव हीन, हैं सिद्ध प्रभु निज में निलीन।
निर्द्वन्द्व निराकुल निर्विकार, हैं नित्य निरंजन निराकार॥3॥
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान।
अवगाहन वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर हैं अगाध॥4॥
जो दर्श ज्ञान आचारवान, सुख वीर्य सहित गुण के निधान।
आचार्य करें दीक्षा प्रदान, जग जीवों को दें अभयदान॥5॥
गुरु उपाध्याय जग में महान, दें मुनियों को जो ज्ञान दान।
जिनके पच्चिस गुण हैं प्रधान, अंग बाह्य अंग श्रुत हैं महान॥6॥
हैं विषयाशा से जो विहीन, सद् ज्ञान ध्यान में रहें लीन।
मुनि रत्नत्रय के रहे कोष, जो करें निवारण पूर्ण दोष॥7॥
परमेष्ठी पाँचों हैं त्रिकाल, अर्चा कर कटता कर्म जाल।
है चरणों वन्दन बार-बार, अब भव सिन्धू से मिले पार॥8॥

दोहा-महिमा जिनकी है अगम, गरिमा का ना पार।

जिनकी अर्चा हम यहाँ, करते भली प्रकार॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत,सिद्ध,आचार्य,उपाध्याय,सर्वसाधु पंचपरमेष्ठीभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- जिनकी अर्चा कर विशद, होवें कर्म विनाश।

भातें हैं यह भावना, पाएँ ज्ञान प्रकाश॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

नवदेवता पूजन

स्थापना

अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु जग में पावन।
जैन धर्म जिनचैत्य जिनालय, जैनागम का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालय समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ
ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नाश हो जाए।

नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अर्चा को लाए, संसार ताप नश जाए।

नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ायें, अक्षय पद हम भी पाएँ।

नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, मम कामरोग नश जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु चढ़ा रहे मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन यह दीप जलाए, मम मोह तिमिर नश जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब मोक्ष सुफल को पाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है अनर्घ्य पददायी।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा से मिले, मन में शांति अपार।
अतः आपके पद युगल, देते शांती धार॥

॥ शांतये शांतिधारा ॥

दोहा- पुष्पांजलि के हेतु यह, पावन लाए फूल।
कर्मों से मुक्ती मिले, शिव पद हो अनुकूल॥

॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

नवदेवता के अर्घ्य

झुकते हुए इन्द्र के मुकटों, की मणियों से आभावान।
जिन के पद नख शोभित होते, जिनका हम करते गुणगान॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख वीर्य अगुरुलघु, सूक्ष्मत्व अवगाहन गुणवान।
अव्याबाध अष्टगुण धारी, सिद्धों का करते गुणगान॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पंचाचार।
छत्तिस गुणधर आचार्यों के, पद में वन्दन बारम्बार॥३॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी उपाध्याय गुणवान।
सम्यक्श्रुत को पाते हैं जो, जिनका करते हम गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय धारी अविकार।
सर्वसाधु की अर्चा करके, वन्दन करते बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा आदि दश पावन, रत्नत्रय युत धर्म प्रधान।
परम अहिंसा धर्म विशद है, धारें हम जो हे भगवान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग जिनवाणी पावन, द्रव्य भाव श्रुत रूप प्रधान।
अर्चा करते जिनवाणी की, पाने हेतू सम्यक्ज्ञान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री जिनागमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों की, अर्चा करते बारम्बार।
अल्पकाल में भव्य जीव वे, शिवपद पाते अपरम्पार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालय, तीन लोक में रहे महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, गाते हैं प्रभु का गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म
जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- पूजनीय नवदेवता, जग में रहे त्रिकाल।

भाव सहित गाते यहाँ, जिनकी हम जयमाल॥

(वीर छन्द)

नव कोटी से नवदेवों के, पद पंकज में करें प्रणाम।
निज स्वरूप के ज्ञान हेतु हम, सबको ध्याते आठोंयाम॥
धन्य धन्य अरहंत परम प्रभु, चार घातिया कर्म विहीन।
सर्व लोक के ज्ञाता दृष्टा, सम्यक् केवल ज्ञान प्रवीण॥1॥
सहज ज्ञान स्वरूप धन्य हैं, सिद्ध महाप्रभु महिमावन्त।
त्रैकालिक ध्रुव गुण अनन्त के, धारी सिद्ध अनन्तानन्त॥
पञ्चाचार परायण अनुपम, धन्य धन्य आचार्य महान्।
शिक्षा दीक्षा दाता गुरुवर, भव्यों को दें सम्यक्ज्ञान॥2॥
उपाध्याय मुनि धन्य लोक में, द्वादशांग श्रुत के धारी।
ज्ञाता द्रव्य भाव श्रुत के शुभ, मोक्ष पन्थ के अधिकारी॥
रत्नत्रय का पालन करते, ज्ञान ध्यान तप रहते लीन।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीण॥3॥
धर्म वस्तु स्वभाव रूप है, सर्व जगत में रहा महान्।
परम अहिंसामयी धर्म शुभ, जीवों का करता कल्याण॥
स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान्।
सन्देहादिक दोष रहित शुभ, सप्त तत्त्व का जिसमें ज्ञान॥4॥
अर्हन्तों की प्रातिहार्य युत, निर्विकार मुद्रा पावन।
काष्ठ उपल धातू का अनुपम, बिम्ब बना है मनभावन॥

घंटा तोरण से सुसज्जित, परकोटा संयुक्त महान्।
कलश युक्त शुभ शिखर मनोहर, से दिखती है ऊँची शान॥5॥

दोहा- पूजा कर नव देव की, पूज्य बनें धीमान्।
धन वैभव सुख प्राप्त कर, करें आत्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम
जिनचैत्य चैत्यालयेभ्योः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नवदेवों की भक्ति से, हो कर्मों का नाश।
‘विशद’ ज्ञान पाकर शुभम्, होवे मुक्ती वास॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थकरों का अर्घ्य

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।

पञ्च परावर्तन करके, बहु संसार बढ़ाया॥

अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।

पूजा करते भाव से, पाने को भव पार॥

मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनचैत्यालयों का अर्घ्य

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में महति महान्।
चार सौ अट्ठावन अकृत्रिम, मध्य लोक में जिनगृह मान॥
लख चौरासी सहस सत्तानवे, तेइस ऊर्ध्व में श्री जिनधाम।
असंख्यात ज्योतिष व्यन्तर के, जिनगृह को है 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान॥
उनमें जो जिनबिम्ब विराजे, अकृत्रिम शुभ मंगलकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय सम्बन्धि जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

एक सौ सत्तर तीर्थकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश॥
क्षेत्र विदेहों में तीर्थकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हैं अपना शीश॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपे सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित युगपथ संतति प्राप्त सर्व
तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथा॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थकरों के अर्घ्य

(तर्ज- सास भी कभी बहु थी)

धर्म प्रवर्तन प्रभु जी कीन्हें हैं, षट् कर्मों की शिक्षा दीन्हें हैं।
आदिनाथ स्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, शिवसुख में करते रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥1॥

ॐ ह्रीं जिनधर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अजितनाथ जी कर्म विजेता हैं, मुक्ती पथ के अनुपम नेता हैं।
शिवपद के दाता हैं, जीवों के त्राता हैं, जिनवर हैं पावन श्रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥2॥

ॐ ह्रीं विजय प्रदायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कार्य असंभव संभव कीन्हें हैं, स्व का चित्त स्वयं में दीन्हें हैं।
संभव जिनस्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, चरणों में करते नमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥3॥
ॐ ह्रीं कार्य सिद्धिदायक श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनंदन पद वंदन करते हैं, चरणों में अपना सिर धरते हैं।
जग में निराले हैं, शुभ कांतिवाले हैं, सारा जग करता नमन्॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥4॥

ॐ ह्रीं सन्मान प्रदायक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
सुमतिनाथ यह नाम निराला है, मति सुमति जो करने वाला है।
पंचम तीर्थकर हैं, मानो शिवशंकर हैं, कर्मों का करते शमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥5॥

ॐ ह्रीं सुमति प्रदायक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
पद्मप्रभुजी पद्म समान कहे, कमल की भाँति आप विरक्त रहे।
महिमा दिखाई है, प्रतिमा प्रगटाई है, बाड़े को कीन्हा चमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥6॥

ॐ ह्रीं सुरभि प्रदायक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
जिन सुपार्श्व की महिमा न्यारी है, सारे जग में विस्मयकारी है।
जिनवर कहाए हैं, मुक्तिपद पाए हैं, कीन्हें हैं मोक्ष गमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥7॥

ॐ ह्रीं सौख्य प्रदायक श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
चन्द्र चिन्ह प्रभु के पद श्रेष्ठ रहा, धवल कांति है चन्द्र समान अहा।
चंदा सितारों में, सोहें बहारों में, प्रभुजी हैं चन्द्र सम अहा॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥8॥

ॐ ह्रीं कांति प्रदायक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

पुष्पदंत जी प्रभु कहाए हैं, दंत पंक्ति पुष्पों सम पाए हैं।
नाम जो पाया है, सार्थक कहाया है, ऐसा है आगम कथन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥9॥

ॐ ह्रीं दीप्ति प्रदायक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तन मन से शीतलता पाई है, शीतलवाणी अति सुखदायी है।
शीतल जिन चंदन है, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥10॥

ॐ ह्रीं शीतलता प्रदायक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
श्रेय प्रदाता जो कहलाए हैं, निःश्रेयस पद प्रभुजी पाए हैं।
श्रेय दिला दीजे, देरी अब न कीजे, मिट जाए भवकी तपन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥11॥

ॐ ह्रीं श्रेय प्रदायक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
वासुपूज्य सुत जग उपकारी हैं, वासुपूज्य जिन मंगलकारी हैं।
चंपापुर प्रभु आए, कल्याणक सब पाए, चंपापुर की शुभ धरन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥12॥

ॐ ह्रीं पूज्यता प्रदायक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
विमल गुणों को पाने वाले हैं, विमलनाथ जिनराज निराले हैं।
निर्मल जो पावन हैं, अतिशय मनभावन हैं, जग में हैं तारण तरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥13॥

ॐ ह्रीं निर्मलता प्रदायक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुण अनंत जिनने प्रगटाए हैं, अनंतनाथ जिनराज कहाए हैं।
जग में न आएंगे, अंत ना पाएंगे, करते हैं सुख में रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥14॥

ॐ ह्रीं सज्ज्ञान प्रदायक श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
धर्मध्वजा जो हाथ सम्हारे हैं, धर्मनाथ जिनराज हमारें हैं।
धर्म के धारी हैं, अतिशय शुभकारी हैं, करते हम जिन पद वरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥15॥

ॐ ह्रीं सद्धर्म प्रदायक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
शांतिनाथ पद माथ झुकाते हैं, जिनभक्ती कर हम हर्षाते हैं।
शांती के दाता हैं, जग के विधाता हैं, आते हैं प्रभु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥16॥

ॐ ह्रीं विशद शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कुंथुनाथ अज लक्षणधारी हैं, प्राणीमात्र के जो उपकारी हैं।
तीर्थकर पद पाए, चक्री शुभ कहलाए, तेरहवें आप मदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥17॥

ॐ ह्रीं मुक्ति प्रदायक श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कामदेव पद जिनने पाया था, चक्ररत्न भी शुभ प्रगटाया था।
अरहनाथ तीर्थकर, अनुपम थे क्षेमंकर, मैंटे जो जन्म-मरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥18॥

ॐ ह्रीं साध्य प्रदायक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब मल्लों में मल्ल कहाए हैं, कर्म मल्ल जो सभी हराए हैं।
मल्लिनाथ की जय हो, कर्मों का भी क्षय हो, करते हम पद में नमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥19॥

ॐ ह्रीं शक्ति प्रदायक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
मुनियों के व्रत जिनने पाए हैं, मुनिसुव्रतजी जो कहलाए हैं।
शनिग्रह विनाशी हैं, सद्गुण की राशि हैं, कर्मों का कीन्हा क्षरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥20॥

ॐ ह्रीं सच्चरित्र प्रदायक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
विजयसेन सुत नमि जिन कहलाए, अनंत चतुष्टय अनुपम प्रगटाए।
शिवसुख जो पाए हैं, जग को दिलाए हैं, पाए हैं मुक्ती सदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥21॥

ॐ ह्रीं दिव्यता प्रदायक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
वर बनके जिनवरजी आये थे, मन में जो वैराग्य जगाए थे।
मुनियों के व्रत पाए, संयम जो अपनाए, पशुओं का देखा क्रंदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥22॥

ॐ ह्रीं वैराग्य प्रदायक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।
उपसर्ग विजेता जो कहलाते हैं, उनके पद हम शीश झुकाते हैं।
समता जो धारे हैं, शत्रु भी हारे हैं, पारस प्रभु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है॥23॥

ॐ ह्रीं उपसर्ग निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

वर्धमान समति कहलाए हैं, वीर और अतिवीर कहाए हैं।
 महावीर कहलाए, पाँच नाम प्रभु पाए, कर्मों का कीन्हें दहन।
 क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥24॥
 ॐ ह्रीं ऋद्धि वृद्धि प्रदायक श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये
 अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

तीर्थकर चौबिस कहलाए हैं, इस जग को समार्ग दिखाए हैं।
 जीवों के हितकारी, अतिशय करुणाधारी, करते हम जिनपद नमन॥
 क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥
 ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
 हम भूल गये सदराह प्रभो! न पार उसे कर पाए हैं॥
 हम पद अनर्घ्य पाने हेतू यह अर्घ्य करें पद में अर्पण।
 वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर
 जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए हैं, पद अनर्घ्य पाने हम आए हैं।
 बाहुबली हम तुमको ध्याते हैं, पद में सादर-शीश झुकाते हैं॥
 ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पददायी।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडसकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया॥
हैं पंचमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ॥
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान्।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ
जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं॥
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए॥
रत्नत्रय रहा महान, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं॥
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मोदशिखरादि तीर्थकर निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध
परमेष्ठिने जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिमण्डल का अर्घ्य

चौबिस जिन वसु वर्ग पंच गुरु, रत्नत्रय चउ देव निकाय।
चार अवधि धर अष्ट ऋद्धि युत, चौबिस सूरि त्रय ह्रीं जिनाय॥
दश दिग्पाल यंत्र सम्बन्धी, परम देव जो रहे महान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद करें हम भी गुणगान॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यंत्र सम्बन्धी परम देवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्य

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतु, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए॥
हम सप्तऋषी की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज का अर्घ
मात कटोरी पिता बिहारी जी, जन्म कोशमा मंगलकारी जी।
विमल सिन्धू कहलाए, संयम जो अपनाए, शिवपथ में कीन्हे गमन॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्रीगुरुवर का दर्शन पाया है॥

ॐ हूँ प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विमलसागर
मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा।

आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज का अर्घ
ग्राम लुहारिया में गुरु जन्म लिए, मात पिता को भी जो धन्य किए।
भरत सिन्धू कहलाए, महिमा जो दिखलाए, कहलाए पावन श्रमण॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्रीगुरुवर का दर्शन पाया है॥
ॐ हूँ मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री 108 भरतसागर मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज का अर्घ
कपूरचन्द माँ श्यामा के जाए, विराग सिन्धु आचार्य प्रवर गाए।
गणाचार्य कहलाए, राष्ट्र संत जो गाए, बुन्देली भू के श्रमण॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्रीगुरुवर का दर्शन पाया है॥
ॐ हूँ गणाचार्य श्री 108 विरागसागर मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज का अर्घ
गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं, अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरुपद नमन॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्रीगुरुवर का दर्शन पाया है॥

ॐ हूँ प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर
यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

जल के यह कलश भराए, हम भेंट हेतू यह लाए।
तुम क्षेत्र के रक्षाकारी, हे क्षेत्रपाल मनहारी॥
ॐ आं क्रों विध्वंशनायजिन शासन रक्षक क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पद्मावती का अर्घ्य

किया घोर उपसर्ग कमठ ने, पार्श्व प्रभु थे ध्यानालीन।
शीश पे धारा पद्मावती ने, चरणों झुका कमठ हो दीन॥
जन-जन की रक्षाकारी, हे पद्मावती हो आप महान।
अर्घ्य समर्पित विशद भाव से, करके करते हम गुणगान॥
ॐ ह्रीं जिनशासन रक्षिका धरणेन्द्रभार्या पद्मावती देवी अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री सिद्ध परमेष्ठी की पूजा

स्थापना

दोहा- आत्म सिद्धि करके बने, सिद्ध शिला के ईश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र
अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र
मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्दः रेखता)

नीर का कलशा लिया भराय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लिया घिसाय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अक्षत का लिया भराय, प्रभू के पद में दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प हाथों में ले शुभकार, अर्चना करते बारम्बार।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए आज, चढ़ाने लाए हम जिनराज।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घी का लिया प्रजाल, वन्दना करते विशद त्रिकाल।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित लाये धूप महान, नशाएँ आठों कर्म प्रधान।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान, मोक्ष फल पाएँ हम भगवान।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ!, सिद्ध पद झुका रहे हम माथ॥१॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन्
अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धारा।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

॥ शांतये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

सिद्धों के 8 मूलगुणों के अर्घ्य

प्रभु 'ज्ञानावरणी कर्म' नाश, फिर करें ज्ञानकेवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिन 'कर्म दर्शनावरण' नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब करें 'वेदनीय' का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु 'मोह कर्म' से कहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जिन 'आयु कर्म' का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥5॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु 'नामकर्म' करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥6॥

ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ना 'गोत्र कर्म' का रहा काम, गुण पाए अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु 'अन्तराय' करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥8॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाए आठ।

परम सिद्ध के भक्त बन, पाते ऊँचे ठाठ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सिद्धों की पूजा करें, करने कर्म विनाश।

जयमाला गाते विशद, हो शिवपुर में वास॥

(शम्भू छन्द)

गुण गाने को सिद्ध प्रभू के, अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन॥
काल अनादी से कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।
चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है॥1॥
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।
त्रिशत कोड़ा-कोड़ी सागर, स्थिति भाई पहिचानो॥
नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान॥2॥
वेदनीय बारह मुहूर्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।
अन्तर्मुहूर्त शेष कर्म की, स्थिति जघन्य का आता पाठ॥
मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण॥3॥
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान॥
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान॥4॥
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया॥

इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्परा।
 शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार॥5॥
 आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
 नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास॥
 अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
 अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद॥6॥
 अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
 लोक शिखर पर प्रभू विराजें, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध॥
 भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ!
 'विशद' भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ॥7॥

(छन्द : घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
 जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी॥

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तसुख-
 अनन्तवीर्य अगुरु-लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुण सम्पन्न-
 सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।
 अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

त्रिकालवर्ति तीर्थकर पूजन

स्थापना

दोहा- भूत भविष्यत के तथा, वर्तमान तीर्थेश।

आह्वानन् कर पूजते, भाव से हम अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

नाथ! आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आये, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय संसारताप
विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त बने भक्ती को आये, अक्षय पद को अक्षत लाये।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय अक्षयपद
प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय कामबाण
विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय क्षुधारोग
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम यह दीप जलाते स्वामी, बन जाएँ अब शिव पथगामी।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय महा
मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित हम ये धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय अष्टकर्म
दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये यहाँ चढ़ाने लाए, प्रभु शिव फल पाने को आए।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय मोक्षफल
प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ये अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शुभ मुक्ती पद दायी।
त्रैकालिक तीर्थकर ध्याएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ॥१॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी तीर्थकर जिनेन्द्राय अनर्घपद
प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते हैं हम भावना, सुखी रहे संसार।
अतः श्री जिन के चरण, देते शांती धार॥

॥ शांतये शांतिधारा ॥

दोहा- इस संसार असार में, धर्म एक है सार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने भवदधि पार॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

भूतकाल के चतुर्विंशति तीर्थकर

(ज्ञानोदय छन्द)

निर्वाण सागर महासाधु जी, विमल श्रीधर सुदत्त सुजान।
श्री अमलप्रभ उद्धर अंगिर, सन्मति सिन्धु कुसुमाञ्जलि मान॥
शिवगण उत्साह ज्ञान परमेश्वर, विमलेश्वर जी यशोधर जान।
कृष्ण ज्ञान शुद्धमति श्री भद्र, अतिक्रान्त शांत पूज्य महान॥१॥
ॐ ह्रीं भूतकाल सम्बन्धी श्रीचतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वर्तमान के चतुर्विंशति तीर्थकर

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूं तीर्थेश॥

विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में अर्घ सुदेय॥2॥
ॐ ह्रीं वर्तमान सम्बन्धी श्रीचतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्राय अर्घ्य नि.स्वाहा।

भविष्य काल के चतुर्विंशति तीर्थकर

महा पद्म सुरदेव सुपार्श्व जी, स्वयंप्रभ सर्वात्मभूत विशेष।
देवपुत्र कुलपुत्र उदंक प्रोष्ठिल, जय कीर्ति मुनिसुव्रत अर शेष॥
श्री निष्पाप निष्कषाय विपुल जी, निर्मल चित्र समाधी गुप्त।
स्वयंभू अनिवर्तक श्रीजयजी, विमल देवपाल अनन्तवीर्य संयुक्त॥3॥

ॐ ह्रीं भविष्यत काल सम्बन्धी श्री चतुर्विंशति तीर्थकर जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में पूज्य हैं, जिन तीर्थेश त्रिकाल।
विशद भाव से हम यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(मोतियादाम छन्द)

प्रभू हैं अतिशय महिमावन्त, कहाते अतः आप अर्हन्त।
जगाते भव्य जीव श्रद्धान, प्राप्त फिर करते सम्यक् ज्ञान॥1॥
विशद होकर के चारितवान, पाएँ रत्नत्रय सुनिधि महान।
रहे रागादिक दोष विहीन, होय निज आत्म ध्यान में लीन॥2॥
महाव्रत धारी हो जिनराज, कहाते जैन धर्म के ताज।
कहे जिनराज समितियों वान, गुप्तियाँ पालें संत महान॥3॥

पालते षट् आवश्यक आप, नशाते हैं अपने सब पाप।
 सप्त गुण पालें अपने अन्य, होय जिनवर का जीवन धन्य॥4॥
 पालते जिनवर पंचाचार, सुपद पाते हैं वे आचार्य।
 मूलगुण जिनके हैं पच्चीस, उपाध्याय होते पूज्य ऋशीष॥5॥
 प्राप्त करके जो शुभ उपयोग, नाश करते हैं भव का रोग।
 जगाते हैं प्रभु केवलज्ञान, करें जो जग जन का कल्याण॥6॥
 देशना देते प्रभू महान, जगाएँ वीतराग विज्ञान।
 प्राप्त करते जो पद निर्वाण, सिद्धपद पावें आप महान॥7॥
 करें फिर सिद्ध शिला पर वास, ध्यान कर होवे पूरी आस।
 अतः हम करते जिन गुणगान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान॥8॥

दोहा- 'विशद' ज्ञान पाएँ प्रभू, जगती पति जगदीश।
 नाथ! आपके चरण में, भक्त झुकाते शीश॥

ॐ ह्रीं वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय
 जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाव सहित जो भी करें, श्री जिन का गुणगान।
 अल्प समय में जीव वे, करें स्वयं कल्याण॥

॥ इत्यादि आशीर्वादः ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

भेद ज्ञान समं ज्ञानं, रत्नत्रय समं धनं।
 'विशद' आत्म समं ध्यानं, न भूतो न भविष्यति॥

श्री चतुर्विंशति तीर्थकर पूजन

स्थापना

दोहा- ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।

विशद हृदय में आज हम, करते हैं, आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।

हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, भव ताप नशाने आए।

हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षत नाथ! चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।

हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।

हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा आहार नशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।
निज आत्म शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पद तीर्थकर का प्रभू, पाए मंगलकार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार॥

(चौपाई)

आदिनाथ जी आदि में आए, अजितनाथ सब कर्म नशाए।
 सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी॥1॥
 सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभू जग मंगलकारी।
 जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्रप्रभु चन्दा सम गाए॥2॥
 सुविधिनाथ हैं जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
 जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए॥3॥
 विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
 धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी॥4॥
 कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
 मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए॥5॥
 नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
 पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता॥6॥
 चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
 जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए॥7॥
 जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
 भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ! आपका दर्शन पाया॥8॥
 द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
 भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते॥9॥
 गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
 भाव बनाकर हम यह आये, शिव पद हमको भी मिल जाए॥10॥

दोहा- शिव पद के धारी हुए, तीर्थकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ॥
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते माथ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री आदिनाथ पूजन

स्थापना

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए।
तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए॥
ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए।
हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र
तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार॥

॥ शान्तये-शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ॥

पंचकल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्मकल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥3॥

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥५॥

ॐ ह्रीं माघवदी चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥

(चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान।
निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शाश्वत मुक्ती धाम॥
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महति महान।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण॥१॥
पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक॥
नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख॥
षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश।
नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष॥२॥

सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन।
 एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन॥
 कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान।
 इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण॥3॥
 गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश।
 ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश॥
 अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश।
 मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धशिला पर कीन्हे वास॥4॥
 किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान।
 विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान॥
 नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द।
 पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद॥5॥

(घत्ता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो।
 हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥
 दोहा-तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार।
 जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्री पद्मप्रभु पूजन

स्थापना

दोहा- पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्तिकरणम्!

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी॥1॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए॥2॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए॥3॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ला की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्यथ दिखलाए॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।

जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश॥1॥

अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
 धरण नृप रही सुसीमा मात, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण॥2॥
 दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
 कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम॥3॥
 जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
 ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष॥4॥
 स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
 रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान॥5॥
 पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश।
 समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास॥6॥
 दोहा-प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
 गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
 दोहा-इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
 अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

मोक्ष मार्ग समं मार्ग, धर्म नहिं विवेक वत्।
 विशद ज्ञान समं ज्ञानं, निर्ग्रन्थान् नापरोगुरुः॥

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन

स्थापना

सोरठा- कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।

भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।
(चाल टप्पा)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी॥

पूजते हम जिन पद भाई।

जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई॥

पूजते हम जिन पद भाई।

जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई॥

पूजते हम जिन पद भाई।

जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई॥

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने, ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई॥

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई॥

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी॥

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी
महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥८॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥पूजते...॥९॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

पाँचें वदि चैत निराली, जिनगृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।
मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई॥

चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥१॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।

गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।
न्हवन कराया शत् इन्द्रों ने, जग मंगलदायी॥२॥

चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।
आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी॥३॥

चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।
तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई॥४॥

चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई॥५॥

चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।

दोहा- आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।
शिव पद के राही बनें, बड़े मोक्ष की ओर॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

भक्ती कर मुक्ती मिले, कहते जिन भगवान।
अतः भक्ति कीजे विशद, पाने पद निर्वाण॥

श्री पुष्पदन्त पूजा

स्थापना

सोरठा-पुष्पदन्त भगवान्, शिवपथ के राही बने।

करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥1॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण नवम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, श्री पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥2॥

ॐ ह्रीं मंगसिर शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग॥3॥

ॐ ह्रीं मंगसिर शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार॥4॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त
श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव॥5॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम॥

(छन्द वेसरी)

पुष्पदन्त तीर्थकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा॥1॥
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो॥2॥
दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कण्टक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी॥3॥
दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥4॥
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए॥5॥
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, 'विशद' हुए मुक्ती पथगामी॥6॥

दोहा- शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना

सोरठा- पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तब पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥3॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥4॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठ जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम॥

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर भद्रिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय॥1॥

पिता दृढरथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा माता।
 जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष॥2॥
 मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
 कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान॥3॥
 प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
 देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आत्म का आभास॥4॥
 स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।
 जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण॥5॥
 प्रथम गणधर का कुन्धू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
 कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज॥6॥
 दोहा- कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।
 जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।
 भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

जिन पूजा सुखप्रद विशद, है शिव की सोपान।
 जिन पूजा करके सभी, पावें पद निर्वाण॥

श्री वासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना

सोरठा- वासुपूज्य भगवान्, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा- जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाएँ शिव पद वास॥4॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तव चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वारा॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला-माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठ्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥2॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को॥4॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, वासुपूज्य जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥5॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे॥1॥

जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
 इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान॥2॥
 गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
 न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए॥3॥
 लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊँचाई जान।
 बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान॥4॥
 दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
 केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ॥5॥
 छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
 कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥6॥
 दोहा- चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।
 भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 दोहा- भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।
 'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

भव सुखकारी धर्म है, स्वर्ग का जो सोपान।
 धर्म प्राप्त करके विशद, पावें पद निर्वाण॥

श्री शांतिनाथ जिन पूजा

स्थापना

शांतिनाथ शांती के दाता, इस जग में कहलाए हैं।
भक्त चरण की भक्ती करने, का सौभाग्य जगाए हैं॥
अतिशयकारी जिन प्रतिमाएँ, शांतिनाथ की महति महान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, करते हम उर में आह्वान॥
दोहा- शांती पाने के लिए, आए आपके द्वार।

विशद वन्दना कर रहे, पद में बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!॥1॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।
चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!॥2॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।
अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!॥3॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बनें मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी!!॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांतिनाथ के द्वार पे, होती पूरी आस।

करते शांतिधार हम, होवे ज्ञान प्रकाश॥

(शांति शांतिधारा)

दोहा- पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हे जिनराज॥

हमको भी शिव पद मिले, तारण तरण जहाज॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।

दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।

सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।

जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल॥

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते॥1॥
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते॥2॥
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते॥3॥
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते॥4॥

जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते॥5॥
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते॥6॥

दोहा- शांती के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
‘विशद’ शांति पाए स्वयं, करो प्रभू उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो!, बोलें जय-जयकार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

वर्धमान मंत्र : ॐ णमो भयवदो वड्डमाणस्य
रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं,
लोयाणं, भूयाणं, जये वा, विवादे वा, थंभणे वा,
रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीव
सत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना

दोहा- शनि ग्रह पीड़ा हर कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मादिक रुज मम नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाथ
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाथ चंदनं निर्व.स्वाहा।
अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व.स्वाहा।
सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदाई।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
घृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
अग्नी में हम धूप जलाएँ, आठों कर्म नाश हो जायें॥
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।
फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, पाने शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पायें पद निर्वाण॥

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा- मुक्ती के राही बने, रत्नत्रय को धार।
पुष्पांजलि करते चरण, जिनपद बारंबार॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशि शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।

भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाला॥

(नरेन्द्र छंद)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाई, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाई, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिह्न बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्टि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥
गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर, निर्जर कूट बताई।
उस पावन भूमी से प्रभु ने, मोक्ष लक्ष्मी पाई॥7॥

दोहा- अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।

कूट निर्जरा से प्रभु, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- मुनिसुव्रत भगवान का, जपें निरन्तर नाम।

इस भव के सुख प्राप्त कर, पावें वे शिवधाम॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ॥

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर तब, समवशरण बनवाते हैं॥
नेमिनाथ तीर्थंकर जिनकी, अर्चा करते महति महान्।
विशद हृदय में श्री जिनेन्द्र का, भाव सहित करते आह्वान॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

प्रभु निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।
केसर ये धवल चढ़ाएँ, भव ताप पूर्ण विनशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।
अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।
ये पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम रोग नश जाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

यह धूप जलाते भाई, जो है पावन शिवदायी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, शाश्वत शिव-पदवी पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चाल छन्द

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥1॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठ्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥2॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठ्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठ्यां तपमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥4॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥5॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल॥

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन॥1॥

अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
 सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान॥2॥
 ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
 है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान॥3॥
 जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
 झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़॥4॥
 कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार॥
 फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान॥5॥
 तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
 फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास॥6॥

दोहा- भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
 वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
 मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

बिन मांगे ही यहाँ पर, भरपूर मिलता है।
 आशाओं से अधिक, जी हज़ूर मिलता है।
 दुनियाँ में कहीं कुछ मिले न मिले विशद॥
 पर पार्श्व प्रभु के दर पे, जरूर मिलता है॥

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना (सखी छन्द)

जय उपसर्गों पर पाए, वे पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वानन् को आए॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय

जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व.स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा-भाव सहित हम दे रहे, चरणों में जल धार।
शांति पाने को विशद, जिन पद बारंबार॥

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा-संयम पाया आपने, पाने पद निर्वाण।
पुष्पांजलि करते चरण, दो शिव पद का दान॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ॥2॥

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार॥3॥

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण तिथि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग॥

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं॥1॥
जब गर्भागम प्रभुजी पाते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी॥2॥
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं॥3॥
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते हैं॥4॥
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है॥5॥
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं॥6॥
दोहा-यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।

आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बारा।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ॥

श्री महावीर पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान का, करते हैं शुभ ध्यान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

हम चढ़ा रहें हैं यहाँ नीर, जन्मादिक की अब मिटे पीरा।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥1॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महके चन्दन की बहु सुवास, संसार ताप का होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥2॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।
यह चढ़ा रहे अक्षत महान, हम अक्षय पद पायें प्रधान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥3॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।
यह पुष्प चढ़ाते यहाँ खास, अब काम रोग का हो विनाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥4॥
ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यहाँ आन, हो क्षुधा रोग की पूर्ण हान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥5॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
हम दीप से करते हैं प्रकाश, अब मोहमहातम होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥6॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
यह जला रहे हैं यहाँ धूप, अब नश जायें वसु कर्म भूप।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥7॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।
फल यहाँ चढ़ाते हैं जिनेश, पायें हम मुक्ती फल विशेष।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥8॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
हम चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो सुपद प्राप्त हमको अनर्घ्य।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान॥9॥

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- मोक्ष मार्ग पर जो बड़े, किये जगत कल्याण।
देते शांतिधार हम, पाने पुण्य निधान॥

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा- महिमा जिनकी है अगम, सद् गुण के भंडार।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने सौख्य अपार॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया॥3॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।

जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर॥

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभू जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं॥
पाए प्रभू जी गर्भ अन्तिम, माता त्रिशला जानिए।
जिन मात देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए॥1॥
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, नहवन मेरू पर किए।
शतु इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, वीर जिनवर पाए हैं॥2॥
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम “विशद” अपनाए हैं॥
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं॥3॥
फिर कर्म सारे नाश करके, मोक्ष पद पाए अहा!!
पावापुरी का पदम सरवर, मोक्ष स्थल शुभ रहा॥

दोहा- ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हें कर्म विनाश।

मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।

सम्यक् दर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) ॥

पंचबालयति पूजा

स्थापना

दोहा- वासुपूज्य श्री मल्लि जिन, नेमि पार्श्व महावीर।
आह्वानन् करते हृदय, आन बँधाएँ धीर॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंचबालयति-
तीर्थकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यमुना का जल भर लाए, त्रय रोग नशाने आए।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन से पूज रचाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
हम पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, अब काम रोग विनशाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घृत के शुभ दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ अर्घ्य से पूज रचाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम पंच बालयति ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने को विशद।
पाएँ भवदधि पार, पूरी हो मम कामना॥

(शांतिमय शांतिधारा)

सोरठा-पुष्पांजलि प्रधान, करते हैं हम भाव से।
पाएँ शिव सोपान, यही भावना है विशद॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली (दोहा)

वासुपूज्य भगवान का, जपें निरन्तर नाम।

पूरी होवे कामना, करके चरण प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम धारण कर किए, कर्म मल्ल का नाश।

मल्लिनाथ पद पूजकर, पूरी होवे आश॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्वाक्रन्दन देखकर, धारण किए विराग।

नेमिनाथ के पद युगल, अतः रहा अनुराग॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय किए उपसर्ग जिन, पाए केवल ज्ञान।

पार्श्वनाथ पद पूज कर, पाएँ पद निर्वाण॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन नायक जो रहे, महावीर जिनराज।

जिनकी अर्चा हम करें, सफल होंय सब काज॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-पंचबालयति ने विशद, जग को किया निहाल।

भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हम जयमाल॥

(ताटक-छन्द)

वासुपूज्य माँ जयावती के, सुत हैं वासुपूज्य भगवान।

महाशुक्र से चयकर आये, लाख बहत्तर आयुष्मान॥

चम्पापुर नगरी है पावन, वंश इक्ष्वाकु रहा महान।
 लाल रंग ऊँचाई तन की, सप्त धनुष भैंसा पहिचान॥
 कुम्भराज माँ प्रभावती सुत, मल्लिनाथ जिनवर तीर्थेश।
 अपराजित से चयकर आए, मिथलापुर में जन्म विशेष॥
 पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, कलश चिन्ह तन स्वर्ण समान।
 समुद्र विजय माँ शिवा देवि के, सुत हैं नेमि नाथ भगवान॥
 आयू सहस वर्ष ऊँचाई, चालिस हाथ शंख पहिचान।
 सौरीपुर नगरी में जन्मे, यदुवंशी रंग श्याम प्रधान॥
 गिरि गिरिनार से मुक्ती पाए, किए जगत् जन का कल्याण।
 विश्वसेन वामा माँ के सुत, पार्श्वनाथ जी हुए महान॥
 अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, काशी नगरी जन्म स्थान ।
 हरित वर्ण सौ वर्ष की आयू, ऊँचाई नौ हाथ महान॥
 लक्षण नाग सम्मेद शिखर से, पाए प्रभू मोक्ष कल्याण।
 नृप सिद्धार्थ मात त्रिशला के, सुत हैं महावीर भगवान॥
 कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, सप्त हाथ ऊँचाई मान।
 आयू वर्ष बहत्तर पाए, तन पाए स्वर्णाभावान॥
 नाथ वंश पावापुर से प्रभु, प्राप्त किए हैं पद निर्वाण।

दोहा- पंच बालयति जिन सभी, पाए पंच कल्याण।
 करते हम जिन अर्चना, पाने पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य अर्घ्य निर्वस्वाहा।

दोहा- पंच बालयति पाए हैं, पंच कल्याण प्रधान।
 पंचम गति पाने करें, हम पंचांग प्रणाम॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

णमोकार पूजा

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है॥
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम जिसका अर्चना
विशद हृदय में आह्वान कर, करते हैं शत् शत् वन्दन॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंचनमस्कार मंत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(वेसरी छन्द)

क्षीर सिन्धु का जलभर लाए, जन्मादिक रुज हरने आए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥1॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु
विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन चन्दन यह घिस लाए, भवाताप को हरने आए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥2॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय भवाताप
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल सम लाए, अक्षय पद पाने को आए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥3॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद
प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित लाए स्वामी, जो हैं काम रोग हर नामी।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥४॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण
विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य बनाए, क्षुधा रोग हरने को आए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥५॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाए, मोह महातम हरने आए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥६॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म मेरे नश जाएँ।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥७॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म
दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरियल यह बादाम सुपारी, चढ़ा रहे फल शिव फलकारी।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥८॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोक्षफल
प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने को लाए।
महामन्त्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥९॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्यपद
प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांतीधारा दे रहे, नाथ! आपके द्वारा।
यही भावना है विशद पाएँ, भव से पार॥

॥ शांतिमय शांतिधारा ॥

दोहा-पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने सत श्रद्धाना।
पूरी हो मम कामना, मिले सुपद निर्वाण॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

पंचपरमेष्ठी की अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय छन्द)

ॐ णमो अरहंताणं कह, अरहंतों को करें नमन।
समवशरण में प्रभु को ध्यायेँ, करें भाव से जिन अर्चना॥1॥

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं पद प्राप्त श्री अर्हन्त परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ॐ णमो सिद्धाणं कहकर, सिद्धों के पद में वन्दन।
सिद्ध शिला पर ध्यायेँ प्रभु को, करें भाव से जिन अर्चना॥2॥

ॐ हीं णमो सिद्धाणं पद प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ॐ णमो आयरियाणं कह, आचार्यों को करें नमन।
पञ्चाचार के धारी जिन पद, करें भाव से शुभ अर्चना॥3॥

ॐ हूं णमो आयरियाणं पद प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ णमो उवज्झायाणं, उपाध्याय पद कर वन्दन।
जिन पद सम्यक् ज्ञान जगाएँ, करें भाव से शुभ अर्चना॥4॥

ॐ हौं णमो उवज्झायाणं पद प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, कहकर करें साधु का ध्यान।
मुक्ती पथ के रहे प्रणेता, जिनका करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ हः णमो लोए सव्व साहूणं पद प्राप्त श्री साधू परमेष्ठिभ्यो
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।

महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाला॥

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायेँ, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायेँ, फिर सादर शीश झुकाएँ॥
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैतिस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ॥1॥
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते॥
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते॥2॥
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते॥
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधू ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते॥3॥
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते॥

कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते॥४॥
हम यही भावना भाएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें॥
अनुक्रम से मुक्ती पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें॥५॥

दोहा- महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सप्त व्यसन

जुआ खेलना मांस मद्य, वेश्या व्यसन शिकार।
चोरी पर रमणी रमण, सातों व्यसन निवार॥

1. जुआ खेलना
2. मांस खाना
3. शराब पीना
4. वेश्या सेवन करना
5. शिकार करना
6. चोरी करना
7. परस्त्री सेवन। ये सात व्यसन हैं।

अष्टमी पर्व पूजा

स्थापना

अष्ट कर्म को नाश करें जिन, प्राप्त करें गुण आठ महान।
जिनकी अर्चा करके अतिशय, जग जीवों का हो कल्याण॥
सकल निकल परमात्म जग में, जिन की पूजा जगत प्रधान।
अतः अष्ट दल हृदय कमल में, करते भाव सहित आह्वान।
ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह! अत्र अवतर
अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम
सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

आये नहीं थे काँधों पे हम, ना काँधों पर जाएँगे।
रत्नत्रय निधि पाकर के अब, शिव पद राह बनाएँगे॥टेक॥

(ज्ञानोदय छन्द)

प्रासुक करके निर्मल जल से, जिन पद पूज रचाएँगे।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, हम त्रय रोग नशाएँगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएँगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएँगे॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जलं निर्व.स्वाहा।
केशर में मलयागिर चन्दन, नीर के साथ घिसाएँगे।
भव संताप नाश करने को, श्री जिन चरण चढ़ाएँगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएँगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएँगे॥2॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो चंदनं निर्व.स्वाहा।

बासमती के अक्षय अक्षत, जल से विशद धुलाएंगे।
जिनवर के चरणों की अर्चा, कर अक्षय पद पाएंगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥3॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षतं निर्व.स्वाहा।
भाँति-भाँति के पुष्प मनोहर, सुरभित थाल भराएंगे।
मदन पराजय करने को हम, श्री जिन महिमा गाएंगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥4॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पुष्पं निर्व.स्वाहा।
सरस शुद्ध घृत मेवा के शुभ, हम नैवेद्य बनाएंगे।
क्षुधा व्याधि के शमन हेतु शुभ, श्री जिन चरण चढ़ाएंगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥5॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
जगमग-जगमग रत्नमयी शुभ, घृत के दीप जलाएंगे।
काल अनादी मोह महातम, से अब मुक्ती पाएंगे॥
पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥6॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित धूप दशांगी लेकर, अग्नी बीच जलाएंगे।
अष्ट कर्म जो लगे पुराने, उनसे मुक्ती पाएंगे॥

पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।
अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥7॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो धूपं निर्व.स्वाहा।

ताजे फल रसदार मनोहर, भाँति-भाँति के लाएंगे।

जिन अर्चा कर भक्ति भाव से, मोक्ष महाफल पाएंगे॥

पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।

अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥8॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो फलं निर्व.स्वाहा।

जल फलादि शुभ अष्ट द्रव्य से, पावन अर्घ्य बनाएंगे।

पद अनर्घ्य पाने को पावन, श्री जिन चरण चढ़ाएंगे॥

पर्व अष्टमी की पूजा कर, अतिशय पुण्य जगाएंगे।

अष्टकर्म को नाश के हम भी, शिवपुर धाम बनाएंगे॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाराध्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा कर मिले, मन में शांति अपार।

शांती वह पाए विशद, दे जो शांतीधार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा-पर्व अष्टमी की यहाँ, पूजा की है आज।

अष्ट कर्म का नाश हो, सफल होंय सब काज॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- अष्ट कर्म को नाश कर, प्रगटाँ गुण आठ।

अर्चा कर व्रत अष्टमी, के हों ऊँचे ठाठ॥

(ताटंक छन्द)

काल अनादि अनन्त कहा है, रहे अनादी जीव अनन्त।
नहीं काल का अन्त है कोई, ना ही है जीवों का अंत॥1॥
किन्तू ज्ञानी जीव धर्म को, धारण कर कर्मों का नाश।
करके भ्रमण नशाएँ भव का, पाके केवल ज्ञान प्रकाश॥2॥
पुण्योदय से देव शास्त्र गुरु, के प्रति धारण कर श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञान आचरण करके, करें जीव निज का कल्याण॥3॥
सम्यक् तप से कर्म निर्जरा, करके होवें कर्म विनाश।
कर्म घातियाँ के नशते ही, होवे केवल ज्ञान प्रकाश॥4॥
आयु पूर्ण कर केवल ज्ञानी, कर्म अघाती करके नाश।
स्वाभाविक गुण आठ प्राप्त कर, सिद्ध शिला पर करते वास॥5॥
पर्व अष्टमी व्रत को प्राणी, अष्ट गुणों के धारी सिद्ध।
जिनकी अर्चा करते पावन, प्राप्त करें गुण आठ प्रसिद्ध॥6॥
हुए पूर्व में जो भी ज्ञानी, किए सिद्ध जिन का गुणगान।
अतः भाव से श्री जिनेन्द्र की, अर्चा कीजे महति महान॥7॥
दोहा- जिनवर की महिमा अगम, कैसे हो गुणगान।

भक्ती से फल प्राप्त हो, पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं अष्टमी पर्वाश्रय श्री अनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो
जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- श्री जिन की अर्चा विशद, भवदधि तारण हार।
अतः भाव से हम यहाँ, करते बारम्बार॥

(इत्याशीर्वादः)

चतुर्दशी पर्व की पूजा

स्थापना

चतुर्गती में भ्रमण जीव का, रहा अनादी काल अनंत।
मोह कर्म से मोहित होकर, कर न सके कर्म का अंत॥
रत्नत्रय के द्वारा चौदह, पार करें जो गुणस्थान।
नित्य निरंजन अविनाशी पद, प्राप्त करें वे जीव महान॥
दोहा- चतुर्दशी के दिन करें, श्री जिन का गुणगान।

गुणस्थान चौदह चढ़ें, पावें पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

आत्म ज्ञान वैभव के जल से, भव की तृषा बुझाएंगे।
जन्म जरा हर चिदानन्दमय, चिन्मय ज्योति जलाएंगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएंगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएंगे॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव के चन्दन, से भव ताप नशाएंगे।
भव बाधा हर चिदानन्द मय, आत्म ज्ञान प्रगटाएंगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएंगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएंगे॥2॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ज्ञान वैभव के अक्षत, से अक्षय पद पाएँगे।
भव समुद्र तिर चिदानन्दमय, अक्षय पद प्रगटाएँगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएँगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएँगे॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव के पुष्पों, से हम काम नशाएँगे।
शील शिरोमणि होके चिन्मय, चिदानन्द पद पाएँगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएँगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएँगे॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव के चरु से, क्षुधा से मुक्ती पाएँगे।
पूर्ण तृप्ति चेतन में पावें, गुण चेतन प्रगटाएँगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएँगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएँगे॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव दीपक ले, भेद ज्ञान प्रगटाएँगे।
मोह तिमिर हर चिदानन्दमय, ज्ञान की ज्योति जलाएँगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएँगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएँगे॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव की पावन, शुचिमय धूप जलाएँगे।
अष्ट कर्म हर चिदानन्दमय, चित् चेतन को पाएँगे॥

पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएंगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएंगे॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव के फल ले, मोक्ष महा पद पाएंगे।
रागद्वेष हर चिदानन्दमय, शाश्वत पद प्रगटाएंगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएंगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएंगे॥8॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आत्म ज्ञान वैभव का पावन, अर्घ्य अपूर्व बनाएंगे।
चिदानन्दमय विशद अर्घ्य दे, पद अनर्घ्य शुभ पायेंगे॥
पर्व चतुर्दशि को जिनपूजा, एवं संयम पाएंगे।
गुणस्थान चौदहवाँ चढ़के, मोक्ष महल को जाएंगे॥9॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा-उज्ज्वल जल से कर रहे, पावन शांतीधार।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़े, होकर के अविकार॥

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा- पुष्पांजलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
यही भावना है विशद, पाएँ हम शिवद्वार॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- पर्व चतुर्दशि की रही, महिमा अगम अपार।
अर्चा करके भाव से, पावें भवदधि पार॥

(चाल छन्द)

यह काल अनादि कहाए, इसमें जग जीव भ्रमाए।
पाके निगोद पर्याएँ, दुख जन्म मरण के पाएँ॥1॥
स्थावर स्थिर रहते, कई विकल जीव दुख सहते।
पशु नरक देव गति जाएँ, सौभाग्य से नरगति पाएँ॥2॥
जिन आप्तागम तप धारी, होते हैं करुणाकारी।
जिनके शुभ दर्शन पाते, मन में श्रद्धान जगाते॥3॥
जो सम्यक् ज्ञान जगाएँ, निज भेद ज्ञान प्रगटाएँ।
फिर सम्यक् चारित धारी, हों देशव्रती अनगारी॥4॥
जो पंच महाव्रत पाएँ, धर शील स्वयं को ध्याएँ।
होकर उत्तम तप धारी, नित करें निर्जरा भारी॥5॥
मुनि निज आत्म को ध्याते, कोई उपशम श्रेणी पाते।
उपशान्त मोही हो जाते, फिर नीचे उतर के आते॥6॥
जो क्षायक श्रेणी चढ़ते, वे आगे-आगे बढ़ते।
वे क्षीण मोही हो जाते, फिर घाती कर्म नशाते॥7॥
तब केवल ज्ञान जगाते, अर्हन्त अवस्था पाते।
निज आयु काल तक स्वामी, रहते हैं अन्तर्यामी॥8॥
जिनराज अयोगी ज्ञानी, चौदहवें-गुणस्थानी।
प्रभु होके कर्म विनाशी, हों सिद्ध शिला के वासी॥9॥

दोहा- गुणस्थान चौदह चढ़ें, पाएँ पद निर्वाण।

पर्व चतुर्दश को करें, अतः प्रभू गुणगान॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशी पर्वाराध्य श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिन पूजा कर भाव से, पाएँ पुण्य निधान।

अनुक्रम से वे पाएँगे, 'विशद' आप निर्वाण॥

(इत्याशीर्वादः)

सोलह कारण पूजा

स्थापना

दोहा- सोलह कारण भावना, भावें जीव महान।

तीर्थकर पद हेतु हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

जल की शुभ धार कराएँ, त्रय रोग नाश हो जाएँ।

हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्ण
ज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु-समाधि,
वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति,
आवश्यकपरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति
षोडशकारणेभ्योः नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति
स्वाहा।

जिन चरणों गंध चढ़ाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।

हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।

हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥3॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, भव रोग नाश हो जाए।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥4॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
 चरु से हम पूज रचाएँ, अब क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥5॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 अर्चा को दीप जलाए, मम मोह तिमिर नश जाए।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥6॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
 यह धूप जला हर्षाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥7॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
 फल यहाँ चढ़ाने लाए, फल मुक्ती पाने आए।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥8॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।
 यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पद दायी।
 हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी॥9॥
 ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 दोहा- शांती धारा दे रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।
 शीघ्र प्राप्त होवे मुझे, मेरा निज स्वरूप॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा-पुष्प चढ़ाते भाव से, पावन खुशबूदार।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने भव से पार॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

सोलह कारण के अर्घ्य

दर्शन विशुद्धि सुखदायी, शिवपद में कारण भाई।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर विनय भाव के धारी, होते जग मंगलकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥2॥

ॐ ह्रीं विनय भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, बनते हैं शिवपद भोगी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥3॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत शील अनतिचार धारें, वे संयम रत्न सम्हारे।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥4॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेश्वनतिचार भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग भाव जो पाते, भव से विरक्त हो जाते।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥5॥

ॐ ह्रीं संवेग भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो त्याग शक्तिसः करते, वे मुक्ति वधू को वरते
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥6॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्त्याग भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुतप शक्तिसः धारें, वे कर्म शत्रु को मारें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥7॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं साधु समाधि के धारी, जिन आतम ब्रह्म विहारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥8॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते जो वैय्यावृत्ती, उनकी है अलग प्रवृत्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते जो अर्हद् भक्ती, भव से पाते वह मुक्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आचार्य भक्ति सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥11॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बहुश्रुत भक्ती धर ज्ञानी, होते जग में कल्याणी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥12॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रवचन भक्ती के धारी, होते जिन धर्म प्रचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥13॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आवश्यक अपरिहारी, बनते हैं शिवमगचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥14॥
ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन मार्ग प्रभावक भाई, शिव नारि वरें सुखदायी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥15॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावक भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रवचन वत्सल जो पावें, वे केवलज्ञान जगावें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थकर पद पाते॥16॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सल भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- सोलह कारण भावना, भायें हम हे नाथः।
शिवपथ के राही बनें, चरण झुकाते माथः।
ॐ ह्रीं षोडशकारण भावनायैः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थकर पद का रहा, जो सोपान त्रिकाल।
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल॥

(चौपाई)

काल अनादि अनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया॥
जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादिक छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो॥
चतुर्गति में जीव भ्रमाते, कर्मोदय से सुख-दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो॥

उससे प्राणी मुक्ति पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
 प्राणी तीर्थकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते॥
 सोलह कारण इसको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
 दर्श विशुद्धि जो कहलावे, सम्यक् दृष्टि प्राणी पावे॥
 तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावे।
 विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो॥
 ज्ञानोपयोग अभीक्षण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
 शक्तितः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया॥
 साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैयावृत्य भावना मानी।
 अर्हद् भक्ति श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई॥
 आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
 काल अनादि से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी॥
 हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
 विशद भावना हम ये भावें, फिर तीर्थकर पदवीं पावें॥
 अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
 मुक्ती पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें॥

दोहा-सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।

भाव सहित हम वन्दना, करते विशद त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा-शाश्वत पद के हेतु हम, शाश्वत सोलह भाव।

भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा

स्थापना

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, बावन श्री जिन धाम।

उनके श्री जिनबिम्ब का, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह।
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

चौपाई

निर्मल नीर चढ़ाने लाए, जन्मादिक रुज हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, भव रोगों से मुक्ती पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चरण चढ़ा हर्षाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग को हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदायी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन घृत का दीप जलाते, मोह नाश को यहाँ चढ़ाते।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाए, कर्म आठ हम हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह चढ़ा रहे मनहारी, पावन मोक्ष महाफलकारी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबन्धित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते यह शुभकारी, विशद प्राप्त हो पद अविकारी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाएँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो
अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- शांतीधारा कर सभी, पाएँ शांति अपार।
यही भावना है विशद, मिले मोक्ष का द्वार॥

॥ शान्तये-शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
अतः भाव से आज हम, करते जिन गुणगान॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

नन्दीश्वर पूजन के 4 अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

नन्दीश्वर के पूर्व दिशा में, अंजनगिरि शुभ दधिमुख चार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अष्टम द्वीप के दक्षिण दिश में, अंजनगिरि हैं दधिमुख चार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व
जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, अंजनगिरि है दधिमुख चार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व
जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

नन्दीश्वर उत्तर अञ्जनगिरि दधिमुख चार रहे शुभकार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व
जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अष्टमद्वीप के चारों दिश में, तेरह-तेरह श्री जिनधाम।
उनमें जो जिनबिम्ब विराजित, जिनके चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् द्विपंचाशत् जिनालयस्थ सर्व
जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, हैं जिनधाम त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, आज यहाँ जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटी, लाख चौरासी आभावान्॥
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादी, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥1॥
चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार॥

दधिमुख के द्वय बाह्य कौण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥2॥
 योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
 दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार॥
 कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥3॥
 चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
 निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर॥
 एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥4॥
 एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
 स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर॥
 कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥5॥
 हैं प्रत्येक जिनालय में जिन, बिम्ब एक सौ आठ महान्।
 नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान्॥
 श्याम रंग में भाँह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥6॥
 कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
 दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन॥
 मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
 हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार॥7॥

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ
जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते 'विशद' प्रणाम॥

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

स्तुति (हे प्रभो चरणों में तेरे.....)

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये,
भावना अपनी का फल हम पा गये॥टेक॥
वीतरागी हो, तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
मुक्ति का मारग, तुम्हीं से पा गये,
हे प्रभु! चरणों में, तेरे आ गये॥1॥
विश्व सारा ही झलकता ज्ञान में,
किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये,
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥2॥
तुम बताये जगत् के सब आत्मा,
द्रव्य-दृष्टी से सदा परमात्मा।
आज निज परमात्मा, पद पा गये,
हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये॥3॥

पंचमेरु पूजा

स्थापना

दोहा- पञ्चमेरुओं में रहे, अस्सी श्री जिनधाम।

जिनकी अर्चा के लिए, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाते जल हम हे भगवान!, रोग जन्मादिक नशें प्रधान।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥1॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।
चढ़ाते चन्दन खुशबूदार, भ्रमण नश जाए अब संसार।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥2॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्व.स्वाहा।
चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ अक्षय पद महिमावान।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥3॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्व.स्वाहा।
चढ़ाने लाये हम यह फूल, काम हो जाए अब निर्मूल।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥4॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चढ़ाएँ हम नैवेद्य विशेष, क्षुधा रुज होवे नाश अशेष।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥5॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।
दीप यह जला रहे मनहार, मोह तम हो जाए अब क्षार।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥6॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्व.स्वाहा।
जलाते अग्नी में हम धूप, प्राप्त हो हमको सुपद अनूप।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥7॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्व.स्वाहा।
चढ़ाते फल ये महति महान, मोक्ष फल पाएँ हे भगवान!
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥8॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो फलं निर्व.स्वाहा।
चढ़ाते हम ये पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष॥9॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
सोरठा-देते जल की धार, शिव पद पाने के लिए।
पाएँ भव से पार, भ्रमण मिटे संसार का॥

॥ शान्तये-शान्तिधारा ॥

सोरठा-पुष्पाञ्जलि के साथ, श्री जिन की अर्चा करें।
चरण झुकाएँ माथ, विशद भाव से जिन चरण॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ॥

अर्घ्यावली

(दोहा)

जम्बूद्वीप में श्रेष्ठ है, मेरु सुदर्शन नाम।

सोलह जिनगृह बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे सुमेरुगिरि स्थित षोडश जिनालयस्थ सर्व

जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकीखण्ड में, विजय मेरु शुभकार।

सोलह जिनगृह बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातकी खण्डद्वीपे विजयमेरु स्थित षोडश जिनालयस्थ

सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकीखण्ड में, मेरु अचल महान्।

सोलह जिनगृह बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं अपर धातकी खण्डद्वीपे अचलमेरु स्थित षोडश जिनालयस्थ

सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब दिशा, मंदर मेरु महान्।

सोलह जिनगृह बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्धद्वीपे मन्दरमेरु स्थित षोडश जिनालयस्थ

सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम सुगिरि, विद्युन्माली जान।

सोलह जिनगृह बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्धद्वीपे विद्युन्मालीमेरु स्थित षोडश जिनालयस्थ

सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाईद्वीप में मेरु शुभ, पाँच हैं मंगलकार।
उनमें जो जिन धाम हैं, पूज रहे शुभकार॥6॥
ॐ ह्रीं ढाईद्वीपे पंचमेरु स्थित अशीति जिनालयस्थ सर्व
जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-ढाई द्वीप के मध्य हैं, मेरु पंच महान्।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान॥
(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु कहाया, भद्रशाल वन में बतलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।
योजन पञ्च शतक पे जानो, ऊपर नन्दन वन पहिचानो।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥1॥
साढ़े बासठ सहस्र बताया, ऊर्ध्व सौमनस वन कहलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥
योजन छत्तिस सहस्र ऊँचाई, पाण्डुक वन सोहे तँह भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥2॥
चारों मेरु समान बताए, भू पर भद्रशाल कहलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥
योजन पञ्च शतक पर जानो, नन्दन वन चारों दिश मानो।
चारों दिश चैत्यालय गाए, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥3॥
साढ़े पचपन सहस्र ऊँचाई, सौमनस वन की जानो भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥

सहस्र अट्ठाइस योजन गाये, पाण्डुक वन ऊँचे बतलाए।
 चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा को शुभ भाव बनाए॥4॥
 सुर नर विद्याधर मिल आवें, जिन वंदन करके सुख पावें।
 चैत्यालय अस्सी शुभ गाए, वन्दन करने को हम आए॥
 मेरु सुदर्शन की ऊँचाई, एक लाख योजन बतलाई।
 विजयादि चारों की भाई, लाख-चौरासी योजन गाई॥5॥
 एक महायोजन शुभ जानो, दो हजार कोश का मानो।
 इससे मेरु मापा जाए, बीस करोड़ कोश हो जाए॥
 दक्षिण पाण्डुक वन में भाई, पाण्डुक शिला बनी सुखदाई।
 रत्न कम्बला शिला बताई, उत्तर वन में सोहे भाई॥6॥
 रत्नशिला पूरब में जानो, रत्नमयी इसको पहिचानो।
 पाण्डु कम्बला है मनहारी, पश्चिम वन में मंगलकारी॥
 श्रेष्ठ इन्द्र उस वन में जाते, तीर्थकर का न्हवन कराते।
 यहाँ बैठकर भाव बनाते, जिनपद में हम शीश झुकाते॥7॥

दोहा-चैत्यालय अस्सी रहे, पञ्च मेरु के धाम।
 उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पञ्च मेरु हम पूजते, 'विशद' भाव के साथ।
 अर्घ्य चढ़ा अर्चा करें, झुका रहे हैं माथ॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

दशलक्षण पूजा

स्थापना

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम धारी।
तपस्त्याग आकिंचन धारें, ब्रह्मचर्य धर अनगारी॥
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक, धर्म लोक में रहा महान्।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, करते हैं हम भी आह्वान॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभू छन्द)

ध्यानमयी उत्तम जल लेकर, धारा तीन कराए हैं।
जन्मादिक का रोग नशाकर, निजगुण पाने आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग,
आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादर्श का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
भव संताप विनाश हेतु हम, आज यहाँ पर आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

शुद्ध भाव के अक्षय अक्षत, जल से धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.स्वाहा।

चिदानन्द मय पुष्प मनोहर, चुन-चुनकर के लाए हैं।
काल अनादी काम वासना, यहाँ नशाने आए हैं॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण के, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत करने को अपनी, यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥१५॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

निज स्वभाव का दीप बनाकर, ज्ञान की ज्योति जलाए हैं।
मोह अंध के नाश हेतु हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥१६॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
तप की अग्नि जलाकर, स्वाहा करने आए हैं॥१७॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

निज के गुण ही फल हैं अनुपम, वह प्रगटाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, ताजे फल यह लाए हैं॥१८॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.स्वाहा।

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं॥१९॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

10 धर्म के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

क्रोध कषाय को पूर्ण नशाते, उत्तम क्षमा धर्म प्रगटाते।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद की दम का करें सफाया, जिनने मार्दव धर्म उपाया।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वह आर्जव के धारी।
होते वह मुनिसुव्रत अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ नाश जिनका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं असंयम जिनको भाए, वह संयम धारी कहलाए।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्म धर गाए।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
किञ्चित् राग रहित अविकारी, उत्तम आकिञ्चन व्रत धारी।
मुनिसुव्रत पाते हैं अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतधारी, होते आतम ब्रह्मविहारी।
मुनिसुव्रत पाते हैं अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥10॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम क्षमा आदि जो पाए, वह निश्चय शिवपुर को जाए।
होते हैं मुनिसुव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥11॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दसलक्षण धर्मेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद धर्म के भाव से, कटे कर्म का जाल।

क्षमा आदि दश धर्म की, गाते हैं जयमाल॥

(बेसरी छन्द)

धर्म कहा दशलक्षण भाई, भवि जीवों को है सुखदाई।
मोक्ष मार्ग में नौका जानो, मुक्ती का शुभ कारण मानो॥

धारण करें धर्म जो कोई, कर्म नाश उसके भी होई।
 मोक्ष मार्ग का साधन जानो, जग जन का हितकारी मानो॥
 धर्म कहा है रक्षक भाई, धारण करो हृदय हर्षाई।
 कहा मान का नाशनकारी, पग-पग पर होता हितकारी॥
 मायाचारी को भी नाशे, आर्जव धर्म हृदय परकाशे।
 लोभ हृदय में न रह पावे, शौच धर्म उर में प्रगटावे॥
 मुख से सत्य वचन उच्चारें, सत्य धर्म जो उर में धारे।
 मन को वश में करते भाई, इन्द्रिय दमन करें हर्षाई॥
 बनते हैं संयम के धारी, हो जाते हैं जो अविकारी।
 मूलधर्म का सुतप बताया, मोक्ष मार्ग का कारण गाया॥
 करे निर्जरा तप से प्राणी, तीर्थकर की है ये वाणी।
 त्याग धर्म सब पाप नशावे, जो निज के गुण भी प्रगटावे॥
 धर्माकिंचन सम न कोई, परम ब्रह्म प्रगटावे सोई।
 ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, सारे जग में विस्मयकारी॥
 ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।
 सारे जग में रहा निराला, शिव पद में पहुँचाने वाला॥
 दोहा- विधि सहित जो व्रत करें, पूजन करें विधान।

सुख-शांति सौभाग्य पा, पावें पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम तप, त्याग,
 आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
 दोहा-दशलक्षण जिन धर्म का, रहे हृदय में वास।

सम्यक् दर्शन ज्ञान का, नित प्रति होय विकास॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

रत्नत्रय पूजा

स्थापना

दोहा-रत्नत्रय शुभ धर्म है, शिव पथ का सोपान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द मोतियादाम)

भराया कूप से हमने नीर, चढ़ाते पाने भव का तीर।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते केशर युक्त सुगंध, कर्म का आस्रव होवे बंद।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, प्राप्त हो अक्षय पद भगवान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाएँ पुष्प सुगन्धी वान, काम रुज की हो जाए हान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥4॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य विशेष, क्षुधा रुज होवे नाश अशेष।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप अग्निमय लिया प्रजाल, मोह का पूर्ण नशे जंजाल।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥6॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जलाते धूप से उठे सुवास, शीघ्र हों आठों कर्म विनाश।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥7॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते फल ये आभावान, मोक्षफल पाएँ महति महान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥8॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
विशद आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सोरठा- हो शांती का वास, जीवन में मेरे विशद।
होवे पूरी आश, नीर चढ़ाते भाव से॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

सोरठा-पाएँ शिव सोपान, पुष्पाञ्जलिं करते विशद।
करते हम गुणगान, रत्नत्रय शुभ धर्म का॥

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

रत्नत्रय के अर्घ्य

(दोहा)

देवशास्त्र गुरु में विशद, हो सम्यक् श्रद्धान।
पच्चिस दोषों से रहित, हो सदृश महान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हीनाधिकता से रहित, याथातथ्य विशेष।
सम्यक् ज्ञान कहाए यह, कहते वीर जिनेश॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाँचों पापों से रहित, पंच समीती वान।
तीन गुप्तियों युक्त है, सच्चारित्र महान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित रहा महान।
रत्नत्रय युतधर्म है, मुक्ती का सोपान॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय स्वरूप धर्माय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा॥

प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, है करना तत्त्वों में श्रद्धान्।
 निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्॥1॥
 श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
 कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता श्रद्धा बिन व्यर्थ॥
 गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
 सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार॥2॥
 ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।
 पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण॥
 सम्यक् श्रद्धापूर्वक सम्यक्, चारित में जो करते वास।
 वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का हास॥3॥
 निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
 निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान॥
 कर्मों का संवर हो जिससे, आस्रव का हो पूर्ण विनाश।
 गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश॥4॥
 रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
 अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त॥
 अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।
 कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास॥5॥

दोहा- तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
 रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल॥

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
 अनुक्रम से उनको मिला, 'विशद' मोक्ष का द्वार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्री अष्टाह्निका पर्व पूजन

स्थापना

दोहा-काल अनादि अनन्त है, अष्टाह्निक यह पर्व।
भाव सहित व्रत अर्चना, कर पाएँ सुख सर्व॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त श्री जिन सिद्ध कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

भराया गंगा का शुभ नीर, नाश हो जन्म जरा की पीर।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई हमने यह शुभ गंध, नाश हो भव आतप अरहंत।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुवाये अक्षत धवल जिनेश, प्राप्त हो अक्षय सुपद विशेष।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह चढ़ा रहे जिनराज, कामरुज नश पाएँ शिवराज।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु यह चढ़ा रहे हम आज, क्षुधा रुज नाश पाएँ शिवराज।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिया यह घृत का दीपप्रजाल, मोह का नाश होय अब जाल।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाए फल रसदार, प्राप्त हो मोक्ष महल का द्वार।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते विशद भाव से अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
पर्व अष्टाह्निक रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-नीर भराया कूप से, देते हैं जल धार।
भक्ति भाव से पूजते, पाने शिव का द्वार॥

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा-पुष्पांजलि करते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, हे त्रिभुवन के नाथ! ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

(चाल छन्द)

प्रभु अष्ट कर्म के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टकर्म रहिताय सिद्ध जिनाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नव लब्धी प्रभु प्रगटाते, वे शिवपुर धाम बनाते।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं क्षायक नव लब्धिप्राप्त श्री अर्हत सिद्ध जिनाय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहे धर्म दश धारी, शाश्वत होते अविकारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं दश धर्म प्राप्त श्री सिद्ध जिनाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश अंग कहाए, आगम का ज्ञान कराए।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं एकादशांग श्रुतिनिरूपक श्री अर्हत्सिद्ध जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु द्वादश तप को धारे, जो कर्म नशाए सारे।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाय श्री अर्हत् सिद्ध जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तेरह विध चारित धारी, संयम धर हों अनगारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध चारित्र धारकाय श्री अर्हत् सिद्ध जिनाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह प्रकार के प्राणी, जिन हैं उनके कल्याणी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश विध जीव रक्षक श्री अर्हत् सिद्ध जिनाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह प्रमाद बतलाए, जिनवर यह पूर्ण नशाए
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं पंचदश प्रमाद निवारकाय श्री अर्हत् सिद्ध जिनाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-तीनों लोकों में रहे, शाश्वत श्री जिनधाम।
जिन की अर्चा कर मिले, इस भव से विश्राम॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य चैत्यालय
सिद्धबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-नित्य निरंजन ज्ञानमय, त्राता आप त्रिकाल।

चिर निमग्न चैतन्य में, गाते हम जयमाल॥

॥ छन्द पद्धति ॥

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्यात्व मल्ल पर कर प्रहार।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व सुरवि कीन्हा प्रकाश॥1॥
तन चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान॥2॥
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार।
तप अनशन आदिक बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार॥3॥
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान।
एकाकी निर्भय निः सहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय॥4॥
कर्मों का संवर किये नाथ!, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबन्धी चउ कषाय, विसंयोजन का कीन्हा उपाय॥5॥
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार।
चारों कर्मों का कर विनाश, केवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश॥6॥
नव केवल लब्धी आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार।
कर सूक्ष्म प्रतिपाती सुध्यान, चारों अघातिया कर समान॥7॥
अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवल अयोग।
करके अघातिया कर्मनाश, शिवपुर में कीन्हे आप वास॥8॥
शाश्वत शुभ पर्व अठाई जान, सुदि आठें से पूनम प्रधान
जो कार्तिक फाल्गुन षाढ़ मास में, करे कोई व्रत या उपास॥9॥

सुर नंदीश्वर शुभ द्वीप जाँय, नर सिद्धों की पूजा रचाएँ।
जो विशद करें पूजा विधान, श्री जिन बिम्बों की शरण आन॥१०॥

(घत्ता छन्द)

हे लोक प्रकाशी शिवपुर वासी, अविनाशी पद में वंदन।
हे जिन संन्यासी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी अभिनन्दन॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम श्री जिनचैत्य
चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-तीन लोक चूड़ामणि, आप त्रिलोकी नाथ।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम माथ॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री नन्दीश्वर की आरती (तर्ज - इह विधि....)

श्री जिनवर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।
पर्व अठाई जब भी आएँ, नन्दीश्वर का पाठ रचाएँ॥
सुर नागेन्द्र सभी मिल जावें, श्री जिनवर की महिमा गावें।
लाख चौरासी ऊँचे जानो, अंजन गिरि पे जिनगृह मानो॥
दश सहस्र ऊँचे शुभकारी, दधिमुख पे जिनगृह मनहारी।
एक सहस्र उच्च कहलाए, रतिकर पे श्री जिनगृह गाए॥
मध्य में अंजनगिरि है भाई, अंजन सम जो श्याम बाई।
बाबड़ियों में दधिमुख गाए, दधि सम सुन्दर धवल कहाए।
बाबड़ियों के कोण में जानो, रतिकर गिरियाँ रति सम मानो।
जिनगृह श्री जिन पूज रचाएँ, 'विशद' भाव से महिमा गाएँ॥

त्रिलोक जिनालय पूजा

स्थापना

आठ कोटि छप्पन सुलाख अरु, सहस सत्तानवे अरु सौ चार।
इक्यासी जिनगृह में श्री जिन, की प्रतिमाएँ मंगलकार॥
भक्ति भाव से जिनकी पूजा, करके हम करते गुणगान।
तीन लोक के जिनगृह पावन, जिन का करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥1॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर की गंध बनाए, भवताप नशाने आए।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥2॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह श्वेत चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥3॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनसाएँ।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥4॥**

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**चरु यहाँ चढ़ाने लाए, मम् क्षुधा रोग नश जाए।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥5॥**

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है दीपक तिमिर विनाशी, जो सम्यक् ज्ञान प्रकाशी।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥6॥**

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम धूप जलाने लाए, वसु कर्म नशाने आए।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥7॥**

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल चढ़ा रहे यह भाई, जो हैं शुभ मोक्ष प्रदायी।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥8॥**

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, गुण आठ 'विशद' प्रगटाएँ।
त्रैलोक्य जिनालय भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥१॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः
शतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनगृह जिनवर के चरण, वन्दन बारम्बार।
शांतीधारा दे रहे, करें आत्म उद्धार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा-मिथ्यातम का नाशकर, पाएँ ज्ञान प्रकाश।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', पाने शिवपुर वास॥

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ॥

अर्घ्यावली

अधोलोक स्थित जिनालय का अर्घ

सप्तकोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
आठ सौ तैंतीस कोटि छियत्तर, लाख रहे जिनबिम्ब महान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर॥१॥

ॐ ह्रीं अधोलोके सप्त कोटि द्वासप्तति लक्ष जिनालयस्थ अष्ट शत
त्रयत्रिंशत कोटि षट्सप्ततिलक्ष जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक स्थित जिनालय का अर्घ

चार सौ अट्ठावन हैं जिनगृह, मध्यलोक में अपरम्पार।
जिन प्रतिमाएँ सात सौ छत्तिस, कम हैं पंचाशत हज्जार॥

कृत्रिम जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भी हम पूजें भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर॥2॥

ॐ ह्रीं मध्यलोके अष्ट पंचाशदधिक चउशत जिनालयस्थ चतु षष्ठी
अधिक नवशत चतु सहस्र जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व लोक स्थित जिनालय का अर्घ

लाख चुरासी सहस सत्यानवे, और तेईस जिनगृह शुभकार।
कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस्र अठत्तर अरु सौ चार॥
अधिक चुरासी जिन प्रतिमाएँ, पूज रहे हो भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोके त्रयोविंशति अधिक सप्त नवति सहस्र चतुरशीति
लक्ष जिनालयस्थ एक नवति कोटि षट् सप्ततिलक्ष अष्ट सप्तति
सहस्र चउशत चतुरशीति जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक स्थित सर्व जिनालय एवं जिनबिम्ब

आठ कोटि अरु लाख सु छप्पन, सहस्र सत्यानवे अरु सौ चार।
इक्यासी हैं जिनगृह पावन, तीन लोक में मंगलकार॥
नौ सौ पच्चिस कोटि सु त्रेपन, लाख और सत्ताइस हजार।
नौ सौ अड़तालिस प्रतिमाएँ, पूज रहे हम मंगलकार॥4॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक मध्ये अष्ट कोटि षट् पंचाशत लक्ष सप्त नवति
चउ शत एकाशीति जिनालयस्थ नव शत पंचविंशति कोटि त्रि
पंचाशत लक्ष सप्त विंशति सहस्र नव शत अष्ट चत्वारिंशत
जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में जिनालय, अरु जिन बिम्ब महान।

जिनका करते भाव से, पावन हम जयगान॥

(शम्भू छन्द)

कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में मंगलकार।
जिनकी अर्चा पूजा करते, प्राणी नत हो बारम्बार॥
भवनवासि देवों के चित्रा, भू के नीचे भवन महान।
दश प्रकार के देव कहे जो, जिनगृह जिनमें आभावान॥१॥
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम ।
शाश्वत अकृत्रिम गाए जो, जिन को बारम्बार प्रणाम ॥
रत्नमयी जिन प्रतिमाओं की, अर्चा करते हैं सब देव।
भक्ति भाव से अर्चा करके, पुण्यार्जन जो करें सदैव॥२॥
मध्य लोक तरु शाखा पर्वत, आदिक में श्री जिन के धाम।
चार सौ अट्ठावन है पावन, जिनको बारम्बार प्रणाम॥
ढाई द्वीप के अन्दर ऋषि मुनि, विद्याधर भी करें विहार।
देव भक्ति से आकर करते, जिन पद वन्दन बारम्बार॥३॥
ऊर्ध्व लोक में लाख चुरासी, सहस सत्यानवे तेइस विमान।
जिनमें जिनगृह जिनबिम्बों युत, शोभित होते आभावान॥

व्यन्तर देवों के गृह शाश्वत, बतलाए हैं संख्यातीत।
 जिनकी अर्चा देव करें सब, करके अपना चित्त पुनीत॥४॥
 ज्योतिष देवों के विमान शुभ, मध्य लोक में अधर रहे।
 संख्यातीत जिनालय जिनमें, तीन लोक में पूज्य कहे॥
 जो प्रत्यक्ष परोक्ष वन्दना, करते 'विशद' भाव के साथ।
 अतिशय पुण्य सुनिधि पाकर वे, बनते मोक्ष सुनिधि के नाथ॥५॥

दोहा-शाश्वत जिनगृह बिम्ब जिन, पूज रहे हम नाथ!
 भक्ति भाव से तुम चरण, झुका रहे हैं माथ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिअष्टकोटिषट्पंचाशत्लक्ष
 सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः
 जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा-तीन लोक में पूज्य हैं, श्री जिनवर जिनधाम।
 करते हैं हम भाव से, जिनको 'विशद' प्रणाम॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

ज्ञान ज्योति जयवंत हो

जयत्यशंष तत्त्वार्थ-प्रकाशि प्रथित श्रियः।
 मोह ध्वान्तौ घनिर्भेदि, ज्ञानज्योति जिनेशिनः॥

श्री निर्वाण क्षेत्र पूजन

स्थापना

तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिन की अर्चा के लिए, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद, चंपापुर, गिरनार, पावापुर, सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

प्रभु निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से गंध बनाएँ, भव का संताप नशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ॥
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम रोग नश जाए।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखदायी हम चढ़ा रहे हैं भाई॥
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप जलाते भाई, जो है पावन शिवदायी।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, शाश्वत शिव पदवी पाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेशिखरादि निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने
अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ! आपकी अर्चना, करते हैं शुभकार।
शांती पाने के लिए, देते शांती धार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने शिवपुर वास।
अर्चा करते भाव से होवे पूरी आस॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ॥

अर्घ्यावली

अष्टापद तीर्थ कहाए, आदीश्वर मुक्ती पाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य मुक्ति प्राप्त अष्टापद तीर्थस्य अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हम चम्पापुर को ध्याएँ, वासुपूज्य मोक्ष पद पाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य मुक्तिप्राप्त चम्पापुर तीर्थस्य अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गिरनार सुतीर्थ कहाए, श्री नेमिनाथ शिव पाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य मुक्ति प्राप्त गिरनार तीर्थस्य अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पावापुर सरवर आए, महावीर मोक्ष पद पाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य मुक्ति प्राप्त पावापुर तीर्थस्य अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

हम तीर्थराज को ध्याएँ, शिव बीस जिनेश्वर पाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री विंशति जिन मुक्ति प्राप्त शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर
तीर्थस्य अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जिस भू से ऋषि शिव पाए, वह सिद्ध क्षेत्र कहलाए।
हम जिन पद अर्घ्य चढ़ाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रस्य मुक्ति प्राप्त निर्वाण
क्षेत्रेभ्यो अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ट॥

(तर्ज- दरस विशुद्ध भावना)

श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥ टेक॥
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥1॥

यह तीरथ है अतिशयवान्, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण॥
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥2॥
आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीश झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥3॥
वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आय, भक्ती करके हर्ष मनाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥4॥
चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥5॥
ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥6॥
पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥7॥

महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारम्बार।
 महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥
 बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार॥८॥
 अंतिम 'विशद' भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय।
 महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥९॥
 दोहा- पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
 अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद, चंपापुर, गिरनार, पावापुर, सम्मेदशिखरादि निर्वाण
 क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
 तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाएँ ज्ञान प्रकाशं॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

भव विटपि समूलोन्मूलने-मत्तदंती, जडिमतिभि-रनाशे पद्मनी प्राण नाथः॥
 नयन परमेतद्-विश्व विश्वप्रकाशे, करण हरिण बंधे वागुराजात मेतत्॥

अर्थ :- शास्त्राभ्यास भव वन को नष्ट करने हेतु हाथी है। जड़ता रूप
 तिमिर नाश करने को सूर्य संसार को प्रकाशित करने के लिए दूसरा नेत्र
 तथा इन्द्रिय रूप हिरणों को बन्धन हेतु जाल है

सम्मोदशिखर कूट पूजन

स्थापना

नन्दन वन सी छटा निराली, हरियाली है चारों ओर।
खग मृग की किलकारी करती, मन मधुकर को भाव विभोर॥
कण-कण पावन है भूधर का, क्षण-क्षण होते कर्म शमन।
तीर्थ राज सम्मोद शिखर का, करते हैं हम आह्वानन्॥
ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मोदशिखर सिद्धक्षेत्रे अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिन्!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

॥ ज्ञानोदय छन्द॥

ठण्डा गर्म नीर हो कैसा, आग बुझाए यथा-तथा।
पावन तीर्थ क्षेत्र की यात्रा, जन्म मरण की हरे व्यथा॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मोद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मोद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः जन्म जरा
मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण किया चारों गतियों में, निन्दा की दुर्गन्ध मिली।
सिद्ध क्षेत्र का वन्दन करने, आतम की हर कली खिली॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मोद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मोद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः संसार ताप
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्रों जैसे जीवन बदले, अब हालात बदलना है।
करके सिद्ध क्षेत्र की यात्रा, मोक्ष मार्ग पर चलना है॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अक्षय पद
प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने हार मानकर, जिन चरणों टेका माथा।
हुए सिद्ध जो सिद्ध भूमि से, गाते हम उनकी गाथा॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः कामबाण
विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भड़के भूख भोग से जैसे, घी से आग भड़क जाए।
सिद्धों के चरणों में हमने, क्षुधा हरण को गुण गाए॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः क्षुधा रोग
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आंधी या तूफानों से, बुझ जाते दीपक अपने।
चेतन दीप जले जिन चरणों, पूर्ण होंय सारे सपने॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः मोहान्धकार
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आकुलता सुख दुख, भेद भाव दुख की दात्री।
कर्म धूल सब तजी आपने, पूजें धूप चढ़ा यात्री॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अष्टकर्म
दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाने का फल क्या होता, लोग समझ ना पाते हैं।
फल के त्यागी यही समझ के, शिव फल पर ललचाते हैं॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः मोक्षफल
प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य प्रभा श्री जिन सिद्धों की, कण-कण में भू पे बिखरे।
वैसे मूल्य अर्घ्य का क्या हो, फिर भी आत्म रूप निखरे॥
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अनर्घ पद
प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके बारंबार।
शांती पायें हम विशद, देते शांति धार॥

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा-कल्पतरु के पुष्प ले, पुष्पांजलि वर्षाय।
शाश्वत तीरथ राज को, वन्दन कर हर्षाय॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा-शाश्वत तीरथराज है, शिवपद का सोपान।
पुष्पांजलिं करते प्रथम, करने जिन गुणगान॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तीर्थकर चौबीस के, चौबिस गणी प्रधान।
अर्घ्य चढ़ा वन्दन करें, पाने शिव सोपान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरादि विभिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे उन पवित्र
स्थानों को एवं उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

कूट ज्ञानधर से गये, कुन्थुनाथ शिव लोक।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, देते हैं हम ढोक॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़ 32 लाख
96 हजार 742 मुनि ज्ञानधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल
में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पाए मित्रधर कूट से, नमि जिनवर शिवराज।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दन करते आज॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 1 अरब 45 लाख
7 हजार 942 मुनि मित्रधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल
में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनराज का, गाथा नाटक कूट।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जाएँ कर्म से छूट॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार
999 मुनि नाटक कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में
जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद पाए मल्लि जिन, संबल कूट महान।
अर्घ्य चढ़ा जिनका विशद, करते हम गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 करोड़ मुनि संबल कूट से
मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पाए संकुल कूट से, जिन श्रेयांस शिवधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़
96 लाख 9 हजार 542 मुनि संकुल कूट से मुक्त हुए उनके
चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत भगवान का, सुप्रभ कूट विशाल।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, वन्दन करें त्रिकाल॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 99 लाख 7 हजार
480 मुनि सुप्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में
जलादि अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

पद्म प्रभु भगवान का, मोहन कूट विशेष।
अर्चा करते भाव से, पाने निज स्वदेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार
790 मुनि मोहन कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में
जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**निर्जर कूट से पाए शिव, मुनिसुव्रत भगवान।
जिन अर्चा कर जीव कई, किए आत्म कल्याण॥9॥**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ि 99 करोड़
99 लाख 999 मुनि निर्जर कूट से मुक्त हुए उनके चरण
कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**ललित कूट से शिव गये, चन्द्र प्रभु तीर्थेश।
अर्चा करते जिन चरण, देकर अर्घ्य विशेष॥10॥**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख
84 हजार 555 मुनि ललित कूट से मुक्त हुए उनके चरण
कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**शिव पाए कैलाश गिरि, से श्री आदि जिनेश।
जिन चरणों की अर्चना, करते भक्त विशेष॥11॥**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से
मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युतवर है कूट।
अर्चा करते जिन चरण, श्रद्धा धार अटूट॥12॥**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18 कोड़ाकोड़ि 42 करोड़
32 लाख 42 हजार 905 मुनि विद्युत कूट से मुक्त हुए
उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**कूट स्वयंभू से हुए, जिनानन्त शिवकार।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, बन्दू बारम्बार॥13॥**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़
70 लाख 70 हजार 700 मुनि स्वयंभू कूट से मुक्त हुए
उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
**धवल कूट से शिव गये, जिनवर सम्भवनाथ।
अर्चा करते जिन चरण, ऊपर करके हाथ॥14॥**

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 12 लाख
42 हजार 500 मुनि धवल कूट से मुक्त हुए उनके चरण
कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**चम्पापुर से शिव गये, वासुपूज्य भगवान।
जिनपद करते भाव से, अर्घ्य चढ़ा गुणगान॥15॥**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि मंदारगिरि (चम्पापुर) से
1 हजार मुनि मुक्त हुए उनके चरण कमल में योग त्रय से
बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

**अभिनन्दन जिनराज का, कूट रहा आनन्द।
जिनकी अर्चा कर विशद, आश्रव होवे मंद॥16॥**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़
70 लाख 42 हजार 700 मुनि आनंद कूट से मुक्त हुए
उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये श्री धर्म जिन, कूट सुदत्त महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, भव्यों को निर्वाण॥17॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ाकोड़ि 19 करोड़
9 लाख 9 हजार 765 मुनि सुदत्तकूट से मुक्त हुए उनके
चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति नाथ जी शिव गये, अविचल कूट है नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़
72 लाख 81 हजार 700 मुनि अविचल कूट से मुक्त हुए
उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

कूट कुन्दप्रभ शांति जिन, का है जगत प्रसिद्ध।
ऋषियों के पद पूजते, हुए अभी तक सिद्ध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 9 लाख
9 हजार 999 मुनि कुन्द प्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण
कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर सर मध्य से, हुए वीर जिन सिद्ध।
पूज रहे जिन पाद हम, जो हैं जगत प्रसिद्ध॥20॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम् सरोवर से
26 मुनि सहित मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपाश्वर्ष जिन शिव गये, कूट प्रभास सुनाम।
मुक्त हुए जो अन्य ऋषि, तिन पद विशद प्रणाम॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सुपाश्वर्षनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़
72 लाख 7 हजार 742 मुनि प्रभास कूट से मुक्त हुए उनके
चरण कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ती पाए विमल जिन, कूट कहाए सुवीर।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने भव का तीर॥22॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ि 60 लाख
6 हजार 742 मुनि सुवीर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल
में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सिद्धवर कूट से, पाए अजित जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, श्री जिन चरण विशेष॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख
मुनि सिद्धवर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए गिरिनार से, नेमिनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करके चरण प्रणाम॥24॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि
72 करोड़ 700 मुनि गिरिनार पर्वत से मुक्त हुए उनके चरण
कमल में जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र शुभ कूट से, पाए जो शिवधाम।
पार्श्वनाथ जिन के चरण, बारम्बार प्रणाम॥25॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार
742 मुनि स्वर्णभद्र कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में
जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा शाश्वत तीर्थ की, करते बारम्बार।
पुष्पांजलि करते तथा, देते शांतीधार॥

॥ शांतये शांतिधारा ॥ ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जाप-ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः।

जयमाला

दोहा- शाश्वत तीर्थ राज है, गिरि सम्मेद महान।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण॥

छन्द-तामरस

जय जय तीर्थ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त ऋषीश नमस्ते॥1॥
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते॥2॥
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते॥3॥

ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
 विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते॥४॥
 धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
 आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते॥५॥
 अविचल कूट मुनीश नमस्ते, कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।
 पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते॥६॥
 पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते।
 गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते॥७॥

दोहा- महिमा तीर्थ सम्पेद गिरि, की है अपरम्पार।
 “विशद” भाव से पूजते, नत हो बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्पेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अनर्घ पद
 प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
 मोक्षमार्ग पर जो बढें, पावें शिव सोपान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

प्रायोमूर्खस्य कोपाय सन्मार्गस्योप देशनम्।
 निर्मूलननासिकस्यैव विशुद्धादर्श दर्शनम्॥

श्री बाहुबली पूजन

स्थापना

दोहा- तीर्थकर के पुत्र हैं, बाहुबली है नाम।
हृदय कमल में आपका, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(बेसरी छन्द)

नीर भराकर हम ये लाए, जन्म-जरा मैटन को आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन गंध बनाकर लाए, भव सन्ताप नशाने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल धुवाकर लाए, अक्षय पद पाने को आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प मनोहर चुनकर लाए, काम रोग हरने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा रोग नाशी जो गाए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन घृत का दीप जलाए, मोह महातम हरने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते हम ये भाई, अष्ट कर्म नाशी शिवदायी।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये सरस चढ़ाने लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विशद भाव से हम यहाँ, चढ़ा रहे शुभ नीर।
अष्ट कर्म को नाशकर, पाना है भवतीर॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि लेकर यहाँ, करते प्रभु गुणगान।
विशद भावना है यही, पाएँ शिव सोपान॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

सुर-असुर-खगाधिप योगीश्वर, मुनि जिन की महिमा गाते हैं।
हे बाहुबली! तव चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥
तुम मात सुनंदा से जन्मे, प्रभु आदिनाथ के पुत्र कहे।
प्रभु कामदेव थे प्रथम श्रेष्ठ, शुभ चक्रवर्ती के भ्रात रहे॥1॥
सवा पाँच सौ धनुष देह शुभ, हरित वर्ण से शोभामान।
नील कुलाचल सम स्थिर प्रभु, नील गिरि सम आभावान॥
पोदनपुर के राजा का पद, बाहुबली को दिए जिनेश।
नगर अयोध्या का स्वामी पद, भरतेश्वर को दिया विशेष॥2॥
चक्र रत्न पाये भरतेश्वर, पुण्योदय से अपरंपार।
षट् खंडों पर विजयीश्री में, वर्ष बिताए साठ हजार॥
बाहुबली ने हार न मानी, युद्ध हुए तब उनसे तीन।
दृष्टि मल्ल जल युद्ध का निर्णय, कीन्हें मंत्री ज्ञान प्रवीण॥3॥
दृष्टि युद्ध अरु नीर युद्ध में, चक्रवर्ती ने मानी हार।
मल्ल युद्ध करने फिर दोनों, उसी समय हो गये तैय्यार॥
बाहुबली ने भरतेश्वर को, अधर उठाया अपने हाथ।
शक्तिहीन हुआ भरतेश्वर, जो था छह खण्डों का नाथ॥4॥
चक्रवर्ती ने चक्र चलाया, विफल हुआ उसका भी वार।
बाहुबली ने सोचा तब ही, है अनित्य सारा संसार॥

राज्य सौंपकर भरतेश्वर को, अष्टापद पर गये कुमार।
 महाव्रतों को धारण करके, ध्यान किया होकर अविकार॥5॥
 खड़ा हुआ मैं जिस धरती पर, भरत का है उस पर अधिकार।
 यह विकल्प आता था मन में, बाहुबली को बारंबार॥
 वामी बनी चरण में अतिशय, तन पर बेलें चढ़ी महान्।
 क्रूर जंतुओं ने अंगों पर, बना लिया अपना स्थान॥6॥
 सिर के केश बढ़े थे भारी, उनमें पक्षी बसे अपार।
 कानों में भी बना घोंसला, पक्षी करते थे किलकार।
 धन्य-धन्य इस अचल ध्यान का, धन्य हुए मुनिवर अविकार।
 वीतराग गुरुओं की महिमा, कही गई है अपरम्पार॥7॥
 कर्म नाशकर आदि प्रभु से, पहले कीन्हें मोक्ष प्रयाण।
 सिद्धशिला पर बना लिए प्रभु, अपना स्थाई स्थान॥
 यही भावना रही हमारी, चरणों रहे हमारा ध्यान।
 संयम को पाकर के हम भी, इस भव से पावें निर्वाण॥8॥
 दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, बाहुबली है नाम।

परम तपस्वी आपके, चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बाहुबली भगवान की, महिमा अपरम्पार।

अर्चा कर मिले, जग में सौख्य अपार॥

॥इत्याशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

तीस चौबीसी पूजन

स्थापना

दोहा-भरतैरावत क्षेत्र के, त्रैकालिक तीर्थेश।
आह्वानन् करते विशद, जिनका यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

॥ चाल छन्द ॥

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, अपने त्रय रोग नशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥1॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥2॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, हम यहाँ चढ़ाते भाई।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥3॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम रोग विनशाएँ, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥4॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥5॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥6॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥7॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरण चढ़ा हर्षाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥8॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥9॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांति धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा-जीवन महके पुष्प सा, पुष्पांजलि कर नाथ॥
अतः करें पुष्पांजलिं, चरण झुका कर माथ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- भरतैरावत क्षेत्र में, जो तीर्थेश त्रिकाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

॥ चाल टप्पा ॥

कर्म घातिया के नाशी जिन, तीर्थकर भाई।
केवल ज्ञानी पूज्य लोक में, होते अतिशायी-
जिनेश्वर पूज्य रहे भाई...॥1॥

ढाई द्वीप में भरत क्षेत्र शुभ, पाँच रहे भाई।
छियालिस मूलगुणों के धारी, की है प्रभुताई-जिने...॥२॥
पंचैरावत में भी जिनवर, चौबिस हों भाई!।
जिन शास्त्रों में जिनकी महिमा, पावन बतलाई-जिने...॥3॥
दिव्य देशना तीर्थकर की, खिरती जो भाई!।
हर्ष भाव से रत्नत्रय निधि, जीवों ने पाई-जिने...॥4॥
दर्शन करके नाथ! आपके, निज की सुधि आई।
'विशद' आपकी अर्चा करने, आए यहाँ भाई-जिने...॥5॥

दोहा- पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ।
शिव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थकर जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- श्री जिन की महिमा अगम, पाएँ कैसे पार।
विशद भाव से जिन चरण, वन्दन बारम्बार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिन पूजन

स्थापना

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है॥
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरु, अरु शुक्र शनी राहू केतु।
आह्वानन् करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांती हेतू॥
ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः! अत्र
अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र
मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये गंध चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, पावन अक्षय पद पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से पूज रचाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूज रचाएँ, मुक्ती फल शिव पा जाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति
तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देके शांतीधार हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।
प्रकट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान॥

॥शांतये शांतिधारा॥

दोहा-पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते हैं हम आज।
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज॥

॥दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांती पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥१॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ग्रहारिष्ट जिन चन्द्र स्वामी, शांत किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥२॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥३॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बाधा विनशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्धु,
अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन,
सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ पद पूज रचाये, राहु अरिष्ट नहीं रह पाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाये, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्रेभ्यः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम
सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल॥

(चौबोलो छन्द)

जगत गुरु को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन॥
नभ में अधर जिनालय में जिन-बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन॥1॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से॥
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिनदेव।
शांति कुन्धु अर नमी सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव॥2॥
गुरु ग्रह की शांति हेतू हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज॥

शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
 शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते॥३॥
 राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
 केतू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें॥
 वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थकर हैं सुखकारी।
 आधि व्याधि ग्रह शांती कारक, सर्व जगत मंगलकारी॥४॥
 जन्म लग्न राशी के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
 बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते॥
 पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्रबाहु मुनिराज।
 नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज॥५॥
 दोहा-चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
 नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा-चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
 मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

॥इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

समोशरण पूजन

स्थापना

समवशरण के आगे अनुपम, मानस्तंभ रहे शुभकारी।
अष्टभूमियों के ऊपर शुभ, गंध कुटी पे जिन अविकारी॥
ॐकार मय दिव्य ध्वनि शुभ, द्वादश सभा में हो मनहारी।
हृदय कमल में तिष्ठो हे जिन! तव चरणों में ढोक हमारी॥
ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहिता
भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पद्धडि छंद)

शुभ प्रासुक निर्मल नीर लाय, जिनवर के चरणों में चढ़ाय।
हो जाय जरादिक रोग नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥1॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
केसर को चंदन में घिसाय, जिन अर्चा करके हर्ष पाय।
संसार ताप का हो विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥2॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत प्रभु के पद में चढ़ाय, अक्षय पदवी को जीव पाय।
पाए शिवपुर में वह निवास, जीवों की होवे पूर्ण आस॥3॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
थाली पुष्पों से जो भराय, जिनवर की शुभ पूजा रचाय।
हो काम रोग का पूर्ण नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥4॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस ताजे बनाय, अर्चा कर जिन पद सिर झुकाय।
हो क्षुधा रोग उनका विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥5॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गौधृत से शुभ दीपक जलाय, श्रीजिन की आरति श्रेष्ठ गाय।
हो मोह महातम पूर्ण नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥6॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में सुरभित धूप खेय, निज आत्म विशुद्धी रहा ध्येय।
उसके कर्मों का हो विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥7॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल से थाली पावन भराय, जिनकी महिमा जो श्रेष्ठ गाय।
वह मोक्ष महल में करे वास, जीवों की होवे पूर्ण आस॥8॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जो अर्घ्य विशद अतिशय बनाय, जिनवर के चरणों में चढ़ाय।
वह सिद्ध शिला पर करें वास, कर्मों का करके पूर्ण नाश॥9॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।

अतः भाव से आज हम, देते शांती-धार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि जो भी करें, करें कर्म का नाश।
रवि शशि से भी तीव्र वे, पावें ज्ञान प्रकाश॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली (चाल छन्द)

शुभ प्रथम चैत्य भू गाई, है चैत्य सहित सुखदायी।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥1॥

ॐ ह्रीं समवशरणे चैत्य भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूमि खातिका भाई, जल कमलों संयुत खाई।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥2॥

ॐ ह्रीं समवशरणे खातिका भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है लता भूमि मनहारी, शुभ पुष्प लता युत न्यारी।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥3॥

ॐ ह्रीं समवशरणे पुष्प लता भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन भूमी शुभ जानो, वन उपवन संयुत मानो।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥4॥

ॐ ह्रीं समवशरणे उपवन भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम ध्वज भू कहलाए, जिसमें कई ध्वज फहराएँ।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥5॥

ॐ ह्रीं समवशरणे ध्वज भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वृक्ष भूमि शुभकारी, में कल्पवृक्ष मनहारी।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥6॥

ॐ ह्रीं समवशरणे कल्पवृक्ष भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भवन भूमि कहलाए, भवनों में जिनगृह गाए।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥7॥

ॐ ह्रीं समवशरणे भवन भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है द्वादश जहाँ सभाएँ, श्री मण्डप भू में जाए।
है समवशरण शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥८॥

ॐ ह्रीं समवशरणे मण्डप भूमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

समवशरण तीर्थेश का, गाया महति महान्।

जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

कर्म मोहनीय के नशते ही, ज्ञानावरणी कर्म नशे।
नशे दर्शनावर्ण कर्म अरु, अन्तराय भी पूर्ण नशे॥
केवल दर्शन ज्ञान वीर्य सुख, अनन्त चतुष्टय पाये हैं।
सुर नर किन्नर पशु के स्वामी, चरणों शीश झुकाये हैं॥१॥
धन कुबेर इन्द्राज्ञा पाकर, समवशरण रचना करते।
शुभ भावों का फल पाते वह, कोष पुण्य से निज भरते॥
मानस्तम्भ शोभते चउ दिश, मान गलित जो करते हैं।
रागी द्वेषी मोही जन के, मन का कालुष हरते हैं॥२॥
प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि है, चैत्य बने हैं शुभकारी।
द्वितीय भूमी रही खातिका, निर्मल जल युत मनहारी॥
लता भूमि तृतीय कहलाई, श्रेष्ठ लताएँ रहीं महान।
उपवन भू है चौथी पावन, जिसका कौन करे गुणगान॥३॥

ध्वज भूमी पञ्चम कहलाई, ध्वज पावन फहराते हैं।
 कल्प वृक्ष भूमी छठवी में, तरु शुभ शोभा पाते हैं॥
 सुरगृह भू में सुरपुर वासी, क्रीड़ा करते भाव विभोर।
 श्री मण्डप भूमी में सुर नर, पशू बैठते चारों ओर॥4॥
 तीन-पीठयुत गंध कुटी के, ऊपर श्री जिन का स्थान।
 कमलासन पर अधर शोभते, समवशरण में जिन भगवान॥
 दिव्य देशना खिरती प्रभु की, चतुर्दिशा में हो दर्शन।
 भव्य जीव जिन चरण बैठकर, भाव सहित करते अर्चन॥5॥

दोहा- समोशरण है श्रेष्ठ यह, पूजा करें विधान।
 भाव सहित जो भी करें, वे पावें कल्याण॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा-समवशरण में शोभते, श्री जिनबिम्ब त्रिकाल।
 'विशद' भाव से गाई है, हमने शुभ जयमाल॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

अक्षरस्यापि चैकस्य, पदार्थस्य पदस्य च।
 दातारं विस्मरन् पापी, किं पुनर्धर्म देशिनम्॥

मानस्तंभ की पूजन

स्थापना

मानस्तंभ का दर्शन करके, प्राणी का गल जाए मान।
देव, शास्त्र, गुरु के प्रति उनके, हृदय में जागे सद्श्रद्धान्॥
चारों दिश जिन-बिम्ब शोभते, वीतराग मुद्रा पावन।
जिन बिम्बों का विशद भाव से, करते हैं हम आह्वानन्॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(अर्धशम्भू-छन्द)

कूप से नीर यह लाए, उसे प्रासुक कराते हैं।

जरादिक रोग नश जाए, भावना श्रेष्ठ भाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयगिर का लिया चंदन, नीर में जो घिसाते हैं।

भवाताप पूर्ण नश जाए, चरण में सिर झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत यहाँ लाए, नीर से जो धुवाते हैं।

सुपद अक्षय मिले हमको, भाव से भक्ति गाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

झड़े जो पुष्प वृक्षों से, थाल में वे भरते हैं।

कामरज नाश हो जाए, प्रभु भक्ती रचाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु ताजे बनाए हैं, थाल में जो सजाते हैं।
क्षुधारुज नाश करने को, प्रभु चरणों चढ़ाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप घृत का बनाया है, यहाँ पर जो जलाते हैं।
महातम मोह का नाशी, ज्ञान निज में जगाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप सुरभित बनाई यह, अग्नि में जो जलाते हैं।
कर्म आठों नशें मेरे, शीश चरणों झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
सरस ताजे लिए फल यह, चरण में जो चढ़ाते हैं।
महाफल मोक्ष हम पाएँ, भावना श्रेष्ठ भाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।
बनाया अर्घ्य यह पावन, विशद चरणों चढ़ाते हैं।
मिले शाश्वत सुपद हमको, परम जो सिद्ध पाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
भाते हैं ये भावना, शिवपथ हो अनुकूल॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

(चाल-छन्द)

प्रभु वीतरागता पाए, जिन प्रतिमा यह दर्शाए।
हम पूरव दिश की भाई, शुभ पूज रहे अतिशायी॥1॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ पूर्व दिक् जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं मानस्तंभ निराले, मिथ्यातम हरने वाले।
जिसकी हम जिन प्रतिमाएँ, दक्षिण की पूज रचाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ दक्षिणदिक् जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मानस्तंभ कहाए, मानी का मान गलाए।
जिसकी हम जिन प्रतिमाएँ, पश्चिम की पूज रचाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ पश्चिमदिक् जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन बिम्ब पूज्य कहलाए, जो शिव मारग दर्शाए।
हम उत्तर दिश की भाई, शुभ पूज रहे अतिशायी॥4॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ उत्तरदिक् जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-जिनगृह के आगे रहा, मानस्तंभ विशाल।

जिन की गाते भाव से, आज यहाँ जयमाला॥

(चौपाई)

जय-जय मानस्तंभ निराला, चउ दिश जो जिनबिम्बों वाला।
जो मानी का मान गलावे, सबको सम्यक् ज्ञान करावे॥2॥
प्रभु से बारह गुणा ऊँचाई, चहुँ दिश सुन्दर दिखती भाई।
योजन बीस प्रकाश कराए, बारह योजन से दिख जाए॥3॥

घंटा मानस्तंभ सु सोहे, चामर परम ध्वजा मन मोहे।
 स्वर्णिम जिनमें जिन प्रतिमाएँ, देव नित्य अभिषेक कराएँ॥4॥
 चारों ओर सरोवर सुन्दर, निर्मल जल से भरे जु मनहर।
 फिर तहाँ पुष्पवाटिका शुभकर, मानस्तंभ लगे बहु सुन्दर॥5॥
 मानस्तंभ की महिमा न्यारी, सुर नर करें जु शोभा भारी।
 मरकत मणिसम सुन्दरतायी, जिसका दर्शन शुभ फलदायी॥6॥
 चारों दिश श्री जिन प्रतिमाएँ, हम दर्शन से विघ्न नशाएँ।
 मानस्तंभ की करें जो पूजा, फिर नहि पावें भव वो दूजा॥7॥
 करे सु वंदन सब नर नारी, तुमने सब संशय है टारी।
 मानस्तंभ जगत सुखदाई, आरति कर हम पुण्य सुपाई॥8॥
 मानस्तंभ के दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
 हम भी 'विशद' ज्ञान प्रगटाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ॥9॥
 दोहा-मानस्तंभ की भावना, धरें जो मन में कोया
 मन के सब दुख दूर हों, चहुँ दिश शांती होय॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक मानस्तंभ स्थित जिन प्रतिमाभ्यः जयमाला
 पूर्णाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- जिनबिम्बों का दर्श कर, शांती मिले अपार।
 शिव पद पाने के लिए, वन्दन बारम्बार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

राज्यं च सम्पदो भोगाः, कुले जन्म सुरुपता।
 पाडित्य-मायु रारोग्यं, धर्मस्यै तत्फलं विदुः॥

जिन सहस्रनाम पूजा

स्थापना

सहस्रनाम जिनराज के, जग में रहे महान।
जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर
अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम्
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

यह नीर तपाकर लाए, त्रय रोग नशाने आए।
हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः जलं नि.स्वाहा।
चंदन से गंध बनाए, भव ताप नाश हो जाए।
हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्राय नमः
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्राय नमः
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, क्षय काम रोग हो जाए।
हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥4॥
ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः पुष्पं नि.स्वाहा।

नैवेद्य सरस यह लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
 हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥5॥
 ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं नि.स्वाहा।
 यह दीप जलाकर लाए, मम मोह नाश हो जाए।
 हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥6॥
 ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः दीपं नि.स्वाहा।
 हम धूप जलाने लाए, वसु कर्म नशाने आए।
 हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥7॥
 ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः धूपं नि.स्वाहा।
 फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
 हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥8॥
 ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः फलं नि.स्वाहा।
 यह अर्घ्य चढ़ा हर्षाएँ, हम पद अनर्घ्य पा जाएँ।
 हम सहस्रनाम शुभ ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते॥9॥
 ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
 दोहा- नाथ! कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।

शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस ॥

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- गुण अनन्त के कोश जिन, सहस्र आठ शुभ नाम।
 पुष्पांजलि करते 'विशद', करके चरण प्रणाम॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

श्रीमदादि शत नाम के, धारी श्री जिनेश।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, जिन पद यहाँ विशेष॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि त्रिजगत्परमेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत्
परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भाषापति आदि शत्, श्री जिनेन्द्र के नाम।

अर्चा करते भाव से, करके चरण प्रणाम्॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापत्यादि विश्व विद्या महेश्वरान्त्य
शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्थविष्ठादिक हैं विशद, श्री जिन के शत नाम।

जिन अर्चा करते यहाँ, पाने हम शिव धाम॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि पुराणपुरुषोत्तमान्त्य शत् नाम
धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशोक ध्वज आदि सौ, नामों का गुणगान।

करके करते अर्चना, पाएँ पद निर्वाण॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वाजादि भुवनैक पितामहान्त शत्
नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवृक्षलक्षणादि सौ, नामों का व्याख्यान।

वंदन कर अर्चा करें, अतिशय महिमावान॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत्
परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामुन्यादिक नाम शत्, श्री जिनके शुभकार ।

जिन अर्चा कर पूजते, जिन पद बारम्बार ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि अरिञ्जयान्त्य शत् नाम धरार्हत्
परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंस्कृत सुसंस्कार को, आदि कर शत् नाम ।

पूज रहे हम भाव से, करके विशद प्रणाम ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्कारादि दमेश्वरान्त्य शत् नाम
धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृहद वृहस्पतत्यादि शत्, नामों का व्याख्यान ।

करके पूजें भाव से, पाएँ सम्यक् ज्ञान ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद वृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्र शिखामणयन्त्य
शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रिकाल दश्यादिक रहे, श्री जिन के सौ नाम ।

मंत्र सभी जो हैं विशद, ध्याएँ श्रेष्ठ ललाम ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दश्यादि पृथवेयन्त्य शत् नाम धरार्हत्
परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्वासादिक नाम हैं, एक सौ आठ विशेष ।

पूजें ध्याएँ जो 'विशद', पाएँ सुख अवशेष ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि धर्म साम्राज्य नायकान्ताष्टोत्तर
शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सहस्रनाम जिनराज के, गाये मंगलकार ।

जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार ॥

(ताटंक छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं ।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं ॥
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं ।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं ॥1॥
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं ॥
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थकर का समवशरण ।
तीर्थकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन ॥2॥
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं ।
पावन तीर्थकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं ॥
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें ।
तीर्थकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें ॥3॥
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न वर्षाते हैं ।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, मेरु पे न्हवन कराते हैं ॥
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं ।
सहस्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जय कार लगाते हैं ॥4॥

एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप ॥ 5 ॥

दोहा- सहसनाम जिनदेव के, गाये मंगलकार।
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्राय जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करने के लिए, सहसनाम की आज।
आये हैं तव चरण में, पूर्ण करो मम काज ॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

चारित्र शुद्धि व्रत पूजा

स्थापना

पंच महाव्रत समीति त्रय, गुप्ति रूप चारित्र।
चारित्र शुद्धी हेतु शुभ, है आह्वान पवित्र ॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो
भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ चाल छन्द ॥

कूप का नीर यह लाए, रोग त्रय नाश हो जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

गंध सुरभित बना लाए, भवातप नाश हो जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सुअक्षत श्वेत यह लाए, सुपद अक्षय जो मिल जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प पूजा को यह लाए, काम रुजनाश हो जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुचरु पावन बना लाएँ, क्षुधा रुज नाश हो जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

सुघृत का दीप प्रजलाए, मोह तम पूर्ण नश जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नी में प्रजलाए, कर्म से मुक्ति मिल जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

सुफल पूजा को यह लाए, मोक्ष फल प्राप्त हो जाए।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

विशद हम अर्घ्य यह लाए, सुपद शाश्वत को हम पायें।
यहाँ हम भक्ति को आए, शुद्ध चारित्र को पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा-शांती धारा के लिए, लाए यमुना नीर।
यही भावना है विशद, पाएँ भव दधि तीर॥

॥ शान्तये शांतिधारा ॥

दोहा-पुष्पांजलि करते यहाँ, ले उपवन के फूल।
भाते हैं यह भावना, कर्म होंय निर्मूल॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

तेरह चारित्र के अर्घ्य

(चाल छन्द)

जो हैं हिंसा परिहारी, व्रत परम अहिंसा धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं अहिंसा व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रहे सत्य व्रत धारी, शिव पथगामी अनगारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥2॥
ॐ ह्रीं सत्य व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो चौर्य के हैं परिहारी, मुनि व्रताचौर्य के धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥3॥
ॐ ह्रीं अचौर्य व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो हैं स्त्री परिहारी, रहे ब्रह्मचर्य व्रत धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥4॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं सर्व परिग्रह त्यागी, ऋषि अपरिग्रही अनगारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥5॥
ॐ ह्रीं अपरिग्रह व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चौ कर भू लख के जावें, ईर्यापथ धारि कहावें।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥6॥
ॐ ह्रीं ईर्या समिति व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हित मित प्रिय बोलें वाणी, भाषा समिति धर ज्ञानी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥7॥
ॐ ह्रीं भाषा समिति व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं प्रासुक शुद्धाहारी, ऋषि समिति एषणा धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥8॥
ॐ ह्रीं एषणा समिति व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदान निक्षेपण धारी, ऋषि होते यत्नाचारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥९॥

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि समिति प्रतिष्ठाकारी, निर्जन्तु भूमि मल हारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥१०॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापन समिति व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषिवर मन गोपन कारी, होते मन गुप्ति धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥११॥

ॐ ह्रीं मन गुप्ति धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हों मौनी वच परिहारी, ऋषि वचन गुप्ति के धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥१२॥

ॐ ह्रीं वचन गुप्ति धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि काय क्रिया परिहारी, हों काय गुप्ती के धारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥१३॥

ॐ ह्रीं काय गुप्ति धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तेरह विधि चारित्र धारी, ऋषिवर गाये अनगारी।
हम जिन मुनिवर को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥१४॥

ॐ ह्रीं त्रयोदश विधि चारित्र धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मंगलमय मंगल परम, सच्चारित्र त्रिकाल।

भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

द्रव्य तत्त्व में हो श्रद्धान, सम्यक् दर्शन रहा प्रधान।

सम्यक् दर्शन संयुत ज्ञान, तीन लोक में रहा महान॥1॥

पंच महाव्रत समिति विशेष, तीन गुणियाँ धर अवशेष।

कहलाए सम्यक् चारित्र, शिव पद धारी पाएँ पवित्र॥2॥

दश धर्मों के धारी जान, इन्द्रिय जय करते गुणवान।

समता वन्दन स्तुति पाय, प्रतिक्रमण करते स्वाध्याय॥3॥

कायोत्सर्ग धारते ध्यान, करें एकाग्र चित्त हो मान।

केशलुंच करते निज हाथ, वस्त्र त्याग करते हैं साथ॥4॥

दातुन मंजन कर परिहार, शिति भोजन करते इक बार।

क्षिति शयन धारी जिन संत, न्हवन रहित होते गुणवंत॥5॥

सकल चरित है पंच प्रकार, समता सामायिक शुभकार।

छेदोपस्थापना व्रत वान, है परिहार विशुद्धी जान॥6॥

सूक्ष्म सांपराय व्रत शुभ जान, यथाख्यात चारित्र महान।

सम्यक् चारित में हों दोष, व्रत कर चारित हो निर्दोष॥7॥

दोहा- सम्यक् चारित धारते, वीतराग ऋषिराज।

जिनकी अर्चा हम यहाँ, करते हैं शुभ आज॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्र शुद्धि व्रत धारक श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य नि.स्वाहा।

दोहा- चारित्र शुद्धी धर विशद, पाएँ शिव सोपान।

भाव सहित जिनका यहाँ, करते हैं गुणगान॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

ऋषि मण्डल पूजन

स्थापना

दोहा- ऋषि मंडल आराध्य जिन, और देव परिवार।

आह्वानन् करते यहाँ, पाने सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चौबीस तीर्थकर, अष्ट वर्ग, अर्हतादि पंचपद, दर्शनज्ञान चारित्र रूपरत्नत्रय, चार प्रकार अवधि धारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि, चौबीस सुरि, तीन ह्रीं, अर्हत बिम्ब, यन्त्र सम्बन्धी परमदेव समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भव ताप नशाने आए।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय दीपं निर्व.स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।

हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम ऋषि मण्डल को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परमदेवाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-काल अनादी सिद्ध हैं, ऋषिवर ऋद्धि महान।
शांतीधारा कर यहाँ, करते हम गुणगान॥

॥शांतये शांतिधारा॥

दोहा-ऋषिमण्डल पूजा कही, जग में अपरम्पार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने भव से पार॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा-ऋषि मण्डल शुभ यंत्र के, जो हैं शुभ आधार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने भव से पार॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(पाइता छन्द)

तीर्थकर चौबिस गाए, जो शिव पदवी को पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय वृषभादि-चतुर्विंशतितीर्थकर-
परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

‘क’ वर्गादिक शुभ जानो, श्रुत के हेतू हैं मानो।
हो यंत्र की रचना भाई, जो है सददर्श प्रदायी॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि शषसह-
हम्लर्व्यरूँ परमयंत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

परमेष्ठी पाँच बताए, जो जग में पूज्य कहाए।
हम अर्हन्तादिक ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थायपंचपरमेष्ठी-परम देवाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा॥

सद्दर्श ज्ञान शुभ गाया, पावन चारित्र कहाया।
हम रत्नत्रय को पाएँ, मुक्ती पथ को अपनाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र
रूपरत्नत्रयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर भवन ज्योतिषी व्यन्तर, देवेन्द्र कल्प के मनहर।
इनके गृह में प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय भवनेन्द्र व्यन्तरेन्द्र
ज्योतिषीन्द्र कल्पेन्द्र चतुः प्रकार देवगृहेषु श्रीजिन चैत्यालयेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि ज्ञान जगाए, सर्वा-परमावधि पाए।
सुर चउ निकाय के जानो, हों अवधि ज्ञानी मानो॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय चतुः प्रकार अवधिधारक
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अष्ट ऋद्धियाँ पावें, जो तप द्वारा प्रगटावें।
उनको यह भी ना भावें, वे तजकर शिव पद पावें॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टऋद्धि सहित मुनिभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि देवियाँ जानों, जिन भक्त सभी हैं मानों।
जिन भक्ती करने आओ, शुभ यज्ञ भाग तुम पाओ॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय श्री आदि चतुर्विंशति देवेभ्यो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म वाचक ह्रीं कहाये, कारण शक्ती के गाए।
त्रय ह्रीं पूजते भाई, जो हैं कल्याण प्रदायी॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय त्रिकोणमध्येत्रय ह्रीं
संयुक्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर छियालिस गुणधारी, होते हैं कल्मषहारी।
जिनबिम्ब श्रेष्ठ मनहारी, हम पूज रहे शुभकारी॥१०॥

ॐ ह्रीं सर्वोद्रव विनाशन समर्थाय अष्टादश दोष रहिताय छियालीस
गुण युक्ताय अरहन्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्पाल दशों दिश जानो, जिनगृहों में श्री जिन मानो।
श्रीजिन पद पूज रचाते, हम उनको यहाँ बुलाते॥११॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थेभ्यो दशदिग्पालेभ्यो जिनभक्ति
युक्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चौबीसी जिन वर्ण शुभ, परमेष्ठी शुभकार।
रत्नत्रय वसु ऋद्धियाँ, पूज रहे मनहार॥

(शम्भू छन्द)

ऋषि मण्डल शुभ यंत्र लोक में, मंगलमय मंगलकारी।
जिसमें राजित श्रेष्ठ महाशुभ, ह्रीं अक्षर महिमाकारी॥
यंत्रराज का है नायक जो, चौबिस जिनवर युक्त कहा।
अ आ इ ई आदिक स्वर में, सिद्ध वर्ण संयुक्त रहा॥१॥
क आदिक हैं वर्ण पंच शुभ, उनका भी इसमें स्थान।
ह भ आदिक बीजाक्षर शुभ, आठों का है कथन महान॥

पाँचों परमेष्ठी शोभित हैं, रत्नत्रय भी रहा प्रधान।
 सर्व ऋषीश्वर शोभित होते, तप बल धारी ऋद्धीवान॥२॥
 श्रुतावधी धर चारों मुनिवर, जिनके गुण हैं अपरम्पार।
 चउ निकाय के देव शरण में, भक्ती करते बारम्बार॥
 श्री ही आदिक सभी देवियाँ, सेवा करें चरण में आन।
 अन्तिम वलय में घेरे जानों, ज्यों नगरी में कोटा जान॥३॥
 विधि सहित जो पूजा करते, पाते वह सुख-शांति महान।
 महिमा इसकी जग से न्यारी, कठिन रहा जिसका गुणगान॥
 सर्व दुखों को हरने वाली, पूजा कही है अपरम्पार।
 मंत्र जाप शुभ करने वाला, शीघ्र होय इस भव से पार॥४॥
 मुक्तिश्री को जपने वाले, करते हैं शिव पद में वास।
 अक्षयश्री को पा जाते हैं, होते तारण तरण जहाज॥
 ऋषि मण्डल जग श्रेष्ठ कहा है, तीनों लोक में रहा प्रसिद्ध।
 विघ्न हरण मंगल कारक है, होय भावना मन की सिद्ध॥५॥

दोहा- ऋषियों के चरणों नमन, करते बारम्बार।

अष्ट द्रव्य से पूजते, जिन पद मंगलकार॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समवशरण स्थित सर्व ऋषिभ्यो
 जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- ऋषि मण्डल शुभ यंत्र की, पूजा अपरम्पार।
 सुख-शांती पावे 'विशद', करके बारम्बार॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

रविव्रत पूजन

स्थापना

दोहा- मतिसागर जी ने किया, रविव्रत महति महान।

पार्श्व नाथ पद पूजने, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(दोहा)

जल की धारा दे रहे, चरणों में हे नाथ॥

जन्म जरादिक नाश हों, चरण झुकाते माथ॥1॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चरणों चर्चने, आये हम हे नाथ॥

भव आताप विनाश हो, चरण झुकाते माथ॥2॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत के प्रभु, भर लाये हम थाल।

अक्षय पद पाने चरण, पूजा करें त्रिकाल॥3॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर आये साथ।

कामबाण विध्वंस हों, तब चरणों में माथ॥4॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ॥

क्षुधारोग विध्वंस हो, चरण झुकाते माथ॥5॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का अनुपम दीप यह, हाथों लिये प्रजाल।

मोह अंध का नाश हो, चरण झुकाते भाल॥6॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप यह, खेते अपरम्पार।

अष्टकर्म का नाश हो, वंदन बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम भाव से, ताजे फल रसदार।

मोक्ष महाफल प्राप्त हो, भवदधि पावें पार॥8॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, लेकर द्रव्य अनेक।

पद अनर्घ्य हो प्राप्त शुभ, यही भावना एक॥9॥

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-रविवार व्रत के दिना, करें पार्श्व गुणगान।

जलधारा देते चरण, पाने सौख्य महान्॥

॥ शान्तये शान्तिधारा॥

दोहा-अर्पित करते चरण में, पुष्पों का यह हार।

गुण गाने से पार्श्व के, मिले मोक्ष उपहार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा-अर्चा के शुभभाव से, वंदन करें त्रिकाल।
रविव्रत पूजा की यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(राधेश्याम छन्द)

उपसर्ग परीषह में तुमने अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ! पुकारा है॥
ओले-शोले पत्थर-पानी, दुष्टों ने तुम पर वर्षाये।
तब श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रू पद सिर नाये॥1॥
तुमने तन चेतन का अंतर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप तुमने पाया॥
यह संयम की शक्ती मानो, उपसर्ग प्रभु जी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिये, हर बाधाओं से खेले हैं॥2॥
सब रागद्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पायी है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है॥
तुम सर्वशक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीनदुखी द्वारे आते, उनके सारे दुख हरते हो॥3॥
इक सेठ मतिसागर जानो, जो मन से अति दुखियारा था।
जो अशुभ कर्म के कारण से, निज सुत वियोग का मारा था॥

पा पुत्र एक शुभ होनहार, जो परदेशों में भटका था।
 सुधि भूल गया था निज घर की, जो माया-मोह में अटका था॥४॥
 तब सेठ ने रविव्रत पूजा कर, शुभ पुण्य के फल को पाया था।
 वह पुत्र प्राप्त करके अपना, अतिशय सौभाग्य जगाया था॥
 जो चरण शरण प्रभु की पाके, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
 व्रत धारण कर पूजा करके, बहु सौख्य संपदा पाते हैं॥५॥
 जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
 वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं॥
 जिसपद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
 जो भवि जीवों के लिये शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है॥६॥

दोहा-रविव्रत को जिन पार्श्व की, पूजा करें विशेष।
 सौख्य संपदा प्राप्त कर, पावें निज स्वदेश॥

ॐ ह्रीं रविव्रत व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा-रविव्रत के दिन पार्श्व को, पूजें जो भी लोग।
 सुख शान्ती आनन्द पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

जिनवाणी पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की देशना, जग में रही महान।
जिनवाणी का निज हृदय, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

पाईता छन्द

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायेँ, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह गंध बनाए, भव ताप नशाने आए।
जिनवाणी को हम ध्यायेँ, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय फल दायी, यह चढ़ा रहे हैं भाई।
जिनवाणी को हम ध्यायेँ, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायेँ, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, जो क्षुधा के रहे निवारी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में धूप खिवाएँ, कर्मों का पुञ्ज जलाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल सरस चढ़ाते भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- प्रासुक जल से दे रहे, जलधारा शुभकार।
धर्म हृदय में धारकर पाएँ भवदधि पार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करने यहाँ, लाए सुरभित फूल।
यही भावना है विशद पाएँ, भव का कूल॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्रुत अंग बाह्य शुभकारी, है जग में मंगलकारी।
हम पूज रहे हैं भाई, जो है शिवमार्ग प्रदायी॥1॥

ॐ ह्रीं अंग बाह्य श्रुतेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशांग श्रुत जानो, जो मोक्षप्रदायी मानो।
हम पूज रहे हैं भाई, जो है शिवमार्ग प्रदायी॥2॥

ॐ ह्रीं अंगप्रविष्टि श्रुतेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, यह अनुयोग बताए चार।
खिरी विशद जिन मुख से वाणी, वन्दन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं ऐं श्री प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः जिन मुखोद्भूत
जिनवाणी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-श्री जिनेन्द्र की देशना, जग में रही महान।
माँ जिनवाणी का यहाँ, करते हम गुणगान॥

(बेसरी छन्द)

आचारांग प्रथम कहलाए, पद अष्टादश सहस बताए।
दूजा सूत्र कृतांग बताया, पद छत्तीस सहस मय गाया॥
स्थानांग तीसरा जानो, ब्यालिस सहस सुपद युत मानो।
चौथा समवायांग कहाए, चौंसठ सहस लाख पद पाए॥
व्याख्या प्रज्ञप्ति पाँचवा सारं, पद दो लाख अट्ठाइस हजारं।
ज्ञातृकथा छठवाँ शुभकारी, पाँच लाख छप्पन हज्जारी॥

सप्तम उपासकाध्ययन में जानो, सत्तर सहस ग्यारह लख मानो।
 अन्तःकृतदश अठम ऋषीशं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं॥
 नवम अनुत्तर दश जिन भाखं, सहस चवालिस बानवे लाखं।
 प्रश्न व्याकरण दशम विचारी, लाख बानवे सोल हजारी॥
 ग्यारम सूत्र विपाक प्रकाशी, एक करोड़ लाख चौरासी।
 चार कोटि पन्द्रह लख जानो, दो हजार पद सारे मानो॥
 द्वादश दृष्टिवाद पन भेदी, एक सौ आठ कोटि पन वेदी।
 अड़सठ लाख छप्पन हज्जारी, सहित पाँच पद ज्ञान प्रचारी॥
 एक सौ बारह कोटि बताए, लाख तिरासी ऊपर गाए।
 सहस अट्ठावन पंच बढ़ाएँ, द्वादश अंग सर्व पद पाएँ॥
 कोटि इक्यावन अठलख जानो, सहस चौरासी छह सौ मानो।
 साढ़े इक्कीस श्लोक निराले, इक इक पद तम हरने वाले॥
 दोहा- जिनवाणी जिन देव कृत, देवे सम्यक् ज्ञान।
 'विशद' हृदय में धारकर, पाएँ शिव सौपान॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै! जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनवाणी में सरस्वती, पाया है शुभ नाम।
 कृपा पात्र माँ के बनें, करते चरण प्रणाम॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम॥

ॐ हूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो
भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पूजा-अष्टक)

हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष गुरु मोह नशाए, दुख संसार के हमने पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक परिणति में आए, शुद्धात्म को हम विसराए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

रहा काम का फूल विषैला, करते हम आत्म को मैला।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तब होय सबेरा।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूल धूप की हमे सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।
विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।
अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार॥

॥ शान्तये शान्तिधारा॥

दोहा- पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।
मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा-लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।

विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल॥

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्ज्वल भाग्य भविष्य नमस्ते॥
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते॥
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते॥
सोरठा-पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।

करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं॥

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है॥
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें॥
है श्मशान सरीखा हे गुरु!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्दालय॥

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।

दर्शन करके आपका, मन में जागा होश॥

विशद सिन्धु, हे विशद सिन्धु!, हम करते हैं चरणों वंदन।

भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन॥

जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।

ऐसे गुरु के चरण कमल का, करते हैं हम अभिनन्दन॥

करुणामूर्ती परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।

शिव पद के राही तब चरणों, मेरा बारम्बार नमन॥

दोहा- ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोला।

तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल॥

ॐ हूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला

पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा जिन की है अगम, पायें कैसे पार।

करें आरती भाव से, वंदन बारंबार॥

॥ इत्याशीर्वादः॥ (संघस्थ) -ब्र. आरती दीदी

बड़े पुण्य से अवशर आया है, गुरुवर का जो दर्शन पाया है।

गुरुवर के हम चरण धुलाते हैं, चरणोदक निज माथ लगतो है।

गुरु पंचाचारी हैं, जग के उपकारी है, परमेष्ठी हैं पावन परम॥

श्री आचार्य परमेष्ठी पूजन

स्थापना

दोहा-रत्नत्रय धारी विशद, हैं छत्तिस गुणवान।
परमेष्ठी आचार्य का, करते हम आह्वान॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठी! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव
वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

जल हो शीत-उष्ण कैसा भी, प्यास बुझाए विशद तथा।
परम पूज्य गुरुवर की अर्चा, जन्म मरण की हरे व्यथा॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥1॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

चारों गति में भ्रमण किया पर, निन्दा की दुर्गन्ध चढ़ी।
वीतराग पथ को जाना ना, की हमने ये भूल बड़ी॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥2॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो चन्दनं निर्व. स्वाहा।

जीवन बदले वस्त्रों जैसे, बदले ना हालात कभी।
अर्चा करके जिन गुरुवर की, ज्ञान जगाएँ जीव सभी॥

जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद् संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥3॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हार मानकर कामदेव भी, जिनके आगे झुक जाते।
ऐसे हम निर्ग्रन्थ सुगुरु की, भाव सहित महिमा गाते॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद् संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥4॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में घी डालें तो फिर, आग भड़कती है भारी।
सम्यक् पथ को कभी ना पाया, बढ़ी क्षुधा की बीमारी॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद् संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥5॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

आँधी या तूफानों से ज्यों, बुझ जाते दीपक सारे।
सम्यक् ज्ञान का दीप जला ना, दीप जला हम कई हारे॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद् संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥6॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

सुख दुख कर्मों के फल गाए, भेद ना इसका हम जाने।
दोष दिया औरों को हमने, रहे कर्म से अन्जाने॥

जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥7॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

फल क्या होता फल खाने का, नहीं समझ हमने पाई।
फल की इच्छा में हम भटके, आज समझ में यह आई॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥8॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

सदाचार की बहे त्रिवेणी, अतिशय कारी शीतलकार।
वैसे मूल्य अर्घ्य का क्या है, अर्चा से हो भवदधि पार॥
जैनाचार्य लोक में मंगल, देने वाले सद संदेश।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, विशद भाव से यहाँ विशेष॥9॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- परम पूज्य कहलाए जो, तीनों लोक त्रिकाल।

परमेष्ठी आचार्य की, गाते हम जयमाल॥

(ज्ञानोदय छन्द)

काल अनादि अनन्त कहा यह, जीव अनादी रहे अनन्त।
काल अनादी हैं परमेष्ठी, करते हैं कर्मों का अन्त॥
परमात्म अरहन्त सिद्ध हैं, तीन लोक में पूज्य विशेष।
जिनकी वाणी का जीवों को, देने वाले सद सन्देश॥1॥

पंचाचार का पालन करते, भवि जीवों को देते ज्ञान।
 स्वपर के उपकारी हैं जो, करने वाले जग कल्याण॥
 द्वादश तप दश धर्म के धारी, षट् आवश्यक गुप्तीवान।
 छत्तीस मूलगुणों के धारी, होते हैं आचार्य प्रधान॥2॥
 पंच महाव्रत समिति पंच जो, होते पंचेन्द्रिय जयवान।
 केशलुंच क्षितिशयन अचेलक, न्हवन त्याग इक भुक्तीवान॥
 अदन्त-धावन स्थितभोजी, षट् आवश्यक धर ऋषिराज।
 जिनकी अर्चा करके होते, सफल सभी के पूरे काज॥3॥
 मोक्षमार्ग के राही बनकर, भी करते हैं ज्ञान ध्यान।
 शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य महान॥
 जिनकी अर्चा भवि जीवों को, देने वाली जग से त्राण।
 अतः भाव से करते हैं हम, गुरुवर का पावन गुण गान॥4॥
 दोहा-महिमा जिनकी है अगम, गुण का है ना पार।

ऐसे गुरु के चरण में, वन्दन बारंबार॥

ॐ हूं परम पूज्य श्री आचार्य परमेष्ठीभ्यो जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पूजा की है भाव से, किया “विशद” गुणगान।
 जिसका फल हमको मिले, पावन पद निर्वाण॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥
दोहा-अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।

चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै,
सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित
कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी
चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर
आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़
गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाँ॥

जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
 जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
 शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
 राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
 जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
 श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

(शान्तये शान्तिधारा-3)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
 बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
 ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
 सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
 पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
 करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
 विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

निर्वाण काण्ड (लघु)

“सोरठा”

पावन भू निर्वाण, पूज्य कही इस लोक में।
पाने शिव सोपान, विशद पूजते जगत जन॥

(चाल छंद)

जिन आदीश्वर कहलाए, अष्टापद से शिव पाए।
चम्पापुर धाम बनाए, प्रभु वासुपूज्य कहलाए॥1॥
श्री नेमिनाथ गिरनारी, से हुए आप शिवकारी।
श्री वीर प्रभू शिव पाए, पावापुर धन्य बनाए॥2॥
जिन बीस मोक्ष पद पाए, सम्मेद शिखर कहलाए।
निर्वाण क्षेत्र जो गाए, वे जगत पूज्य कहलाए॥3॥
मुनि नगर तारवर आए, वरदत्तादि शिव पाए।
शम्बू प्रद्युम्न सब भाई, गिरनार से मुक्ती पाई॥4॥
लवकुश आदिक जो गाए, पावागिर से शिव पाए।
त्रय पाण्डव आदिक जानो, शिव शत्रुंजय से मानो॥5॥
बलभद्र आदि शिव पाए, गजपंथ से मोक्ष सिधाए।
हनू राम नीलादिक सारे, तुंगी से मोक्ष सिधारे॥6॥
नंगादि पंच कहाए, सोनागिर से शिव पाए।
रावण सुत आदि कुमारा, रेवातट से शिव धारा॥7॥

फिर कूट सिद्धवर आए, चक्रीद्वय शिव पद पाए।
 कुम्भ कर्ण इन्द्र जित मानो, शिव बड़वानी से मानो॥8॥
 मुनि स्वर्ण भद्रादि कहाए, पावागिर से शिव पाए।
 गुरु दत्तादिक मुनि सारे, द्रोणागिर से शिव धारे॥9॥
 बालादिक नाग कुमारा, अष्टापद से शिवधारा।
 मुनि साढ़े तीन करोड़ी, मेढागिरि से शिव जोड़ी॥10॥
 कुलभूषण आदि मुनीशा, शिव कुन्थलगिरि के शीशा।
 जसरथ सुत कलिक कहाए, शिव कोटि शिला से पाए॥11॥
 वरदत्तादी पंच ऋशीषा, रेशिन्दिगिरि के शीशा।
 मथुरा उद्यान कहाए, जम्बू स्वामी शिव पाए॥12॥
 निर्वाण जहाँ जिन पाए, निर्वाण क्षेत्र कहलाए।
 त्रय लोक में तीर्थ जो सारे, वे हैं सब पूज्य हमारे॥13॥
 हम श्रीजिन महिमा गाते, निर्वाण क्षेत्र सब ध्याते।
 यह विशद भावना भाएँ, हम भी शिवपद को पाएँ॥14॥
 सोरठा- पाए पद निर्वाण, संयम के धारी ऋषी।
 हो जाय कल्याण, महिमा गाते हम विशद॥

卐 श्रावक के षट् आवश्यक कर्तव्य 卐
 देवपूजा गुरुपास्ति, स्वाध्यायः संयमस्तपः।
 दानश्चेति गृहस्थानां, षट् कर्माणि दिने-दिने॥

श्री णमोकार चालीसा

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव॥
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त॥

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया॥१॥
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी॥२॥
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो॥३॥
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे॥४॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी॥५॥
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥६॥
दोष अठारह रहित बताए, चौतिस अतिशय जो प्रगटाए॥७॥
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए॥८॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए॥९॥
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते॥१०॥
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले॥११॥
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते॥१२॥

जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए॥१३॥
 फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की शुभ भाई॥१४॥
 आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए॥१५॥
 सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए॥१६॥
 आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते॥१७॥
 पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए॥१८॥
 शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले॥१९॥
 आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते॥२०॥
 छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी॥२१॥
 द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥२२॥
 ज्ञानाभ्यास करें अतिशायी, संतों को शिक्षा दें भाई॥२३॥
 द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो॥२४॥
 रत्नत्रय धारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए॥२५॥
 दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी॥२६॥
 विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो॥२७॥
 ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते॥२८॥
 हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी॥२९॥

पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमितियाँ पालें मानो॥३०॥
 पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले॥३१॥
 णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई॥३२॥
 महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया॥३३॥
 अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई॥३४॥
 सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया॥३५॥
 सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी॥३६॥
 श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए॥३७॥
 महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए॥३८॥
 भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए॥३९॥
 अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए॥४०॥
 दोहा-चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।

'विशद' गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ॥
 धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
 अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप॥

जाप :-

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः।

श्री भक्तामर अड़तालीसा

दोहा-भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम॥
सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत॥

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला॥१॥
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए॥२॥
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए॥३॥
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी॥४॥
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए॥५॥
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए॥६॥
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ति कभी न जाए खाली॥७॥
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ती पाए॥८॥
सदी ग्यारहवीं जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी॥९॥
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया॥१०॥
राजाभोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो॥११॥
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया॥१२॥
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो॥१३॥
राजा ने पूछा हे भाई!, पुस्तक कौन सी तुमने पाई॥१४॥

नाममाला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए॥१५॥
 कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया॥१६॥
 कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी॥१७॥
 गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बताया॥१८॥
 कालीदास को नहीं सुहाया, मुनिवर को मूरख बतलाया॥१९॥
 शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें॥२०॥
 दूत सुमुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया॥२१॥
 सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए॥२२॥
 कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया॥२३॥
 क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया॥२४॥
 बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ॥२५॥
 दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए॥२६॥
 मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी॥२७॥
 मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए॥२८॥
 नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए॥२९॥
 मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए॥३०॥
 आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये॥३१॥
 मुनि के तन में बँधने वाले, टूट गयीं जंजीरें ताले॥३२॥
 आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे॥३३॥
 पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए॥३४॥

राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया॥३५॥
 मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए॥३६॥
 राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया॥३७॥
 कालिदास ने शक्ति लगाई, देवि कालिका भी प्रगटाई॥३८॥
 देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई॥३९॥
 महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई॥४०॥
 जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बस यही सहारा॥४१॥
 “विशद” भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी॥४२॥
 भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ॥४३॥
 अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ॥४४॥
 भक्तामर है महिमा शाली, भक्ती भक्त की जाय ना खाली॥४५॥
 कोई पूजन पाठ रचाते, अखण्ड पाठ करते करवाते॥४६॥
 कोई विधान करके हर्षाते, कोई प्रभु की महिमा गाते॥४७॥
 हम भी श्री जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ॥४८॥
 दोहा- भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
 नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय॥
 आधि व्याधि नाशक कहा, भक्तामर स्तोत्र।
 मंत्रों से परिपूर्ण है, ‘विशद’ धर्म का स्रोत॥

जाप :-

ॐ ह्रीं क्लीं श्री ऐम् अर्ह श्री वृषभनाथ तीर्थकराय नमः।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा-परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार॥
धर्म प्रवर्तक आदि जिन, का करते गुणगान।
चालीसा जिनराज का, गाते विशद महान॥

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया॥१॥
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी॥२॥
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया॥३॥
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर द्वीप युक्त सुखदायी॥४॥
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है॥५॥
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए॥६॥
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया॥७॥
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए॥८॥
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए॥९॥
पद युवराज का पाये भाई, विधी स्वयंवर की बतलाई॥१०॥
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया॥११॥
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई॥१२॥

ब्राह्मी को श्रुत लिपी सिखाई, ब्राह्मी लिपी अतः कहलाई॥१३॥
लघू सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई॥१४॥
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो॥१५॥
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभू बने बैठे हैं रागी॥१६॥
उसने युक्ती एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई॥१७॥
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया॥१८॥
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया॥१९॥
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी॥२०॥
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया॥२१॥
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥२२॥
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए॥२३॥
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया॥२४॥
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई॥२५॥
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षू रस आहार कराया॥२६॥
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई॥२७॥
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥२८॥
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए॥२९॥

बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥३०॥
 माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए॥३१॥
 मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥३२॥
 योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें॥३३॥
 शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया॥३४॥
 बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी॥३५॥
 हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥३६॥
 श्री जिनगृह में जिनवर सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥३७॥
 'विशद' सिन्धु गुरुवर कहलाए, आदिनाथ की महिमा गाए॥३८॥
 जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥३९॥
 तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ॥४०॥
 दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
 'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार॥
 रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
 कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्॥

जाप :-

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं एम् अर्ह श्री वृषभनाथ तीर्थकराय नमः।

श्री पद्मप्रभु चालीसा

दोहा- अरहतादि नवदेवता, जग में रहे महान।
जिनके चरणों में विशद, करते गुणगान॥
परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पद्म का, गाते अपरम्पार॥

चौपाई

जय-जय पद्मप्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी॥1॥
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया॥2॥
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी॥3॥
अस्त्र-शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे॥4॥
उपरिम ग्रीवक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे॥5॥
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी॥6॥
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए॥7॥
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया॥8॥
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी॥9॥
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात-पिता के भाग्य जगाये॥10॥
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो॥11॥
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभु जिनदेवा॥12॥

कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तब वहाँ मनाया॥13॥
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए॥14॥
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए॥15॥
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया॥16॥
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो॥17॥
तृतीय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए॥18॥
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए॥19॥
श्री प्रभासगिरि पर जिन स्वामी, आप हुए प्रभु अन्तर्यामी॥20॥
दिव्य देशना आप सुनाए, प्राणी सद् श्रद्धान जगाए॥21॥
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ती पाई॥22॥
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई॥23॥
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए॥24॥
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयू पाये हैं प्रभु नामी॥25॥
छदमस्थ काल छह माह बिताए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए॥26॥
प्रभु सम्मेल शिखर पर आए, योग निरोध इक माह का पाए॥27॥
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ती पाए प्रभु अविकारी॥28॥
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ती से आए॥29॥
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ती कर हर्षाए॥30॥
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए॥31॥

हम भी सिद्ध शिला पर जाएँ, यही भावना पावन भाएँ॥32॥
 बाढ़ा में अतिशय दिखलाए, भूमी से प्रभु जी प्रगटाए॥33॥
 रही मूर्ति अतिशय मनहारी, वीतराग मय मंगलकारी॥34॥
 कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई॥35॥
 दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए॥36॥
 मनोकामना पूरी करते, दुखियों के सारे दुख हरते॥37॥
 पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥38॥
 यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी॥39॥
 धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें-सुनें हर दिन जिनवाणी॥40॥
 नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें॥41॥
 निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें॥42॥

दोहा- चालीसा पढ़ते विशद, भक्ति भाव के साथ ।

भव्य जीव सुख शांति पा, बनें श्री के नाथ ॥

विद्वज्जनानां खलु मण्डलीषु, मूर्खामनुष्यो लभते न शोभाम् ।
 श्रेणीषु किं नाम सितच्छदानां, काको वराका श्रियमतनोति ॥

अर्थ :- विद्वानों की मण्डली में मूर्ख मनुष्य शोभा को प्राप्त नहीं होता
 सो ठीक ही है क्योंकि हंसों की पंक्ति में बेचारा कौआ क्या शोभा को
 बढ़ाता है? अर्थात् नहीं बढ़ाता।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
तीर्थकर श्री शांति जिन, का करते गुणगान।
चालीसा गाते विशद, करके चरण प्रणाम॥

चौपाई

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया॥१॥
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग में न्यारी॥२॥
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी॥३॥
रानी एरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए॥४॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए॥५॥
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥६॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी॥७॥
जन्म प्रभू जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥८॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया॥९॥
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया॥१०॥
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम कहाया॥११॥
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए॥१२॥

तीर्थकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो॥१३॥
 नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बतलाए॥१४॥
 सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए॥१५॥
 नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया॥१६॥
 सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए॥१७॥
 जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया॥१८॥
 स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए॥१९॥
 केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी॥२०॥
 एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए॥२१॥
 ज्येष्ठकृष्ण चौदश तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो॥२२॥
 आत्म ध्यान कीन्हे तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी॥२३॥
 पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई॥२४॥
 समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय जयकार लगाए॥२५॥
 दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए॥२६॥
 छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए॥२७॥
 यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई॥२८॥
 योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी॥२९॥

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरिसम्मेद शिखर से मानो॥३०॥
 नौ सौ मुनी श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए॥३१॥
 महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया॥३२॥
 कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई॥३३॥
 शांतिनाथ शांती कर गाए, अतिशय जो भारी दिखलाए॥३४॥
 जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी॥३५॥
 कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग शोक दारिद्र नशाए॥३६॥
 शांतिनाथ शांती के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता॥३७॥
 भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए॥३८॥
 पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख शांति सौभाग्य जगावे॥३९॥
 'विशद'भाव से जिन गुण गाएँ, हम भी शिव पदवी को पाएँ॥४०॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
 सुख शांती आनन्द पा, बने श्री का नाथ॥
 दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
 सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण॥

जाप :-

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम॥

चौपाई

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी॥१॥
तुम हो तीर्थकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी॥२॥
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी॥३॥
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए॥४॥
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी॥५॥
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया॥६॥
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई॥७॥
पञ्चाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला॥८॥
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते॥९॥
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥१०॥
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी॥११॥
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥१२॥
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए॥१३॥

तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया॥१४॥
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए॥१५॥
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए॥१६॥
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया॥१७॥
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले॥१८॥
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी॥१९॥
धरणेन्द्र पद्मावति तव आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥२०॥
पद्मावति ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया॥२१॥
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई॥२२॥
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई॥२३॥
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया॥२४॥
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए॥२५॥
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥२६॥
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए॥२७॥
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए॥२८॥
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए॥२९॥

श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई॥३०॥
 श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते॥३१॥
 भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते॥३२॥
 पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई॥३३॥
 योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते॥३४॥
 पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी॥३५॥
 हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥३६॥
 पार्श्वप्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी॥३७॥
 'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥३८॥
 भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशय कारी पुण्य कमाते॥३९॥
 उभय लोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते॥४०॥
 दोहा-पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार॥
 तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
 सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग॥
 'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

जाप :-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः।

श्री महावीर छियालिसा

दोहा-सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम॥
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदलते तकदीर॥

चौपाई

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी॥1॥
तीर्थकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥2॥
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए॥3॥
राजा सिद्धार्थ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए॥4॥
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के रवि कहलाए॥5॥
षष्ठी शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभू ने जिस दिन पाया॥6॥
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो॥7॥
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया॥8॥
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया॥9॥
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया॥10॥
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धीधारी मुनिवर आए॥11॥
मन में प्रश्न मुनी के आया, जिसका समाधान न पाया॥12॥
देख प्रभू को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा॥13॥

मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए॥14॥
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया॥15॥
भाग्य मित्र सभी भय खाये, किन्तू प्रभू नहीं घबराए॥16॥
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी॥17॥
उसने चरणों द्रोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया॥18॥
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए॥19॥
हाथी तब उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए॥20॥
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए॥21॥
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए॥22॥
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया॥23॥
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया॥24॥
तृतीया भक्त प्रभु जी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए॥25॥
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया॥26॥
प्रभू नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए॥27॥
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए॥28॥
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया॥29॥
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े थे शिवपथ गामी॥30॥
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तू उन्हें डिगा न पाया॥31॥

कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया॥32॥
 दर्शें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी॥33॥
 ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया॥34॥
 समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ती अनुपम मानो॥35॥
 कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए॥36॥
 प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी॥37॥
 गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूती शुभ पाए॥38॥
 गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया॥39॥
 प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए॥40॥
 प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी॥41॥
 चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए॥42॥
 ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया॥43॥
 वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए॥44॥
 पावागिरी ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए॥45॥
 चरण कमल में हम सिरनाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते॥46॥
 दोहा- छियालिसा छियालिस दिन, दिन में छियालिस बार।
 पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार॥

प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा- हृदय क्षमा है आपके, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

चौपाई

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी॥१॥
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥२॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे॥३॥
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥४॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा॥५॥
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥६॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी॥७॥
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥८॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया॥९॥
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दी शीतल छाया॥१०॥
सत्य अहिंसादिक व्रत पालें, सकल चराचर के रखवाले॥११॥
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥१२॥
गिरि सम्पेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी॥१३॥
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥१४॥

गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया॥१५॥
 है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥१६॥
 अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ीं उमंगें॥१७॥
 सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥१८॥
 दीक्षा का शुभ आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें॥१९॥
 अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥२०॥
 अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्बत् मानो॥२१॥
 सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥२२॥
 विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी॥२३॥
 दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणागिरि का झूमा अम्बर॥२४॥
 जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया॥२५॥
 कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥२६॥
 परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते॥२७॥
 बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥२८॥
 भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते॥२९॥
 कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥३०॥
 मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते॥३१॥
 स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥३२॥
 जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता॥३३॥

'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥३४॥
 तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया॥३५॥
 जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥३६॥
 प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी॥३७॥
 जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥३८॥
 एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता॥३९॥
 दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥४०॥
 लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली॥४१॥
 सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥४२॥
 भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते॥४३॥
 चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥४४॥
 दोहा- 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
 माया मोह विनाशकर, हरे पूर्ण अज्ञान॥
 सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
 सुख-शांति सौभाग्य का, पावें शुभ आशीष॥

(संघस्थ) - ब्र. आरती दीदी

वरमेकं भवं श्रेष्ठं, चारित्र समन्वितं।
 न तु चारित्र हीनस्य, भवं कोटि शतं वृथा॥

पंचपरमेष्ठी की आरती

तर्ज - भक्ति बेकरार है.....

अर्हत-सिद्ध-आचार्य हैं, उपाध्याय-मुनिराज हैं।
परमेष्ठी जिन पांचों की शुभ, आरती करते आज हैं।टेक॥
प्रथम आरती अर्हतों की, केवलज्ञान के धारी जी-2
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पावन हैं अविकारी जी-2
अर्हत-सिद्ध.....॥1॥

अष्टकर्म के नाशी पावन, सिद्ध प्रभू कहलाए जी-2
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त जो पाए जी-2
अर्हत-सिद्ध.....॥2॥

शिक्षा दीक्षा देने वाले, होते पञ्चाचारी जी-2
छत्तिस मूल गुणों को पाते, होते हैं अविकारी जी-2
अर्हत-सिद्ध.....॥3॥

ग्यारह अंग पूर्व चौदह सब, पच्चिस गुण प्रगटाते हैं-2
ज्ञान-ध्यान-तप में रत मुनि को, पावन ज्ञान सिखाते हैं-2
अर्हत-सिद्ध.....॥4॥

विषयाशा के त्यागी मुनिवर, संगारम्भ से हीन रहे-2
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र धर, वीतराग जिन संत कहे-2
अर्हत-सिद्ध.....॥5॥

अर्हत-सिद्धाचार्य-उपाध्याय, सर्व साधु को ध्याये जी-2
'विशद' आरती करके पद में, सादर शीश झुकाए जी-2
अर्हत-सिद्ध.....॥6॥

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज-इह विधि मंगल आरति कीजे.....

नव देवों की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे॥टेक॥
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी॥
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता॥
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद कार्यों की॥
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की॥
पाँचवीं आरती मुनी संघ की, बाह्यऽभ्यंतर रहित संग की॥
छठवीं आरती जैन धरम् की, 'विशद' अहिंसा मई परम की॥
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की॥
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी॥
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की॥
'विशद' वन्दना आरति कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे॥ नव...॥

मानस्तम्भ की आरती

मानस्तम्भ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे॥टेक॥
जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।-मान...
पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए।-मान...
दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी-मान...
पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी-मान...
उत्तर के जिन बिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले-मान...
मानस्तम्भ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए-मान...
'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ-मान...
दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए-मान...

श्री आदिनाथ जी की आरती

आज करें हम आदि प्रभू की, आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक-संताप निवारक-2, पावन मंगलकारी॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥टेक॥
श्री जिनगृह में प्रभू आपने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन-दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥1॥
दूर दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आपकी आरती करके-2, मन वांछित फल पाते॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥2॥
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥3॥
हमने सुना है सद्भक्तों के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥4॥
दीनानाथ अनाथों के हो, सब पर कृपा दिखाते-2।
अतः भक्त तव चरणों आके-2, सादर शीश झुकाते॥

हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥5॥

श्री पद्मप्रभु की आरती

- करहु आरती आज, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे,
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे, तुमरे द्वारे स्वामी...
विशद ज्ञान के ताज, पद्म प्रभु तुमरे द्वारे।टेक॥
मात सुसीमा के तुम प्यारे, धरणराज के राजदुलारे।
कौशांबी महाराज-जिनेश्वर तुमरे द्वारे (1)
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि स्वामी, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी।
किए सभी जयकार-जिनेश्वर तुमरे द्वारे (2)
इन्द्रराज ऐरावत लाया, जिस पर प्रभु जी को बैठाया।
न्हवन किया शुभकार-जिनेश्वर तुमरे द्वारे (3)
जाति स्मरण आपको आया, मन में तब वैराग्य जगाया।
संयम धारा आप, जिनेश्वर तुमरे द्वारे (4)
गिरि सम्मोदशिखर से स्वामी, मोहन कूट गये जगनामी।
पाए शिव का राज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे (5)
“विशद” भावना हम यह भाएँ, पावन मोक्षमार्ग अपनाए।
मिले मोक्ष साम्राज्य, जिनेश्वर तुमरे द्वारे (6)
भाव सहित प्रभु को जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
सफल होंय सब काज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे (7)

श्री चन्द्रप्रभु की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...।टेक॥
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी-2।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी॥1॥ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाए, सद् दृष्टी धारी-2।
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी॥2॥ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे-2।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे॥3॥ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया-2।
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया॥4॥ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे-2।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे॥5॥ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये-2।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये॥6॥ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो-2।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो॥7॥ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी-2।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी॥टेक॥ॐ जय...

श्री शांतिनाथ की आरती

तर्ज - वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थकर, पदधारी गुणवान की॥

वन्देजिनवरम-2॥टेक॥

नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए जी-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए जी-2
द्वार द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की-जग...॥1॥
जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ! आपके ध्यान की-जग...॥2॥
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की-जग...॥3॥
सारे जग में प्रभू आपने, अतिशय बड़ा दिखाया है-2
शांती देकर के भक्तों में, चमत्कार फैलाया है-2
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की॥4॥
जिन मंदिर में शांती प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए हैं-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे, अतिशय बिम्ब महान की।

जगमग-जगमग.....॥5॥

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

(तर्ज:- इह विधि मंगल आरती कीजे...)

मुनिसुव्रत की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे॥टेक॥
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे।

मुनिसुव्रत...॥1॥

राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए।
मुनिसुव्रत...॥2॥

तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयू पाई।
मुनिसुव्रत...॥3॥

श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
मुनिसुव्रत...॥4॥

दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी।
मुनिसुव्रत...॥5॥

वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया।
मुनिसुव्रत...॥6॥

वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया।
मुनिसुव्रत...॥7॥

फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ती पाई।
मुनिसुव्रत...॥8॥

गिरि सम्पेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया।
मुनिसुव्रत...॥9॥

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज-भक्ति बेकार है.....

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।टेक।।

1. शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....

2. नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छोड़ा जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....

3. मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभू ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है.....

4. पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब,कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....

5. केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज-हम सब उतारे तेरी आरती.....

आज करें हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारी-2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभू हैं, जग जन के संकटहारी॥

हो जिनवर हम सब उतारे तेरी आरती॥टेक॥

अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए॥

हो जिनवर.....॥1॥

गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए॥

हो जिनवर.....॥2॥

जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
शत् इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए॥

हो जिनवर.....॥3॥

यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए॥

हो जिनवर.....॥4॥

शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए॥

हो जिनवर.....॥5॥

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज: कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती,
हो वीरा हम सब, उतारें तेरी आरती॥टेक॥
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए-2।
धन कुबेर ने खुश होकर के-2, दिव्य रत्न वर्षाए॥
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा....॥1॥
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब-2, मन में हर्ष बढ़ावे॥
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचें गावें हर्षावें।
सब मिल उतारें थारी आरती...हो वीरा....॥2॥
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी॥
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते हैं थारी आरती...हो वीरा....॥3॥
दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये-2
कार्तिक कृष्ण अमावस को प्रभु-2, विशद मोक्ष पद पाए॥
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमी है- प्यारी।
जिनबिम्बों की करते विशद आरती...हो वीरा....॥4॥

श्रावक प्रतिक्रमण

जीवों द्वारा जो प्रमाद से, दोष विशद हो जाते हैं।
प्रतिक्रमण करने से वे सब, पूर्ण स्वतः खो जाते हैं॥
भव-भव में जो किए उपार्जित, कर्मों का क्षण में हो नाश।
श्रावक के सम्बोधन हेतू, प्रतिक्रमण का करें प्रकाश॥

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।

आर्तरौद्र परित्यागः, तद्धिं प्रतिक्रमणं मतम्।

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुए, आर्त-रौद्र का त्याग करना प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र! हे देवाधिदेव! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु! मैं पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग-द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति! हे जिनेन्द्र देव! निरन्तर समीचीन मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय! मैंने शरीर से दुष्ट कार्य किया है, हाय! मैंने मन से दुष्ट विचार (चिन्तन) किया है, हाय! मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चाताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (84 लाख जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (199) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग-द्वेष से जो पाप लगे हों। तस्स मिच्छा मे दुक्कडं (तत्सम्बन्धी मेरा दुष्कृत मिथ्या हो)।

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और करने वाले की अनुमोदना की है-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

एकांत, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान - इन पाँच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन-वचन से प्रशंसा की हो-तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजन त्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस त्याग, मधु त्याग और जीवदया पालन- इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

हे भगवन! मूलगुणों के अन्तर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो। जिनदर्शन व्रत पालन करते हुए जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार-सुख की वाञ्छा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो मिथ्यामार्ग और उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोनों लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

हे नाथ! मूलगुणों के अन्तर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के 48 मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसका उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन, जीर्ण एवं सच्छिद्र वस्त्र से जल छाना हो। गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने

पर उसका उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

हे देवाधिदेव! मूलगुणों के अन्तर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

हे करुणा के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत पंच-उदुम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक-मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजाने फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार-अनाचार दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।

हे दया के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत मद्य त्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकार के सन्धानों

का, दो दिन व दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार-अनाचार जन्य दोष लगे हों-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे करुणा के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत मांस त्याग व्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता-चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया हो या चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े और घुने हुए अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन-विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि में बने भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छाछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे परमपिता परमात्मा! मूलगुणों के अन्तर्गत मधु त्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का एवं गुलकन्द आदि का सेवन स्वयं किया हो, कराया हो, करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे नित्य निरंजन देव! मूलगुणों के अन्तर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं। (कायोत्सर्ग करें)

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्री सेवन-इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे करुणा निधान! देव दर्शन-पूजन, साधु उपासना-वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम पालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे त्रिजग परेश्वर! इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन और निदान- ये चार आर्तध्यान। हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद और परिग्रहानंद - ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे कृपा निधान! राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे त्रिलोकी नाथ! जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय - ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग - इन पाँच आस्रवों द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह - इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय, अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् सप्त भयों के द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं। (कायोत्सर्ग करें)

स्थूल हिंसा विरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को मारा हो, बांधा हो, अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो एवं अन्नपान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत-कारित-अनुमोदना से किये हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूल असत्य विरति व्रत का पालन करते हुए मिथ्योपदेश देने से, एकान्त में कही हुई बात को प्रगट कर देने से, झूठा लेख

लिखने से तथा किसी भी चेष्टा से अभिप्राय समझ कर भेद प्रकट कर देने से एवं पर का धन अपहरण करने के भाव से जो दोष मन-वचन-काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूल चौर्य विरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूलअब्रह्म विरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी स्त्री के साथ आने-जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने-जाने या लेन-देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएँ की हों, काम के तीव्र वेग से वीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत-कारित-अनुमोदना से अन्य के पुत्र-पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

स्थूल परिग्रह-परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से जमीन और मकान आदिक के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी-दास, चांदी-सोना, वस्त्र एवं बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं। (कायोत्सर्ग करें)

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति व्रत-ये तीन गुणव्रत और भोग परिणाम व्रत, परिभोग परिमाणव्रत, अतिथि संविभाग व्रत, समाधि मरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों-तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम् वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का श्रृंगार किया हो, राग के उद्वेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्ध प्रलाप करने में, अन्यथा

पढ़ने-पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुनने) करने से जो दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो, कराई हो, सुनी हो, सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

देव-शास्त्र-गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर, टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत-कारित- अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

चलने-फिरने, शरीर को हिलाने-हिलाने, उठने-बैठाने, छींकने-खांसने, सोने, जागने, जम्हाई लेने और मार्ग चलने-चलाने में देखे, बिना देखे तथा जाने-अनजाने में जो दोष लगे हों- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन-भेदन कर दिया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो- तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

हे प्रभो! मेरे लिए जाने-अनजाने में और जो कोई दोष लगे हों - तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

**हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।
अन्तो अन्तो डङ्गमि पच्छत्तावेण वेयंतो॥**

हाय-हाय! मैंने दुष्टकर्म किए, मैंने दुष्ट कर्मों का बार-बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म-भेदक वचन कहे-इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे पश्चाताप है।

हे प्रभु! मेरा किसी भी जीव के प्रति राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा भाव है।

हे प्रभु! जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव-भव में मुझे शास्त्रों के पठन-पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति, सच्चरित्र सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और

हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना (प्रतीति) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र देव! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

हे भगवन्! मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो—ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है। (सुबह 2, शाम को 4 कायोत्सर्ग करें)

दोहा-प्रतिक्रमण हमने किया, हुई हो कोई भूल।
क्षमा दोष होवें 'विशद', पाएँ शिव का कूल॥

(इसके बाद क्षमा वन्दना बोले)

क्षमा वंदना

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा शांती का दाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ती को पाता है॥
क्षमा करता सकल जन को, क्षमा करना सभी मुझको।
अभी छदमस्थ हूँ मैं भी, नहीं है ज्ञान कुछ मुझको॥
रहे मैत्री सभी जन से, किसी से बैर न मेरा।
हृदय में भावना मेरी, किसी से हो नहीं फेरा॥

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा ही जग का त्राता है।
 क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥1॥
 पाप का कर सकें छेदन, रहे यह भाव में वेदन।
 क्षमा उनसे भी चाहूँगा, मेरे हाथों हुए भेदन॥
 त्याग दूँ दोष इस जग के, यही है भावना मेरी।
 पटे खाई हृदय की जो, बनी हो पूर्व से तेरी॥
 क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा समता को लाता है।
 क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥2॥
 दया मय भाव हो जावें, हृदय करुणा से भर जावे।
 रहे भावों में शीतलता, कभी भी क्रोध न आवे॥
 क्षमा की तरणी बह जावे, सदा मैं भाव करता हूँ।
 क्षमा भूषण है तन मन का, उसे मैं आप धरता हूँ॥
 क्षमा करना क्षमा करना क्षमा उर में समाता है।
 क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥3॥
 कभी जाने या अन्जाने, हुए हों दोष जो मेरे।
 क्षमा हमको सभी करना, बड़े उपकार हों तेरे॥
 वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।
 क्षमा धारण 'विशद' दिल में कि अर्पण प्राण तुम करना॥
 क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।
 क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥4॥

सोलह कारण भावना

दोहा- सोलह कारण भावना, विशद भाव से भाया।

तीर्थकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाया॥

दर्शन विशुद्धि भावना

मोह तिमिर से आच्छादित है, तीन लोक सारा।
काल अनादी से भटके हैं, मिथ्या भ्रम द्वारा॥
कभी नरक नर सुर गति पायी, पशुगति में भटके।
राग-द्वेष मद मोह प्राप्त कर, विषयों में अटके॥
सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुची प्राप्त करना॥
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धी गुणीजनों ने, या को ही माना॥१॥

विनय सम्पन्न भावना

अहंकार दुर्गति का कारण, सद्गति का नाशी।
निज के गुण को हरने वाला, दुर्गुण की राशि॥
मद की दम को दमन करें जो, बनकर श्रद्धानी।
नम्र भाव धारण करते हैं, जग में सद्ज्ञानी॥
उच्च गोत्र का कारण बन्धू, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया॥

‘विशद’ विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये॥2॥

अनतिचार शीलव्रत भावना

नर भाव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतीचार होता॥
अतीचार से रहित व्रतों, को पाले जो कोई।
प्रकट होय आतम निधि उसकी, सदियों से खोई॥
कृत-कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटि से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा॥
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे॥3॥

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना

ज्ञानावरणी कर्म ने भाई, जग में भरमाया।
सम्यक् ज्ञान हृदय में मेरे जाग नहीं पाया॥
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा अब, विशद ज्ञान पाना।
ज्ञाता बनकर ज्ञान के द्वारा, चित् स्वरूप ध्याना॥
अजर अमर पद पाने हेतू, ज्ञानामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, छन्दों को गाना॥

ज्ञान योग होता अभीक्षण ये भावों से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, शिवपुर को जाना॥4॥

संवेग भावना

है संसार अपार असीमित, पार नहीं पाया।
काल अनादी से प्राणी यह, जग में भरमाया॥
भय से हो भयभीत जानकर, इस जग की माया।
मंगलमय संवेग भाव बस, ये ही कहलाया॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा॥
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे॥5॥

शक्तितस्त्याग भावना

राग आग में जलकर अब तक, यूँ ही काल गया।
परिणत हुए भोग विषयों को, माना नया-नया॥
निज निधि को खोकर के अब तक, पर पदार्थ पाये,
प्रकट दिखाई देते हैं पर, हमने अपनाये॥
पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना॥

यथाशक्ति जो त्याग करे वह, मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो॥6॥

शक्तितस्तप भावना

काल अनादी से यह प्राणी, तन का दास रहा।
साथ निभायेगा यह मेरा, ये विश्वास रहा॥
प्यास बढ़ाता है पीने से, जैसे जल खारा।
मृगतृष्णा बढ़ती रहती है, मिले न जल धारा॥
पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रिय रोध किये बिन भाई, हो ना सुख साता॥
इच्छाओं का दमन करे फिर, महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना॥7॥

साधु समाधि भावना

काल अनादी से मिथ्यावश, जन्म मरण पाया।
निज शक्ती को भूल जगत् में, प्राणी भरमाया॥
आधि व्याधि अरु पद उपाधि में, नर जीवन खोया।
मोह की मदिरा पीकर भारी, कर्म बीज बोया॥
जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता॥

चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूती, साधु समाधि है॥८॥

वैय्यावृत्ती भावना

स्वारथ का संसार है भाई, सारा का सारा।
लालच की बहती है जग में, बड़ी तीव्र धारा॥
पर उपकार को भूल रहे हैं, इस जग के प्राणी।
पर में निज उपकार छुपा है, कहती जिनवाणी॥
साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा॥
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर करना ही कहलावे॥९॥

अर्हद् भक्ति भावना

चार घातिया कर्मनाशकर, 'विशद' ज्ञान पाये।
समोशरण की सभा में बैठे, अर्हत् कहलाये॥
दिव्य देशना जिनकी पावन, जग में उपकारी।
सुहित हेतु पाते इस जग के, सारे नर-नारी॥
अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता॥

हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ती गुणीजनों ने, इसी तरह गाई॥१०॥

आचार्य भक्ति भावना

दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, वीर्यचरण धारी।
रत्नत्रय का पालन करते, गुरु पंचाचारी॥
भक्तों के हैं भाग्य विधाता, मुक्ती पद दाता।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जन-जन के त्राता॥
सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते॥
गुरु चरणों की भक्ती जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी॥११॥

बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, होते जो ज्ञाता।
सम्यक् दर्शन ज्ञान के गुरुवर, होते हैं दाता॥
संतों में जो श्रेष्ठ कहे हैं, समता के धारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, ऋषिवर अनगारी॥
करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी॥

उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ती है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ती है॥12॥

प्रवचन भक्ति भावना

द्रव्य भाव श्रुत के भावों में, तत्पर जो रहते।
घोर तपस्या करने वाले, परिषह भी सहते॥
चेतन का अनुभव जो करते, निर्मल चित्धारी।
चित् को निर्मल करने वाली, वाणी मनहारी॥
सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा॥
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ती है।
'विशद' ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ती है॥13॥

आवश्यकपरिहाणी भावना

नहीं कभी सत् कर्म किया है, जीवन व्यर्थ गया।
भूले हैं कर्त्तव्य स्वयं के, आती बड़ी दया॥
श्रावक के गुण क्या होते हैं, जाने नहीं कभी।
पाप व्यसन जो होते जग में, करते रहे सभी॥
होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है॥

कर्त्तव्यों के पालन हेतू, भावों से भरना।
आवश्यकता उपरिहार भावना, सम्पूर्ण करना॥14॥

मार्ग प्रभावना भावना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण यह, सम्यक् धर्म कहा।
काल अनादी से यह बन्धू, मोक्ष का मार्ग रहा॥
मोक्ष मार्ग पर आगे चलकर, और चलाना है।
मंजिल को जब तक न पाया, बढ़ते जाना है॥
महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ती में, हरपल मगन रहें॥
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई॥15॥

प्रवचन वत्सलत्व भावना

गाय का ज्यों बछड़े के प्रति, स्नेह अटल होता।
काय वचन अरु मन से शुभ, अनुराग विमल होता॥
स्वार्थ रहित साधर्मी जन से, जो अनुराग रहा।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, ये वात्सल्य कहा॥
द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे॥
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही अरु रही मोह माया॥16॥

दोहा- शब्द अर्थ की भूल को, पढ़ना सुधी सुधार।
पंच परम गुरु के चरण वंदन बारम्बार॥

श्री सम्मेदशिखर जी आरती

तर्ज- आनन्द अपार है.....

भक्ति का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है॥टेक॥
दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं॥-2
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं॥-2
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धु, महिमा का न पार है॥श्री...॥1॥
बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाए हैं॥-2
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं॥-2
शाश्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है॥श्री...॥2॥
जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाएँगे॥-2
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाएँगे॥-2
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है॥श्री...॥3॥
भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशु गति नश जाए॥-2
दुष्कृत अल्प आयु भी, वह प्राणी फिर ना पाए॥-2
जन-जनके जीवन में गिरि का, विशद बड़ा उपकार है॥श्री...॥4॥
तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं॥-2
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं॥-2
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है॥श्री...॥5॥

दशलक्षण भावना

सोरठा-शिवपद के सोपान, दशलक्षण शुभ धर्म हैं।
धारें जो गुणवान, वे पावें शिवपद विशद॥

(उत्तम क्षमा धर्म)

दुर्जन प्राणी कभी सताए, उन्ने कष्ट दिया।
मन से वचन काय के द्वारा, जो प्रतिकार किया॥
इच्छित कार्य हुआ ना कोई, हमने क्रोध किया।
कर्मोदय से फल ना पाया, पर को दोष दिया॥
क्षमा भाव गुण रहा जीव का, उसको विसराए।
आतम का स्वभाव क्षमा है, नहीं जगा पाए॥
क्षमा धर्म को धारण करके, निज गुण को पाना।
मोक्षमार्ग की सीढ़ी चढ़कर, शिवपुर को जाना॥१॥

(उत्तम मार्दव धर्म)

पूजा ज्ञान जाति कुल ऋद्धी, तप बल देह कहे।
आठ अंग में मद ये आठों, बन्धन डाल रहे॥
वाणी के बाणों का सहना, बड़ा कठिन गाया।
मद के कारण नहीं जीव को, समकित गुण भाया॥
दर्श ज्ञान चारित्र सुतप शुभ, अरु उपचार कहे।
मार्दव धर्म के हेतु विनय के, भेद ये पंच रहे॥
मार्दव धर्म हृदय में अपने, हमें जगाना है।
मुक्ती का है हेतु 'विशद' जो, हमको पाना है॥२॥

(उत्तम आर्जव धर्म)

कुटिल भाव युत तीन योग से, मायावी प्राणी।
तिर्यचायू का आश्रव करते, कहती जिनवाणी॥
छल छद्म करते हैं नित प्रति, कर मायाचारी।
ठगते हैं औरों को जिससे, होवें संसारी॥
जो मन में हो कहें वचन से, करें काय द्वारा।
उत्तम आर्जव धर्म कहा यह, जिनवर ने प्यारा॥
सरल हृदय के धारी प्राणी, आर्जव गुण पाएँ।
इस संसार भ्रमण को तजकर, सिद्ध सदन जाएँ॥३॥

(उत्तम शौच धर्म)

तृष्णा भाव जगे जीवन में, पाए जो माया।
लोभ पाप का बाप कहा है, आगम में गाया॥
खावें ना खर्चें धन प्राणी, जोड़-जोड़ धरते।
प्राण दाव पर लगा के धन की, रक्षा वे करते॥
मैल हाथ का धन ये मानें, शौच धर्मधारी।
पुण्य योग से जीवन पाकर, होते अविकारी॥
शौच धर्म को पाने वाले, चेतन को ध्याते।
पाकर के चेतन की निधियाँ, सिद्ध दशा पाते॥४॥

(उत्तम सत्य धर्म)

रहा बोलबाला झूठे का, सत्य का मुँह काला।
इस कलिकाल में ठोकर खाए, सत्य धर्मवाला॥
राग द्वेष में मोहित हैं जो, अज्ञानी प्राणी।
उभय लोक में निन्द्य कही है, दुखकर कटुवाणी॥
हित मित प्रिय वाणी है पावन, जग-जन हितकारी।
वचन कहें आगम अनुसार, सत्य धर्मधारी॥
सत्य महाव्रत सत्य धर्म का, अविनाभावी है।
सत्य धर्म को पाने वाला, शुद्ध स्वभावी है॥5॥

(उत्तम संयम धर्म)

पञ्चेन्द्रिय मन को वश में जो, करते हैं जानो।
भू जल अग्नी वायु वनस्पति, त्रस कायिक मानो॥
इनकी रक्षा करने वाले, संयम के धारी।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित धर, होते अनगारी॥
हिंसा झूठ चोरी कुशील अरु, परिग्रह के त्यागी।
पञ्च समितियाँ पालन करते, शिव के अनुरागी॥
संयम धर्म जगत में पावन, कहा गया भाई!।
जिसके द्वारा पाते प्राणी, जग में प्रभुताई॥6॥

(उत्तम तप धर्म)

अनशन तप ऊनोदर धारें, व्रत संख्यान कारी।
रस परित्याग विविक्त शैय्याशन, कायोत्सर्ग धारी॥
प्रायश्चित्त विनय सुतप जानो ये, वैय्यावृत्तकारी।
स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यान तप, गाये शिवकारी॥
बाह्याभ्यन्तर तप ये द्वादश, आगम में गाए।
कर्म निर्जरा के हेतू यह, अनुपम कहलाए॥
तप से आतम कंचन कुन्दन, निर्मल हो भाई।
तप की महिमा विशद लोक में, जानो अतिशायी॥७॥

(उत्तम त्याग धर्म)

दान त्याग में कुछ समानता, शास्त्रों में गाई।
दान त्याग दोनों में फिर भी, भेद है अधिकायी॥
उत्तम पात्र को उत्तम वस्तू, दान में दी जाए।
आहारौषधि शास्त्र अभय ये, चउ विधि कहलाए॥
विषय कषायारम्भ परिग्रह, की ममता खोवें।
त्याग शुभाशुभ वस्तू के जो, परिहारी होवें॥
धन परिजन गृह वस्त्राभूषण, के होकर त्यागी।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने वाले, होते बड़भागी॥८॥

(उत्तम आकिंचन्य धर्म)

क्षेत्र वास्तु सोना चाँदी धन, धान्य दास दासी।
कुप्य भाण्ड दश बाह्य परिग्रह, त्यागें वनवासी॥
मिथ्या क्रोध मान माया अरु, लोभ हास्यकारी।
शोक अरति रति ग्लानी भय त्रय, वेद के परिहारी॥
बाह्याभ्यन्तर परिग्रह के यह, चौबिस भेद कहे।
आकिंचन व्रत धारी इनसे, विरहित पूर्ण रहे॥
कुछ भी किंचित राग रहा ना, तन मन में भाई।
आकिंचन शुभ धर्म के धारी, गाये शिवदायी॥९॥

(उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म)

कामदेव के वश में भाई, है यह जग सारा।
उसको वश में किया है जिसने, ब्रह्मचर्य धारा॥
कामी कामरोग से पीड़ित, खोजें नित नारी।
घृणित कार्य में रति करते हैं, होते लाचारी॥
कामदेव चक्रीनृप ज्ञानी, ब्रह्मचर्य धारी।
पाते हैं जो सहस रानियाँ, तज हों अनगारी॥
आत्म ब्रह्म में रमण करें जो, निज को ही ध्याते।
यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध दशा पाते॥१०॥

(क्षमावाणी पर्व)

पर्व क्षमावाणी का मिलकर, सभी मनाते हैं।
मन में हुई कलुषता कोई, उसे मिटाते हैं॥
करते क्षमा सभी जीवों को, वे सब क्षमा करें।
हुए दोष जाने अन्जाने, वे सब पूर्ण हरे॥
मैत्री भाव सभी जीवों से, मेरा नित्य रहे।
बैर नहीं हो किसी जीव से, धर्म की धार बहे॥
जाने या अन्जाने हमसे, दोष हुए भारी।
“विशद” भाव से क्षमा करो सब, हो के अविकारी॥११॥

सोरठा

महिमा का ना पार, रहा लोक में धर्म की।
हो जाएँ भव पार, धारण करते जो हृदय॥

॥ इति दशलक्षण भावना॥

चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, चारण ऋद्धि के नौ भेद।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदी, तप्त ऋद्धि के सप्त प्रभेद॥
अष्ट भेद औषधि ऋद्धि के, बल ऋद्धि है तीन प्रकार।
भेद कहे छह रस ऋद्धि के, अक्षीण ऋद्धियाँ दो शुभकार॥

दोहा- पुण्य प्रदायी ऋद्धियाँ, चौंसठ हैं अभिराम।

आह्वानन् को हम यहाँ, करते विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धि धारक सर्व ऋषि समूह! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ
भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

यह नीर है मंगलकारी, जन्मादिक रोग निवारी।

हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः जलं नि.स्वाहा।

चंदन भवताप निवारी, जो अतिशय खुसबूकारी।

हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः चंदनं नि.स्वाहा।

अक्षत अक्षय फलकारी, हैं मोती के उन्हारी।

हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अक्षतं नि.स्वाहा।

ये पुष्प हैं खुशबूकारी, जो काम रोग विनिवारी।

हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः पुष्पं नि.स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ ॥ 15 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः नैवेद्यं नि.स्वाहा।
यह दीपक तिमिर विनाशी, है मोह महातम नाशी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ ॥ 16 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः दीपं नि.स्वाहा।
सुरभित है धूप निराली, जो कर्म नशाने वाली।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ ॥ 17 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः धूपं नि.स्वाहा।
फल ताजे रस मय भाई, हैं मोक्ष महाफलदाई।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ ॥ 18 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः फलं नि.स्वाहा।
यह अर्घ्य विशद मनहारी, है शाश्वत पद कर्तारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ ॥ 19 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।
सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने हम यहाँ।
पा के पद अनगार, मोक्ष महाफल पाएँ हम ॥

॥ शान्त्ये शांतिधारा ॥

सोरठा- पुष्पांजलि मनहार, करते भक्ती भाव से।

वन्दन बारम्बार, देव शास्त्र गुरु के चरण॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाए।

धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय॥

(चौपाई)

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।

मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा॥1॥

पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।

मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी॥2॥

चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।

बुद्धि ऋद्धि धारें मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई॥3॥

विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।

चारण मुनि को पूजें भाई, भव- भव के आताप नशाई॥4॥

चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।

तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें॥5॥

कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।

बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी॥6॥

जय जय औषधि ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारे गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें॥7॥
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें।
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें॥8॥
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव-भव के सब पाप नशाएँ।
मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ॥9॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!॥10॥
पूजा करके जिनगुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
‘विशद’ ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ॥11॥

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।

तिनको पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिधारक मुनीभ्यः जयमाला

पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर ऋषी, संयम तप के ईश।

उनके गुण पाने विशद, चरण झुकाते शीश॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

सरस्वती वन्दना

तर्ज- जहाँ डाल-डाल पे सोने की चिड़िया करती
माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अंधेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥
हे माँ! हे माँ! हे माँ!।।टेक॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, जैन धर्म के धारी-2।
कृपा प्राप्त करते हैं माँ की, जग के सब नर-नारी-2॥
माँ की कृपा बरसती सब पे, ना कोई तेरा मेरा॥ है वन्दन...॥1॥
कृपा पात्र जो होते माँ के, वे ज्ञानी हो जाते-2।
सारे जग की महिमा पाते, वे होशियार कहाते-2॥
माँ की कृपा से कट जाता है, विशद कर्म का घेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥ है वन्दन...॥2॥
निज परिवार समाज देश के, नाम को रोशन करते-2।
शरणागत को सद् शिक्षा दे, उनके संकट हरते-2॥
सरस्वती के वन्दन से हो, मेरा सांझ सबेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥ है वन्दन...॥3॥
हम सब बालक मात आपके, द्वारे पर नित आते-2।
विद्या का दो दान हे माता!, सादर शीश झुकाते-2॥
'विशद'भावना भाते माँ तव, हृदय में रहे बसेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥ है वन्दन...॥4॥
माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अंधेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥
हे माँ! हे माँ! हे माँ!।।टेक॥

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....॥ टेक॥
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥1॥
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥2॥
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धार।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥3॥
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥4॥